ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार
एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। - शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ चरित्र की प्राण प्रतिष्ठा 01 03 1987

जीत रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, वह सर्वज्ञ हैं, मानो जो अनन्तता का हम वर्णन करना प्रारम्भ करते हैं तो मानो एक-एक आभा में उसकी अनन्तता का हमें प्रायः दर्शन होता रहता है आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन कर रहा है, क्योंकि वह महिमावादी हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा हैं उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे मेरा देव दृष्टिपात आता रहता है। आज का हमारा वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, नाना प्रकार की विवेचना दे रहा हैं, और नाना प्रकार की आभा में, मानव को परिणत कर रहा हैं और यह कहा रहा है कि वे परमपिता परमात्मा मानो एक-एक वेदमन्त्र की प्रतिभा में, सदैव वह निहित रहता हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें किसी मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा हैं, क्योंकि यहाँ संसार का जितना भी पदार्थ है, अथवा जितना भी ज्ञान और विज्ञान हैं, वह मानव को प्रेरित करता रहता हैं और प्रेरणा देता हुआ, वह मानो प्रेरणा का एक स्रोत बन करके, उस आभा में परिणत हो जाता हैं जिसको हम सदैव अपने में ही दर्शन करते रहते हैं क्योंकि प्रत्येक मानव उसका दर्शन करता रहता है इसीलिए मानव दार्शनिक और महान बनने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। हमारे यहाँ नित्यप्रति और कुछ वेदमन्त्रों में, यागों के प्रति बड़ा विशेष वर्णन आता रहा हैं, हमारे यहाँ साहित्य में और साहित्यिक जितने भी क्रियाकलाप हैं, उन क्रियाकलापों में भी, मानो यागों का बड़ा विशेष वर्णन आया हैं। आज मैं साहित्यिक विवेचना में न जाता हुआ, आज मैं बेटा! तुम्हें उस आभा में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि, अपने में अनुसन्धान करते रहे हैं और अन्वेषण करते रहते हैं और विचारते रहते हैं कि मानव के कल्याण के लिए कौन-सा मार्ग होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक मानव मानो एक पथिक बना हुआ रहता हैं और वह पथ को चाहता है कि मुझे आनन्द का पथ मुझे प्राप्त हो जाएं और मैं अन्धकार को त्याग करके मानो एक प्रकाश के मार्ग में और अन्धकार को मैं त्यागना चाहता हूँ।

मानव का ऊर्ध्वा पथ

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनि अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके, तो भिन्न-भिन्न प्रकार का, मानो दर्शन की विवेचना में सदैव संलग्न रहते थे। तो बेटा! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके, और मुनिवरों! देखो, अपने में यह

विचारते रहते थे, कि मानव का ऊर्ध्वा में पथ कैसे बन सकता हैं? उन्होंने बेटा! वेद के वांगमय में पंहुचे, और वेदमन्त्रों में से वेद पोथियों में से, वेदमन्त्रों को निकासने लगे, और वेदमन्त्रों में मानो देखो, वह जो देव भाषा हैं, अथवा देव प्रवृत्तियां हैं, उन मानो देखो, मन्त्रों में उन शब्दों में जो उनमें ज्ञान और विज्ञान उनमें निहित रहता है उसके ऊपर वह विचारने लगे, मानो देखो, अपनी-अपनी विचारधाराएं प्रगट करने लगें, मेरे प्यारे! देखो, यह सभा महात्मा भुंजु मुनि महाराज के आश्रम में हुई। तो महात्मा भुंजु से यह प्रश्न किया गया, क्या भगवन! मानव का एक मानवीय मार्ग क्या हैं? जिस मार्ग को अपना करके अन्धकार में आये प्रकाश आ जाएं तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ महात्मा भुंजु ने यह कहा, क्या मानव का जो ऊर्ध्वा में मार्ग है, वह याग हैं मानो देखो, वेदमन्त्रों को उद्गीत रूप में गाते हुए उन्होंने याग को बेटा! देखो, वास्तविक पथ माना हैं और उनका एक उपदेश रहा उन्होंने कहा कि जब मानो देखो, यह जो यज्ञोमयी स्वरूप यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है मानो देखो, इसमें हवि प्रदान न की जाएं तो यह याग याग नही रहेगा तो इसीलिए प्रत्येक मानव को याग में परिणत रहना चाहिए और वह एक मानव का मार्ग है वह पथिक हैं मानव उसी पथ पर वह महान बन जाता हैं।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा भुंजु से यह कहा अक्लेत्वर ऋषि महाराज ने, क्या महाराज यह याग क्या हैं जिसके ऊपर आप हमें यह बल दे रहे हैं कि वह मार्ग हैं। उन्होंने कहा महात्मा भुंजु ने अक्लेत्वर ऋषि से कहा, क्या महाराज मार्ग कौन-सा और कौन से मार्ग को तुम जानना चाहते हो? अक्लेत्वर ऋषि ने कहा कि महाराज! आपने कहा कि याग एक मार्ग है। मानो देखो, याग कैसे मार्ग है उसको जानना चाहते हैं? महात्मा भुंजु ने कहा कि याग यह जो संसार का जितना भी मानो क्रियाकलाप दृष्टिपात आ रहा हैं ये सर्वत्र एक याग माना गया हैं और इस याग में एक महानता विद्यमान रहती हैं जो एक गम्भीर एक मानो देखो, दर्शन है, जिस दर्शन को करने के पश्चात, मानव के जीवन में एक महानता का दर्शन होता हैं मेरे प्यारे! देखो, अक्लेत्वर ऋषि ने ये वाक् स्वीकार कर लिया, परन्तु यह प्रश्न किया कि महाराज! यह जो याग है यह है क्या? अब महात्मा भुंजु ने कहा क्या भगवन! याग क्या नही हैं? मुनिवरों! अक्लेत्वर ऋषि महाराज मौन हो गये और उन्होंने कहा कि यागां ब्रह्मणे वाचप्रह्वा अब बेटा! देखो, ऋषि ने उसकी विवेचना करना प्रारम्भ किया, महात्मा भुंजु ने कहा क्या यह मानो जितना भी मानव का क्रियाकलाप है, चाहे वह परोक्ष रूप में हैं चाहे प्रत्यक्ष में हैं, मानो वह सर्वत्र याग की हमें प्रेरणा दे रहा हैं अथवा याग में हमें परिणत कर रहा हैं मेरे पुत्रों! उन्होंने कहा यागां ब्रह्म लोकां क्या यह याग ही तो हमें ब्रह्म लोक में ले जाने वाला हैं मानो इससे मानव की प्रवृत्तियों में एक शुद्धिकरण होता हैं और उस शुद्धिकरण के गर्भ में एक महानता की प्रतिभा का दर्शन होता है

जिस प्रतिभा का दर्शन करने के पश्चात मानव के जीवन में एक महान एक ऐसा क्रियाकलाप होने लगता है जिस क्रियाकलाप में उसका आन्तरिक और बाह्य जगत दोनों मानो देखो, देव पुरी को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! यह बड़ा विचित्र एक वाक् हैं, जिसके ऊपर हमारे ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! एक मानो नृत्त करते रहे हैं, और यह जो विचारों का नृत्त है एक महान कहलाता हैं जिसके ऊपर बेटा! हमारे ऋषि-मुनि, प्रायः अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं और वह विचार क्या है, कि जिस विचार को ले करके, हमारे जीवन का एक अभ्योदय हो जाता हैं यागां ब्रह्मा वेत्तो प्रह्वा वर्णनं ब्रह्मा कृतं लोकाः, मेरे प्यारे! देखो, वह वरणीय है, वरण करने योग्य हैं, वह जो परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप हैं, इसी प्रकार हम उस परमपिता परमात्मा को अपने में मानो देखो, उसको दर्शन के रूप में दर्शाते हैं, और उसकी आभा का हम प्रायः दर्शन करते रहे मेरे प्यारे! देखो, यहाँ वेद की पोथी को ले करके मन्त्रों की प्रतिभा को ले करके बेटा! उसका दर्शन करने लगे। परन्तु महात्मा भुंजु का एक ही मन्तव्य रहा है, क्या संसार में जितना शब्द हैं जिनती सात्विकता हैं उस सर्वत्र में मानो देखो, एक याग रूप उसमें ओत-प्रोत रहता है तो मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या है, वेद का ऋषि ये कहता है क्या मानो देखो, चाहे वह व्यापक रूप अपने को बनाना, हो चाहे वह राष्ट्रवेत्ता हो, मानो चाहे वह जनता में, जनार्दन में, दर्शन करने वाला हो मेरे प्यारे! देखो, वह सर्वत्र एक याग माना गया हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें बहुत-सी वार्त्ताएं मानो निर्णय कराई हैं और उन वाताओं में मानो देखो, अश्वमेध यागों का वर्णन, अजामेध यागों का वर्णन आता रहा है परन्तु मैं जिन यागों की हम चर्चा कर रहे हैं, उन यागों में एक व्यापकवाद निहित रहता हैं राजा जब अश्वमेध याग में यागिक बनता हैं तो मानो वह अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं, मेरे प्यारे! देखो, अपनी राष्ट्रीयता को, महानता की वेदी पर ले जाता है और ऋषि-मुनियों से यह प्रश्न करते रहते हैं क्या भगवन! मानव समाज, मानव जन जीवन कैसे अन्धकार से प्रकाश में जाएं, मेरे प्यारे! देखो, जब तक हम वेद के मर्म अथवा वेद के विचारों को ले करके और सर्वांग अपने को नही बना लेते तब तक मानव देखो, मृत्युंजय नही बनता वह पथिक नही बन सकता मानव को ऊर्ध्वा पथिक बनना है और उस पथ को अपनाना है, जिस पथ को ले करके, हमारे ऋषि-मुनि महानता का प्रायः दर्शन करते रहे हैं आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा था, क्या संसार में मानव को प्राणों को जानना चाहिए प्रत्येक मानव प्रकाश में, जाने के लिए अन्धकार को त्यागना चाहता हैं और प्रकाश में जाना चाहता है, मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक आभा में सबसे ऊर्ध्वा में यह कि मानव को अपने प्राणतव को जानना चाहिए, मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक मानव प्राण में जाना चाहता हैं मैंने प्राण बहुत पूर्व में, यह

चर्चाएं की हैं, क्या मानव को प्राणों में परिणत रहना चाहिए और प्राण प्रतिष्ठा अपने में करनी चाहिए जिससे वह मानो देखो, ऊर्ध्वा का पथिक बन सके, वह पथ को पथ में ही दृष्टिपात करना चाहता हैं।

प्राण की प्रतिष्ठा का स्वरूप

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना नही, केवल तुम्हें कुछ प्राणों की चर्चा करने के लिए आया हूँ मानो देखो, मानव को अपने में प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए, हमारे यहाँ पुरातन काल में, ऋषि-मुनियों के ऊर्ध्वा काल में मानो चिकित्सा भी प्राण के द्वारा होती रही हैं और मेरे पुत्रों! प्राणों को जान करके, मानव अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन जाता हैं और ब्रह्मवर्चोसि बन करके प्रकाश के मार्ग पर चला जाता है तो मुनिवरों! देखो, मैं प्राण की चर्चा करने के लिए आया हूँ क्या यह प्राण क्या है प्रत्येक मानव बेटा! देखो, अपने में, प्राण प्रतिष्ठा को चाहता है मेरी प्यारी माता भी यही चाहती है कि हमारी प्राण प्रतिष्ठा हो जानी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, प्राण प्रतिष्ठा क्या है इसके ऊपर हमारा, बड़ा आध्यात्मिकवेत्ताओं ने नाना प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा हैं। महाराजा रघु के यहाँ भी एक समय मानो प्राण प्रतिष्ठा का प्रसंग आया, जब महाराज रघु ने याग किया था तो वहाँ भी नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज विराजमान हुआ और उस समाज में मानो देखो, प्राण प्रतिष्ठा का प्रसंग आया मेरे प्यारे! देखो, माता भी चाहती है, राजा भी चाहता है, आचार्य भी प्राण प्रतिष्ठा को चाहता हैं मेरे पुत्रों! देखो, राजा के यहाँ, जब प्राण का प्रसंग आता है कि राष्ट्र में प्राण क्या हैं तो मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में जो प्राण हैं वह एकोकी मानवीयता है मानो देखो, राजा के राष्ट्र में मानवीयता ही एक प्राण कहलात है राजा के यहाँ चरित्र ही एक प्राण कहलाता हैं मानो देखो, समाज में जब देखो, चरित्र और मानवीयता ऊँची बन जाती हैं तो मुनिवरों! देखो, वह राजा का राष्ट्र एक मानो देखो, प्राण प्रतिष्ठा वाला बन जाता है प्राण क्या है मेरे पुत्रों! देखो, वेद का ऋषि कहता है चरित्र ही प्राण है वेद का आचार्य कहता है मानो देखो, सता ही प्राण है।

विद्यालयों में प्राण प्रतिष्ठा

प्राण का अभिप्रायः क्या है जो गति करनेवाला है प्राण का अभिप्रायः ये जैसे चरित्र है, ये गति करता है मेरे प्यारे! देखो, हम यदि ऊर्ध्वा में महान रहेंगें, तो हमारे चरित्र की गति द्वितीय प्राणी पर जाती हैं तो मुनिवरों! देखो, वह इस मानो देखो, प्राण प्रतिष्ठा कहलाती हैं तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वह एक दूसरे में ओत-प्रोत रहने वाली यह प्राण प्रतिष्ठा कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण प्रतिष्ठा का अभिप्रायः क्या हैं? क्या मानव को बेटा! देखो, माता-पिता यह चाहते हैं कि हमारे गृह में प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए, मेरे प्यारे! देखो, यह प्रसंग देखो, राजा

अश्वपति ने, महात्मा भुंजु से भी किया था और महात्मा क्रोतकेतु मुनि से भी यह प्रश्न किया था, कि महाराज! यह प्राण प्रतिष्ठा क्या हैं तो मुनिवरों! देखो, उस समय महा ब्रह्मे महात्मा भुंजु ने तो यह उत्तर दिया कि हे राजन! तुम प्राण प्रतिष्ठा को जानना चाहते हो, तो मानो देखो, राजा प्राण है और प्रजा मन है, जब प्राण का सन्निधान मात्र होता है मन प्रकृति का तन्तु वह अपनी क्रिया में रत्त हो जाता है, मानो वह क्रियाशील बन जाता हैं वह क्रियाओं में रत्त हो जाता हैं, वह मनस्तव कहलाता है मानो देखो, वह जो प्राण है, वह उसमें प्रतिष्ठित हो रहा है, वह प्राण प्रतिष्ठा हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब राजा अपने में चरित्र और विद्यालयों को ऊँचा बनाता है, विद्यालयों को ऊँचा बनाने का अभिप्रायः यह है कि राजा का कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र में प्राण प्रतिष्ठा चाहता है तो विद्यालय उसके यहाँ पवित्र होने चाहिएं विद्यालयों में देखो, एक महान प्रतिष्ठा होनी चाहिए जैसा मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन कराया है क्या महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में जब मुनिवरों! देखो, विद्यालयों में ब्रह्मचारी आचार्य दोनों परस्पर मानो देखो, शिक्षा का व्यवधान प्रारम्भ होता क्योंकि शिक्षा ही तो प्राण प्रतिष्ठा कहलाती है राजा का राष्ट्र जितना भी हैं वह मानो देखो, प्राणों वह उसके देखो, मात्र बल के ऊपर निर्धारित रहता हैं मुनिवरों! देखो, छात्र छात्रिकाएं जब पवित्रतव में परिणत हो जाते हैं।

तो मानो देखो, विद्यालायों में ही तो प्राण प्रतिष्ठा होती हैं आचार्य जब ब्रह्मचारियों को एक पंक्ति में विद्यमान करते हैं वह प्रातःकालीन मानो देखो, याग करते हैं, प्रातःकलीन मानो देखो, जब वह देव पूजा करते हैं, ब्रह्मयाग करते हैं तो मानो देखो, ब्रह्मचारी प्रसन्न होते हैं तो वह विद्यालय में चरित्रता का संचार होता हैं मानो एक महानता का दर्शन होता है तो मुनिवरों! देखो, वह राजा के राष्ट्र में जो विद्यालय है वह कितना महान है मानो देखो, राजा के राष्ट्र में विद्यालय में प्राण प्रतिष्ठा हो रही है और वह जो प्राण प्रतिष्ठा हैं, प्राण का अभिप्रायः यह है गति प्राण ही गति, को कहा जाता हैं मेरे प्यारे! देखो, जो गति हो रही हैं इसीलिए विद्यालयों में जो ज्ञान की गतियां हो रही हैं, अथवा ज्ञान और विज्ञान अपनी गतियों में गतिवान हो रहा है मेरे पुत्रों! वही तो एक महानता का दर्शन हो रहा हैं आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल तुम्हें यह कि हमारे यहाँ प्रतिष्ठा होनी चाहिए देखो, धर्म और मानवता मानो देखो, दोनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं मैंने बहुत पुरातन काल में मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे वर्णन कराया और मैंने कई कालों में हमने बेटा! महाराजा अश्वपति के याग में अश्वपति के याग में जाने के लिए हम सदैव तत्पर रहें। अश्वपति के यहाँ मानो प्राण प्रतिष्ठा होती, राजा प्रातःकालीन मानो देखो, विद्यालय में जाता है और विद्यालय में यह दृष्टिपात करता हैं कि यहाँ मानो यह जो प्राण प्रतिष्ठा हो रही हैं प्राणं ब्रह्मा लोकां हिरण्यं रथं ब्रह्मा वाचाः मेरे प्यारे! देखो,

वह जो प्राण प्रतिष्ठा मेरे राष्ट्र में जो शिक्षा प्रणाली हैं वह ऊर्ध्वा में अथवा नही तो मानो देखो, वह आचार्य देखो, उस ब्रह्मचारियों की समवर्ताम ब्रह्मा वह नाना प्रकार के यागों की प्रायः चर्चाएं करते रहते तो बेटा! वेद का ऋषि कहता हैं, आचार्य कहता है क्या राजा के राष्ट्र में जब प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है और वह शिक्षा प्रणाली पवित्र बन जाती है शिक्षा प्रणाली में जब मानो देखो, महानता का दर्शन होने लगता हैं, मानवीय दर्शन होने लगता है, तो मेरे प्यारे! देखो, एक दूसरा जैसे माला हैं, माला में नाना प्रकार के मनके है। और मनके एक दूसरे से कटिबद्ध रहते हैं, एक दूसरे से समन्वय रहते हैं वह सूत्र में पिरोये हुए है, परन्तु इसी प्रकार जब मुनिवरों! देखो, एक ब्रह्मचारी एक दूसरे में पिरोया हुआ, एक दूसरे में मानो महानता का और महानता का दर्शन कराता रहता हैं, और आचार्य जैसे माला में एक सुमेरू होता है इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, सुमेरू की भांति जब आचार्य रहता है तो मेरे प्यारे! देखो, विद्यालय में शिक्षा प्रणाली एक प्राण प्रतिष्ठा के तुल्य कहलाती हैं। जैसे मुनिवरों! देखो, हम विचारते रहते हैं जैसे मुनिवरों! देखो, पृथ्वी है पृथ्वी में आपोमयी जल हैं जल में आपोमयी मानो देखो, विद्युत है, मानो देखो, इसमें अग्नि कहते हैं अग्नि के रूप में मानो देखो, अग्नि की धाराओं में, अग्नि पिरोयी हुई मानो वायु में हैं, और वायु पिरोयी हुई अन्तरिक्ष में रहती है मानो देखो, एक मनके है और वह एक सूत्र में पिरोये हुए हैं और वह जो सूत्र है वह मानो सूत्रों में जो देखो, ब्रह्मे वाचो देखो, सुमेरू बन करके, वह ब्रह्म रहता है मानो ब्रह्म सुमेरू बन करके बेटा! देखो, माला को एक महानता में रमण करा देता है वही बेटा! देखो, प्राण प्रतिष्ठा कहलाती हैं।

आओ, मेरे प्यारे! यदि इसमें से मानो देखो, परमपिता परमात्मा की चेतनता को निकास लिया जाएं तो मेरे प्यारे! देखो, वायु, वायु नही रहती, अग्नि, अग्नि नही रहती, आपोमयी, जल, जल नही रहता मानो देखो, अपने रूप से अस्तित्व उसका समाप्त हो जाता हैं तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा सुमेरू है, इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में विद्यालयों में आचार्य सुमेरू कहलाता है मेरे पुत्रों! राजा के राष्ट्र जब प्रजा और राजा मिल करके अश्वमेध याग करते हैं तो वहाँ राजा सुमेरू कहलाता हैं मेरे प्यारे! देखो, सुमेरू बन करके वही तो मुनिवरों! देखो, जैसे परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में कहा जाता है क्या सृष्टि के प्रारम्भ में दैत्य और देवताओं का जब संग्राम हुआ तो मानो देखो, वही तो सुमेरू बेटा! देखो, जैसे मथनी बेटा! देखो, दुग्ध को मथनी करने वाली मथनी होती हैं, उसी प्रकार वही तो सुमेरू बेटा! देखो, मथनी बन करके मानो देखो, चरित्र के गर्भ में मानवता की मानवीयता में और परमपिता परमात्मा के ऊर्ध्वा दर्शन करने में, मेरे पुत्रों! देखो, वही तो सुमेरू कहलाता हैं।

चरित्र का स्वरूप

आओ, मेरे पुत्रों! देखो, मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नही आया हूँ मैं अपने विचारों की भूमिका बनाता रहता हूँ, अपने विचारों की एक मानो देखो, भूमिका का दर्शन करता रहता हूँ तो विचार क्या, मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह है आचार्यों ने अपना यह मन्तव्य दिया हैं क्या जो मानव, मैं अन्धकार से प्रकाश में चला जाऊं, मानो वह प्रकाश में जब जा सकता हैं जबकि उसका जीवन चरित्र एक महानता की वेदी पर होगा, प्रसंग यह आता है, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में यह प्रसंग आते रहते थे क्या ये चरित्र क्या हैं जिस चरित्र की पुकार मानो हमारे मानवीयता में दर्शाती रहती है यह क्या है? मेरे पुत्रों! देखो, सभी, जितना भी मानव का वाणी से ले करके, नेत्रों से ले करके, घ्राण से ले करके, जितना भी मानव क्रियाकलाप हो रहा है वह विशुद्ध रूप से हो जाएं, तो उसी मा नाम चरित्र कहलाता है जैसे एक मानव वाणी उद्गीत रूप में गाता रहता है, वेद गान गाने वाला, वेद गान गा रहा है परन्तु वेद गान गा करके जब उसके ऊपर अपने जीवन को न्यौछावर करता है, तो मानो उसी का नाम चरित्र कहलाता हैं।

जीवन की पवित्रता

मेरे प्यारे! देखो, एक यज्ञमान यागिक बना हुआ है और वह याग के स्वरूप को जान करके मानो देखो, देवपूजा करता है और जो देवता उसके मानवीय शरीर में और मानो बाह्य जगत में जो भी क्रियाकलाप कर रहे हैं उनके आधार पर अपनी जीवन को बनाता है तो उसका वह चरित्र कहलाता हैं मेरे प्यारे! देखो, सुगन्धि आ रही है मानो देखो, वह तरंगों के रूप में विद्यमान है, उस सुगन्धि का वह पृथ्वी से ले करके मेरे प्यारे! अपने मानवीय जीवन तक उस सुगन्धि का वह अनुभव करता रहता हैं और अनुभव करता-करता ऊर्ध्वा में गति हो जाती हैं तो मेरे पुत्रों! देखो, वह उस सुगन्धि के अन्तिम छोर पर जाता हुआ, अपने में सुगन्धि को ग्रहण करे और दुर्गन्ध को त्याग दे बेटा! उसका चरित्र कहलाता हैं। जैसे सुगन्ध का अभिप्रायः बेटा! देखो, वेदज्ञ ध्वनि के माध्यम से जो स्वाहाः मानो देखो, साकल्य को ले करके द्यौ लोक में जाता है और द्यौ लोक से उस मानो सुगन्ध का समन्वय हो जाता है घ्राण इन्द्रियों का समन्वय हो जाता हैं मेरे प्यारे! देखो, वह जो अपने स्वरूप में मानो देखो, सुगन्ध देता है उस सुगन्ध को अपनाना है वही सुगन्ध बाह्य जगत में हैं बेटा! मानो देखो, बाह्य जगत मे जो दुर्गन्ध आ रही हैं चाहे वह विचारों से आ रही है चाहे वह मानो देखो, दुर्गन्ध पदार्थ से आ रही है चाहे वह राष्ट्रीयवाद से आ रही है, मेरे प्यारे! देखो, दुर्गन्ध को त्यागना है और सुगन्ध को लाना है जिससे हमारा मानवीय जीवन पवित्र हो जाएं, तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या, विचार यह मुनिवरों! देखो, जैसे शब्द है शब्द की ध्वनियां आ रही है वह ध्वनि पर ध्वनित हो रहा है प्राणी, मानो देखो, वह ध्वनि कहाँ से आ रही हैं मानो वह ध्वनि मानो अन्तरिक्ष से आ रही हैं अन्तरिक्ष

ध्वनियों का केन्द्र है शब्द आ रहा हैं दिशाओं से उसका समन्वय रहता है उसी शब्द मेरे प्यारे! देखो, अन्तरिक्ष में लय हो जाता हैं वही शब्द मुनिवरों! देखो, श्रोत्रों में प्रवेश हो करके वही शब्द मानो देखो, वाणी के द्वारा उद्गीत गाता रहता है और जब वाणी के द्वारा वह उद्गीत गाता रहता है वह वाणी ही तो मुनिवरों! देखो, इस रूप में जब हम स्वीकार करते हैं कि हमारा शब्द और देखो, कृतं ब्रह्मा वाणं ब्रह्मे वाणी का, दोनों का जब समन्वय जब होता हैं तो उसका शुद्ध रूप होना चाहिए, दुर्गन्ध रूप नही होना चाहिए मानो देखो, वह आभा अन्तरिक्ष में आनी प्रारम्भ हो जाती है, हमारे शब्द द्यौ लो में प्रवेश हो जाते हैं, वही शब्द अशुद्ध हो करके वायुमण्डल में छा जाते हैं, उससे वायु मण्डल अपवित्र हो जाता हैं तो परिणाम उसका यह होता है क्या वही शब्द मुनिवरों! द्यौ लोक में हैं जो चरित्र के साथ है आभा और ज्ञान के साथ हैं वही द्यौ लोक में है और वही शब्द जब अचरित्रता पर है वही शब्द अन्तरिक्ष में वायुमण्डल को अशुद्ध बना रहा हैं।

महानता की ज्योति

तो परिणाम क्या है तो मुनिवरों! उसमें चरित्र कहाँ निहित रहता हैं उसके गर्भ में चरित्र ही चरित्र विद्यमान रहता हैं तो उसका नाम चरित्र कहलाता है जो सुगन्धि युक्त हैं मेरे प्यारे! देखो, जो दर्शनों से गुथा हुआ शब्द है गुथे हुए विचार हैं, गुथी हुई तरंगें है, वही तो मुनिवरों! देखो, मानव को ऊर्ध्वा में ले जाती हैं, वही तो मुनिवरों! देखो, चरित्र की आभा को ले जाती हैं। विचार-विनिमय क्या हैं मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष चर्चा देने नही आया हूँ विचार केवल यह है कि मानव की वाणी हैं रसों का स्वादन हो रहा है यदि वही रस जो लाभप्रद होता है और मानव को दर्शन और बुद्धि को स्थिर करने वाला मानो आहार है वही रस मुनिवरों! देखो, महान पवित्र कहलाता हैं वही रस मुनिवरों! देखो, उन रसों का पान करना, वह मुनिवरों! देखो, रसना का चरित्र है, रसना की महानता है यदि देखो, विजातीय पदार्थों को ग्रहण करता है, विजातीय जो पदार्थ हैं, विजातीय पदार्थों को जो मानो देखो, दुर्गन्ध से युक्त होते हैं उन पदार्थों को जो पान करता है वही मेरे प्यारे! मानव के जीवन में, आन्तरिक जगत में अशुद्ध संस्कारों को जन्म देते हैं और अशुद्ध संस्कारों को जन्म दे करके जन्म-जन्मान्तरों में बेटा! अपनी आभा निकृष्टता को भोगता रहता हैं यदि वही शुद्ध पदार्थों का रसों का पान करता हैं सुचरित्रता उकसे साथ होती है वही शब्द मुनिवरों! रसावादन पान करता हुआ, वही द्यौ लोक में प्रवेश हो करके, वह महानता की ज्योति में प्रदान कराता रहता हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह क्या मानव के प्रत्येक रूप में बेटा! देखो, चरित्र होना चाहिए, चरित्र की मीमांसा केवल इतनी करना चाहता हूँ क्या मानव के जीवन में प्रत्येक इन्द्रियों का जो मूल रहस्य है जो मूलतव उस मूलतव के गर्भ में

प्रवेश हो करके मेरे पुत्रों! अपनी आभा में निहित रहना चाहिए, आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या मैं बेटा! दृष्टिपात करने में लगा हुआ रहता हूँ, हमारे यहाँ एक-एक वाक् को ले करके बहुत-सी विवेचना की जाती हैं आज का विचार मैं केवल इतना उद्गीत रूप में गाना चाहता हूँ, उच्चारण करना चाहते हैं क्या हम बेटा! देखो, अपने में महानता का दर्शन करना चाहते हैं, तो ऋषि-मुनियों ने मेरे प्यारे! देखो, वेद के वांगमय में प्रवेश हो करके वेद की पोथियों को ले करके उसमें से सूत्रों को ले करके उन्होंने एक माला में पिरोये हैं राजा को कहा है तेरा यह कर्तव्य हैं प्रजा को कहा तेरा यह कर्तव्य हैं महापुरूषों को कहा तुम प्रेरक हो मानो देखो, वह उन्होंने कहा है, क्या ऋषि-मुनियों का एक ही मन्तव्य रहा हैं क्या जब तक, इन्द्रियों के मानो देखो, विजातीय पदार्थों को, विजातीयता को दूरी नही करोगे और सजातीयता को लाने का प्रयास नही करोगे, तो जब तक तुम्हें मानो देखो, प्रकाश प्राप्त नही होगा और अन्धकार ही अन्धकार में जब तक रहोगे, जब तक विजातीयता को नही त्यागोंगे, मानो देखो, विजातीय और सजातीय दो ही प्रकार की तो धारा हैं जिसकी चर्चाएं बेटा! हम कल करेंगें, आज मुझे इतना आज्ञा नही दे रहा हैं आज मैं बेटा! मैं अपने विचारों की भूमिका बना रहा हूँ विचार क्या है बेटा! देखो, विजातीय और सजातीय पदार्थों की विवेचना तो कल प्रगट करेंगें, आज का वाक् हमारा क्या कह रहा हैं क्या मुनिवरों! देखो, यह प्राण प्रतिष्ठा और मुनिवरों! देखो, प्राणो की प्रतिष्ठा की चर्चाएं, हम कई कालों में वर्णन भी की है और आज भी कर रहे हैं और इसकी विवेचना हम पुनः भी करेंगें, आज का विचार केवल यह कि हमारे जीवन में प्राणों की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, चरित्रता में महानता होनी चाहिए जिससे बेटा! देखो, मानव समाज राष्ट्रवाद समाजवाद देखो, उल्टे मार्ग पर न चला जाएं और एक मानो देखो, हम धर्म और मानवीय दर्शन को अपनाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा तब तुम्हें मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का विचार यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम संसार सागर से पार हो जायें यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं बल प्रगट करूंगा।

२ परमात्मा का अनुष्ठान 02 03 1987

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं, जो परमपिता परमात्मा राष्ट्रमयी कहलाता हैं मानो राष्ट्र उसका आयतन माना गया हैं, जिस प्रकार वो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है इसी प्रकार वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रमयी कहलाता है क्योंकि जितना भी ये जगत हमें दृष्टिपात आ रहा हैं, चाहे वह चेतना में रत्त रहने वाला हो, चाहे वह जड़वत में हो, परन्तु उस सर्वत्रता में मानो उस परमपिता परमात्मा का प्रायः अनुशासन हमें दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि परमपिता परमात्मा का जो नियम हैं, अथवा वह सृष्टि के प्रारम्भ में, मेरे प्यारे प्रभु ने यह नियमावली का निर्माण किया मानो वह प्रायः इसी प्रकार अनुशासित कहलाता है मानो जितना भौतिक जगत हैं अथवा भौतिक राष्ट्र हैं, उस भौतिक राष्ट्र में न्यूनता होती रहती हैं और उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की आभाओं का वर्णन होता रहता है और उसमें परिवर्तन भी कहा गया हैं परिवर्तित भी होता रहता है परन्तु परमपिता परमात्मा का जो इतना ऊर्ध्वा में राष्ट्र हैं क्या मानव समाज, भौतिक जगत में उसकी कल्पना करता रहता हैं परन्तु वह कल्पना, कल्पना ही बन करके रहती है परन्तु परमपिता परमात्मा का जो राष्ट्र है, अथवा उसका जो अनुशासित ये संसार है उसका जितना भी नियम हैं अथवा उसका जितना भी साधन है चाहे पालन करने का हो, चाहे वह मानो रजोगुण में शासन का हो, चाहे वह उत्पति काल हो। मेरे प्यारे! वह नियमावली जैसे सृष्टि के प्रारम्भ में, प्रभु ने निर्धारित की, उसी प्रकार वह क्रियाकलाप प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता हैं परन्तु उसी की कल्पना करने वाला, जो भौतिक राष्ट्र हैं वह कल्पना कर रहा है परन्तु उसमें मानो देखो, किसी भी रूप में उसमें परिवर्तन आ सकता हैं परन्तु परमात्मा का जो राष्ट्र हैं, परमात्मा का जो नियम बनाया हुआ हैं, उमसें किसी प्रकार की न्यूनता नही आती। मानो उसमें उसी प्रकार जैसे सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है उसका जो नियम है मानो उसी प्रकार कटिबद्ध हैं, चन्द्रमा अपने समय पर मानो देखो, प्रतिपदा द्विपदा और देखो, वह अपनी सम्पन्न कलाओं से पूर्णिमा के दिवस मुनिवरों! देखो, पूर्ण हो जाता है, उसके पश्चात देखो, उसकी कलाएं उसी प्रकार परिवर्तित होती रहती हैं परन्तु वह ऐसा एक अनूठा, अनुपम एक आभा में कहलाता हैं जिसके ऊपर बेटा! मानव कल्पना भी नही कर पाता, मेरे पुत्रों! देखो, वह अमावस्य का दिवस आता है तो अपनी कलाओं से रहित हो जाता है, पूर्णिमा का दिवस आता है, कलाओं से सम्पन्न हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! उस प्रभु का कैसा अनूठा यह ब्रह्माण्ड कहलाता हैं, मानो तारा मण्डलों की जो माला हैं वह माला मानो देखो,

सृष्टि के प्रारम्भ में, मेरे पिता ने यागिक यज्ञोमयी स्वरूप बन करके इस संसार का जब निर्माण किया और यज्ञशाला के रूप में मानो यह जो यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपनी स्वाहा की माला बना देता है, तो प्रत्येक आहुति के साथ में अपनी भावना, अपनी सुचरित्रता की एक माला बना देता है और वह माला बन करके उसी को प्राप्त होती हैं इसी प्रकार, मेरे प्यारे प्रभु ने इस संसार रूपी अनूठी माला का निर्माण किया। परन्तु वह निर्माण किया हैं और वह अनुशासित हो करके मानो गतिशील हो रही है, निर्माण करने वाला और गतिशील होना और नियमबद्ध होना बेटा! देखो, यह उस प्रभु की अनुभूति कहलाती हैं। आज जिस भी काल में ब्रह्मवेत्ता, अपने में यह निश्चय करता है कि ब्रह्म है, तो बेटा! देखो, जब जिज्ञासु अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके जो साधक है और वह साधक की कल्पना करता है कि मैं अपने आत्म कल्याण को चाहता हूँ जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यज्ञ के पूर्व अपना यज्ञ का एक संकल्प बनाता हैं तो संकल्प जब बनाता है उसका जो आधार होता हैं मानो उसको निश्चय करता है कि वह वस्तु हैं, इसी प्रकार ब्रह्मवेत्ता मानो देखो, जिज्ञासु जब ब्रह्म की आभा में रत्त होने लगते हैं तो निर्णय करते हैं कि ब्रह्म है, तो जब ब्रह्म है तो बेटा! देखो, उसकी माला उसके विज्ञान के ऊपर अथवा उसकी रचना के ऊपर वह विचार-विनिमय करता रहता है और वह विचार-विनिमय यह करता है कि ब्रह्म है तो वह मानो किस रूप में विद्यमान हैं मेरे प्यारे! देखो, जब मैं जिज्ञासुओं की चर्चाएं अथवा ऋषि-मुनियों के उस जीवन पर जाता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि मानो अपने कल्याण के लिए नाना प्रकार के अनुष्ठान करते रहे हैं अथवा नाना प्रकार की, वह अपने में कल्पना करते रहे हैं, तो उसी प्रकार जब हम ये विचारने लगते हैं तो ऋषि-मुनियों का वह अनूठा विज्ञान, अथवा उनकी अनूठा चर्चाएं प्रायः बेटा! हमें स्मरण आने लगती हैं, और हम यह कहा करते हैं, हमारा तो सदैव एक मन्तव्य रहा हैं एक विचार रहा है कि क्या हम अपने में मानो देखो, अपनेपन को और अपनी आभा में, उस ब्रह्म को अपने में दृष्टिपात करें।

आज संसार में जो भी मानव मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं जिस काल में बेटा! देखो, ब्रह्मवेत्ता अपने में एकत्रित हो करके, यह निर्णय करते रहते थे कि ब्रह्म है तो मानो देखो, ऐसा जो मानव जानता है कि ब्रह्म है तो उसके लक्षण क्या हैं? तो मेरे प्यारे! देखो, उसके लक्षणों का वर्णन करने वाला मानो देखो, जिज्ञासु क्या, ब्रह्मवेत्ता उसका लक्षण करता हैं जो ब्रह्म को जानता है वो लक्षण का वर्णन करता है वह कहता है कि वह ब्रह्म का, यह जो ब्रह्म को यह स्वीकार करता है कि ब्रह्म है तो मानो देखो, है का अभिप्रायः क्या ब्रह्म है, ऐसा कह करके मुनिवरों! देखो, उसका निर्णय करना है प्रारम्भ करता है और वह कहता है कि ब्रह्म,

उसका जो जानने वाला, उसका लक्षण यह है क्या ब्रह्म वृतं मानो देखो, जो अपना मानवीय शरीर हैं उसके ऊपर उसकी आस्था नही रहती, मानो देखो, उसमें जो क्रियाकलाप हो रहा हैं, उसमें जो मानो तरंगों का उद्घोष हो रहा है उद्बुध हो रही हैं मानो उन तरंगों के ऊपर वह विचार करता रहता है और अपने से बाह्य जगत में मानो देखो, वह किसी का दर्शन नही करता अपने मानवीय जगत में ही वह ब्रह्म का प्रायः दर्शन करता है और जब वह ब्रह्म का, इस प्रकार दर्शन करता है तो मुनिवरों! देखो, दर्शन की आभा में रत्त हो करके मानो यह विचारता है, कि-प्रभु तो मेरा इतना महान हैं क्या मेरे शरीरों में, जो तरंगें मानो तरंगित हो रही है मानो देखो, जो ब्रह्म जो चैतन्य देव हैं, वही मेरे में वास कर रहा है और मानो मैं क्या हूँ मेरा पन, हमारा पन होना चाहिए, मैं का प्रतिपादन करना यह प्रकृति का आवेश आ जाता है परन्तु जब वह यह कहता है कि हम जब यह मानो देखो, सर्वत्र जगत समाहित हो जाता है हममें मानो देखो, हमारा कुटुम्ब, हमारा समाज, हमारा राष्ट्र, हमारा संसार मानो देखो, हममे सब उस परमपिता परमात्मा के अंग-संग मानो मैं का लोप प्रारम्भ हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, यह लक्षण ब्रह्मवेत्ता, जो ब्रह्म को ही स्वीकार करत है आज जो देखो, नाना प्रकार के धर्मों की चर्चाएं मानो देखो, धर्म आता हैं, तो धर्म की मानो देखो, एक ही चरण कहलाता है, वह कहता है हमारा यह धर्म हैं हमारा यह धर्म, मानो देखो, हमारा धर्म एकोकी वचन कहलाता हैं, एक ही वचन मानो देखो, धर्म है, नाना रूपों में मानो देखो, धर्म उसके लिए गुणों का वर्णन कहलाता हैं नाना रूपों में तो गुणों का वर्णन है, और धर्म केवल देखो, एकोकी वचन माना गया हैं जैसे मानो देखो, इससे पूर्व काल में, हम तुम्हें काला के सुमेरू की चर्चा कर रहे थे मानो देखो, यह सुमेरू एक धर्म कहलाता हैं उसके नाना लक्षण है और नाना उसकी जो धाराएं है वह एक ही मानो देखो, एकोकी करण हो करके, एकोकी रूप में मानो देखो, परिवर्तित होती रही हैं एक ही रूप में वह परिवर्तित हो करके और समाहित हो जाती है, तो मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, तुम्हें यह वर्णन करने के लिए आया हूँ क्या परमपिता परमात्मा है ऐसा जो मानव निश्चय कर लेता हैं वह मानव संसार में किसी भी प्रकार की रूढ़ियों में परिणत नही होता, जो यह स्वीकार करते है कि ब्रह्म है तो मानो देखो, वह उस गुरुडम्बावाद में भी अपना विश्वास नही करता है कि वह अपने को महापुरूष या ब्रह्म अपने को घोषित कर देता है क्योंकि ब्रह्म वह मानव अपने को घोषित करता है जो मानो देखो, ब्रह्म को नही जानता और जो यह कहता है कि ब्रह्म है, जब उसे यह निश्चय हो जाता है कि ब्रह्म है वही इस शरीर में रमण करता हुआ, वह आत्मा यह नही कहता कि मैं ब्रह्म हूँ अथवा मैं मानो देखो, ब्रह्म से भी तो दूरी तो उच्चारण कर सकता है, कि ब्रह्म से मैं दूरी नही हूँ मैं ब्रह्म के अंग संग विद्यमान हूँ और जो यह कहता

है कि करूप हूँ जो यह कहता है कि मैं ही ब्रह्म हूँ तो मानो देखो, मैं ब्रह्म कहने वाला परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में मानो देखो, वह अपने में अभिमानी कहलाता है।

माता का ममत्व

तो मेरे प्यारे! देखो, मैंने कई काल में यह वर्णन करते हुए यही मानो देखो, हमारे यहाँ, परम्परागतों से जो इस प्रकार के सिद्धान्तों की प्रायः चर्चा होती रही हैं, दोनों प्रकार की आभाओं में मानव रमण करता रहा हैं, जब मानव बेटा! ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है और यह निश्चय कर लेता है, कि ब्रह्म है, परन्तु ब्रह्म है का जब एक उद्घोष करता हैं तो मानो देखो, वह जब उसके अंग-संग परिवर्तित अंग-संग जाता हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत, उसका नष्ट हो जाता हैं और बाह्य जगत जब नष्ट हो जाता है तो आन्तरिक जगत में बेटा! ब्रह्म है मानो देखो, ऐसा स्वीकार करता हुआ, वह ब्रह्म के आँगन में, जैसे माता का पुत्र, जब यह स्वीकार मानो देखो, जब क्षुधा से पीड़ित होता हैं, तो क्षुधा से पीड़ित होता है तो रूदन करता है, तो माता का अन्तर्हृदय है वह बालक जब तक माता का हृदय बना रहता हैं, तो माता अपनी लोरियों का पान करा देती हैं और जब लोरियों का पान करा देती हैं तो मानो देखो, उस बालक की क्षुधा और माता की लोरियां दोनों का एकोकीकरण हो जाता हैं वह अपनी क्षुधा को समाप्त कर देता है और माता अपनी ममता को पूर्ण कर देती है ममता और बालक की क्षुधा का दोनों का एकोकीकरण हो जाता हैं और जब दोनों का एकोकी करण हो जाता हैं तो मानो देखो, वह माता का हृदय है, माता के हृदय से, उस हृदय का समन्वय रहता हैं और जब यह माता यह स्वीकार करती है कि यह मेरा पुत्र प्रबल हो गया हैं वह क्षुधा मानो बाह्य जगत और देखो, पृथ्वी के अंग से मानो आलिंगन करता हुआ, अपनी क्षुधा को समाप्त कर देता हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, जितना वह जिसके निकट होता हैं उतना ही उसका एकोकीकरण हो जाता हैं इसी प्रकार ब्रह्म की आभा में जो रत्त रहने वाला हैं मानो वह निश्चय करता है, कि मैं ब्रह्मे जब मुनिवरों! देखो, वह मानव ब्रह्म में रमण करने लगता हैं, तो बाह्य जगत बेटा! उसका शान्त हो जाता हैं जैसे माता का पुत्र मानो बाह्य जगत से उसका कोई समन्वय नही रहता, वह माता के अंग संग अपनी क्षुधा को पूर्ण करता है इसी प्रकार जो आत्मवेत्ता मानो देखो, ब्रह्म को जानता है, वह मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा के आनन्द में अपनी क्षुधा को शान्त कर लेता हैं और जब वह क्षुधा शान्त हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत से उसका कोई समन्वय नही रहता वह अपने को ब्रह्म नही उच्चारण कर सकता। क्योंकि वह तो ब्रह्म में मानो समाधिष्ट हो गया हैं और ब्रह्म में जब वह समाधिष्ट हो जाता है तो बाह्य जगत से मुनिवरों! देखो, उसका विच्छेद हो जाता हैं वह अपने को ब्रह्म नही उच्चारण कर सकता।

तो मेरे प्यारे! देखो, एक ब्रह्म की आभा में जो मानव सदैव रत्त रहता है वही मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म को आभा में रत्त करता हुआ, इस सागर से पार हो जाता है।

ब्रह्म का राष्ट्र

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ विचार यह चल रहा हैं क्या ब्रह्म का जो राष्ट्र वह कितना मानो देखो, अनूठा हैं मानो यह भी ब्रह्म के राष्ट्र में ही मानव बेटा! अपनी कल्पना करता रहता हैं जैसे बाह्य राष्ट्र हैं बाह्य राष्ट्र में अनुशासन की आवश्यकता है क्योंकि बाह्य राष्ट्र का निर्माण जिस भी काल में हुआ है वह उस काल में हुआ है जब उसके अनुशासन से मानव वंचित हो जाता है और अनुशासन से जब विहीन हो जाता है तो उस काल में बेटा! देखो, बुद्धिमान जो वेद के मर्म को, अनुशासन के मर्म को जानने वाले हैं अथवा जो ब्रह्म की कृति को जानते हैं वह एकाग्र विद्यमान हो करके जब बेटा! देखो, अनुशासन की चर्चा करते हैं जब वह अनुशासन की चर्चा करते हैं क्या अनुशासन कैसे हमारा बनेगा तो अनुशासन की चर्चाएं करने लगते हैं तो अनुशासन में कहते हैं ब्रह्मचारी को कहते हैं हे ब्रह्मचारी! तू आ गुरु के संरक्षण में विद्यमान हो प्रजा और राजा दोनों सुगठित हो करके मानो देखो, ऊँची-ऊँची कल्पना करते हैं तो मानो देखो, मानव का जितना भी अनुशासन हैं वह इस बाह्य जगत में मानो देखो, अपभ्रंश हो जाता हैं उसकी अवृत्तियाँ बन जाती हैं परन्तु देखो, मानव के शरीर में, भी जो परमपिता परमात्मा ने मानो देखो, निर्माणवेत्ता ने, जो भी निर्माण कर दिया है अथवा जो भी अनुशासन क्रिया कलाप इन्द्रियों का है वह मानो देखो, परमपिता परमात्मा का अनुशासन बद्ध किया हुआ हैं उसको कोई भी मानव विच्छेद नही कर सकता और जब भी मानव बाह्य जगत में मानो देखो, इन्द्रियों पर अनुशासन परमपिता परमात्मा अनुशासन से विहिन हो करके कोई भी कल्पना करता हैं उसी काल में मुनिवरों! देखो, वह इन्द्रियाँ उसकी पुकारने लगती हैं वह इन्द्रियाँ परमपिता परमात्मा के ज्ञान से, विवेक से जब वंचित हो जाती है तो मानव का हृदय मानो देखो, एक व्याकुल हो जाता है और कहता है कि मैंने संसार में, कुछ नही किया मैं तो मानो ऐसे ही संसार में आया हूँ ऐसा ही न आया हूँ ऐसी कल्पना करने लगता हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह कौन ऐसा हो रहा हैं क्योंकि बाह्य जगत जब स्वार्थपरता में आ जाता हैं इन्द्रियाँ स्वार्थपरता में आ जाती हैं, प्रकृतिवाद में आ जाती हैं, जड़वत में, तो चेतना का जितना समन्वय होना था, उतना न हो पाया, परन्तु चेतना से जितना विच्छेद होता गया, उतना ही मानव के हृदय में नाना प्रकार की अशुद्ध विडम्बना का जन्म होता रहा। उस जन्म का अभिप्रायः यह हुआ, क्या मानो देखो, अपने-अपने कर्तव्य से दूरी चला गया। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या हो रहा है, मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ कि मानव को अनुशासित रहना

चाहिए, मानव को अनुशासन में रहना चाहिए, अनुशासन किसे कहते हैं, अनुशासन कहते हैं परमपिता परमात्मा को स्वीकार करना, जो परमपिता परमात्मा को अनुशासन रूपों में स्वीकार करता हैं, तो यह जो मानव की मानव पर जो शासन करने की प्रवृत्ति हैं यह प्रवृत्ति मुनिवरों! देखो, समाप्त हो जाता है। यह प्रवृत्ति उस काल तक रहती है, जब तक हम देखो, अपने को परमपिता परमात्मा से विमुख कर लेते हैं और धर्म से अपने को दूरी कर लेते है, प्राण प्रतिष्ठा की चर्चाएं इससे पूर्व काल में हम कर रहे थे, कि मानव जब वंचित हो जाता है तो मानव भिन्न-भिन्न प्रकार की ऐसी कल्पना करने लगता है, ऐसे मानो स्वार्थपरता में आ करके, अपनी आभा से दूरी होता चला जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या आज मैं बेटा! गम्भीर रूपों में ले जाना नही चाहता हूँ, विचार यह चल रहा है, कि मानव समाज यह जान लेता है क्या परमपिता परमात्मा है जैसे मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्लाद मुनि के यहाँ मानो देखो, कुछ ब्रह्मचारी जन पंहुचे, जिनमें मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि भी थे, और ब्रह्मचारी मानो गार्गेय थे और मानो देखो, छः जिज्ञासु जब महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज के भंयकर वनो में तप करते थे उनके द्वार पर पंहुचे तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अप्रतं ब्रह्म की जिज्ञासा के लिए, सर्वत्र मानो ऋषि-मुनियों में गमन करते हुए महर्षि पिप्लाद मुनि के द्वार पर आये, तो पिप्लाद जी से कहा सम्भव ब्रहे क्या हे भगवन! हम आपकी शरण में आये हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम विराजो। वह विराजमान हो गये, मेरे प्यारे! वह शान्त मुद्रा में विद्यमान रहें। मेरे प्यारे! देखो, प्रातःकाल से सांयकाल हो गया, सांयकाल के समय पिप्लाद मुनि ने कहा, कहो ब्रह्मचारियों तुम्हारा आगमन कैसे हुआ है, तुम जिज्ञासु हो या ब्रह्मचारी हो या तुम देखो, श्रोत्रीय ऋषि हो? मेरे प्यारे! उन्होंने अपने में एक स्वर में हो करके कहा क्या प्रभु! हम तो मानो जिज्ञासु हैं और जिज्ञासु बन करके आपके समीप आये हैं, उन्होंने कहा कि यह तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ,हमने भ्रमण किया है और परमात्मा के सम्बन्ध में, अपने सम्बन्ध में हमने चिन्तन और मनन किया है हमने यह तो स्वीकार कर लिया हैं, क्या ब्रह्म है, परन्तु देखो, ब्रह्म का तो निश्चय हो गया है, कि ब्रह्म है, जब मानो देखो, जब उन्होंने कहा कि हे भगवन! हम एक समय छ जिज्ञासु मानो देखो, समुद्र के तट पर जहाँ मुनिवरों! कहां जहां देखो, गंगा, यमुना, सरस्वती का समन्वय होता है और वह समुद्रो में जहाँ अपनी आभा में रत्त हो जाते है और अपने को जिज्ञासु अपने को स्वीकार करके यह निश्चय कर लिया क्या, ब्रह्म है, वह ब्रह्म कैसे निश्चय हुआ? हमें समुद्रों के मानो देखो, गर्भ में जाने से, जब हम समाधि में, जब हम मन को और प्राण के सन्निधान से मानो रमण करते हुए, पंच महाभूतों में गति करते हुए, जब मानो देखो, हम समुद्र की सतह में जब देखो, रमण करने लगे, तो समुद्र अपनी आभा में

निहित रहता है। परन्तु देखो, उन्होंने वह जो तरंगों का वाद है वह एक दूसरे से मानो देखो, उनका समन्वय रहता है इसी प्रकार एक शब्द हैं, दूसरे शब्द से उसका समन्वय रहता हैं। मानो देखो, हम ये रचना को दृष्टिपात कर लिया, एक समय मानो देखो, हम अपने में, यह अनुभूति करने लगे, कि माता के गर्भस्थल में हमारा निर्माण कैसे हुआ है, और वह निर्माण कौन कर रहा हैं तो मानो देखो, माता के समीप पंहुचे, तो माता से कहा हमने क्या हमारा निर्माण किसने किया है? तो उन्होंने कहा कि हम नही जानते कौन निर्माण किया, किसने, पिता से कहा हे पितर! आप मानो देखो, माता-पिता के दोनों का सन्निधान मात्र से हमारी रचना हुई है उस रचना के मूल में आप हैं? तो पिता ने कहा कि नही, हम उसके मूल में नही हैं। हम तो केवल मानो देखो, कर्तव्य के रूप में तो विद्यमान है, परन्तु देखो, निर्माण के, गर्भ में हमारा कोई समन्वय नही बन रहा है। तो मानो इससे हमें यह निर्णय हुआ, क्या ब्रह्म कोई है मानो देखो, जिसके गर्भ में निर्माण होता हैं, उस माता को ज्ञान नही, जिस पिता के सन्निधान मात्र से निर्माण हुआ है, उस पितर को कोई ज्ञान नही मानो, देखो, इससे यह प्रतीत हुआ, क्या ब्रह्म कोई वस्तु हैं, जब हम मानो देखो, भ्रमण करते हुए, आचार्य के कुल में पंहुचे जिन्होने, हमारी बाल्यकाल में दीक्षा दी, हम दीक्षित के द्वार पर पहुंचे, आचार्य के चरणों को स्पर्श करके कहा, कि भगवन! कि आप हमें शिक्षा प्रदान करने वाले हैं, उन्होंने कहा कि मैं देखो, दार्शनिक रूपो में तो मैं परमपिता परमात्मा की दृष्टि में या राष्ट्र में उसके राष्ट्र में, दृष्टि से मैं कोई शिक्षक नही हूँ, उन्होंने कहा क्यों? क्योंकि यह तो केवल निमित कहलाता है। मानो तुम सम्पर्क में आये तुम्हारी अन्तःकरण का जो ज्ञान है उसको हमने बाह्य जगत के ज्ञान से उसका समन्वय कर दिया हैं। परन्तु जो तुम्हारा आन्तरिक ज्ञान हैं जो तुम्हारा आध्यात्मिक ज्ञान है, परन्तु उसको देखो, यदि तुम उसको योगाभ्यास के द्वारा देखो, ब्रह्मवेत्ता के समीप पंहुचोगे, तो तुम्हें वह ब्रह्म का ज्ञान करा देगा, क्योंकि ब्रह्म तुम्हारे अन्तःकरण में विद्यमान हैं जब तुम मानो देखो, विज्ञान के, विज्ञानवेत्ताओं के समीप पंहुचोगे तो मानो देखो, विज्ञानवेत्ता तुम्हें विज्ञान की तरंगों में ले जाता हैं और वह वैज्ञानिक बना देता है क्योंकि विज्ञान, उससे पूर्व सूक्ष्म रूप से तुम्हारे अन्तःकरण में विद्यमान हैं तो मानो देखो, उस अन्तःकरण के, उस विज्ञान को वैज्ञानिक देखो, बाह्य जगत में ला देता हैं, वह जो विज्ञान यदि अन्तःकरण में नही होगा, चित्त के मण्डल में नही होगा, मनस्तव नही होगा तो मानो तुम बाह्य जगत में उस विज्ञान को नही ला सकोगे।

तो मेरे प्यारे! ऋषियों ने यह वर्णन किया क्या विज्ञानवेत्ता क्या देखो, शिक्षालयों में आचार्य उनके अन्तःकरण के अंकुरों को जागरूक कर देते है उसका बाह्य जगत में मानो वृत बन जाता है जब उस सर्वत्र को हम समेट करके, एक मानो सीमित हो जाते है अपने में

कटिबद्ध हो जाते हैं तो देखो, मन, बुद्धि, चित्त अहंकार इनमें सबका ज्ञान का कोष मानो विद्यमान रहता हैं और जब हम सिमट करके मानो देखो, एकोकीकरण ब्रह्म में समाधिष्ट हो जाते है तो प्रकृति का जितना ज्ञान है वह हमसे ओझल हो जाता है ब्रह्म के गर्भ में हम प्रवेश करते हैं तो मानो देखो, ब्रह्म ही ब्रह्म हमें दृष्टिपात आता हैं तो मेरे प्यारे! वह इस प्रकार की उन्होंने अपना वर्णन किया तो पिप्लाद मुनि से कहा कि भगवन! हमें यह निश्चय हो गया है कि ब्रह्म है, क्योंकि देखो, हमने यह विचारा था एक समय, क्या माता ही ब्रह्म है जब माता से प्रश्न किया तो माता भी ब्रह्म नही प्रतीत हुई, उन्होंनें हमने विचारा क्या पिता ही ब्रह्म है क्योंकि पिता के देखो, वीरतव से हमारे वीरतव का निर्माण होता हैं, तो मानो देखो, वह भी हमें मानो देखो, वह ब्रह्म दृष्टिपात नही, आये अहा आचार्य के कुल में पंहुचे क्योंकि वह जीवन देते हैं माता-पिता तो जन्म ही देते हैं शरीर को, परन्तु देखो, वह जीवन देते हैं उन्होंने कहा मैं जीवन देता हूँ। परन्तु जैसे देखो, पृथ्वी के गर्भ में एक अंकुर मानो पृथ्वी के गर्भ में विद्यमान करते हैं मानो देखो, सर्वत्र जल अग्नि वायु से जा करके देखो, उसमें एक अंकुर उत्पन्न हो जाता है वह अंकुर वह मानो देखो, एक पृथ्वी में जैसे पृथ्वी में उस अंकुर को जीवन दिया है और जीवन को मानो धारण करने वाला मानो देखो, बाह्य जगत है शिक्षा प्रद बन गया है इसी प्रकार मानो देखो, यह वृक्षां ब्रह्मा वाचाः ऐसे ही देखो, यह वृक्ष बन जाता है मानो देखो, वृक्षं ब्रह्मा जीवन देने वाला आचार्य ने कहा क्या मैं इस प्रकार का जीवन दे देता हूँ मानो जैसे एक मानव वाटिका में एक सेवक रहता है वह जल और उसको ताप दे करके वृक्ष को उन्नत करता है इसी प्रकार वह फलदायक बन जाता है मानो देखो, ऐसे मैं भी जैसे पृथ्वी अंकुरों में जीवन या देखो, वाटिका में एक सेवक रहता हैं परन्तु वह स्वयं अपने में अप्रतियां प्रदान करता रहता हैं, ऐसे ही मैं मानो देखो, तुम्हें जीवन देता हूँ परन्तु मैं ब्रह्म नही हूँ, ऐसे ही हमने जब यह विचारा कि यह जो विज्ञानवेत्ता है यही ब्रह्म हो सकते हैं जब ब्रह्मवेत्ताओं के समीप पंहुचे तो उन्होंने मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता का विज्ञानवेत्ताओं के समीप पंहुचे, तो विज्ञानवेत्ताओं से कहा, कि तुम ब्रह्म हो उन्होनें कहा कि हम ब्रह्म क्यों होते हम तो केवल उसकी जो प्रतिभा है जो जड़वत मानो देखो, ज्ञान से शून्य जितना भी यह जगत हैं उसमें जो परमाणु एक दूसरे में आदान-प्रदान हो रहे है उन परमाणुओं को एकत्रित करते हैं उन ऊर्ज्वाओं को ले करके, यन्त्रों का निर्माण करते हुए नाना प्रकार के वाहन वरुणास्त्र अग्नेयस्त्रों का निर्माण करके हम ऊर्ध्वा को प्राप्त करा देते हैं परन्तु वह भी उन्होंने ब्रह्म की आभा कहलाती है।

ऋत सत की विद्यमानता

मेरे प्यारे! देखो, वह जिज्ञासुओं ने कहा कि-प्रभु! जब हमें यह निश्चय हो गया, हम छः

जिज्ञासु इस प्रकार बहुत समय हो गया है भ्रमण करते हुए, हमें यह निश्चय हो गया है कि ब्रह्म है तो प्रभु! हम आपकी शरण में इसीलिए आये हैं। तो उन्होंने कहा पिप्लाद जी बोले कि तो तुम क्या चाहते हो? जब तुम्हें ब्रह्म का मानो देखो, यह निश्चय हो गया कि ब्रह्म है क्या तुम निर्णय दो कि तुम चाहते क्या हो? उन्होंने कहा कि-प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं क्या मानो देखो, ब्रह्म में ऋत और सत कैसे ओत-प्रोत रहते हैं? तो मेरे प्यारे! देखो, ऋत और सत के ऊपर उन्होंने प्रश्न किया, जब यह प्रश्न किया कि महर्षि पिप्लाद मुनि ने कहा कि मेरे आश्रम का यह नियम माना गया है क्या, मानो देखो, ब्रह्मे वाचप्रह्वा इस आश्रम का यह नियम है क्या मेरे एक वर्ष होता है, एक वर्ष में तुम देखो, दिवस और रात्रि मानो एक वर्ष तुम गऊओं की सेवा करो, और गऊओं की सेवा करते हुए, जब मानो एक वर्ष हो जायेगा, जब मुनिवरों! देखो, मेरे समीप आना जो ऋत और सत जो ब्रह्म में है इसका मैं तुम्हें निर्णय दे सकूंगा।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह स्वीकार कर लिया तो उन ब्रह्मवेत्ताओं ने जिज्ञासुओं ने स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके बेटा! उन्होंने जब जैसे ही फिर स्वीकार किया तो पिप्लाद मुनि कहते हैं पिप्लाद मुनि ने कहा क्या हे जिज्ञासुओं तुम्हें यह प्रतीत है क्या मैंने यह स्वीकार तो कर लिया है क्या मैं तुम्हें एक वर्ष में देखो, ऋत और सत का ज्ञान दूंगा परन्तु मेरा एक और इसमें प्रतिबन्धन रहता हैं उन्होनें कहा क्या यदि मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा वह स्वतः ब्रह्मे मेरे प्यारे! उसमें से कवन्धि ने कहा, क्या कि-प्रभु! आप जानते हैं यदि आप जानते नही, तो एक वर्ष तक गऊओं की सेवा का मानो हमें भार नही देते, इससे हमें प्रतीत होता हैं, क्या तुम जानते हो क्या ये तो तुम्हारी जो ब्रह्म को जानने वाला हैं जो ब्रह्म के ज्ञान विज्ञान में मानो सदैव रमण करता रहता है यह तो उसकी उदारता हैं यह तो उसकी उदारता का प्रतीक हैं क्या मैं जानता हुआ भी नही जानता हूँ, यह तो भगवन! आपका ऋषितव कहलाता हैं तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या जो ब्रह्म को जानने वाला हैं।

जो ब्रह्म में रमण करता है और बाह्य जगत के ऋत और सत को भी जानता हैं उसे बेटा! अभिमान नही होता, वह ब्रह्म में रमण करता हुआ, अपने को जिज्ञासु कहता है, वह ब्रह्म में अपने को स्वीकार करता हुआ अपनी अन्तरात्मा से बाह्य जगत में कहता है कि मैं तो साधक हूँ वह कहता है कि मैं तो विद्यार्थी हूँ, तो संसार में प्रत्येक मानव बेटा! विद्यार्थी बना रहता है। तो विचार क्या मेरे प्यारे! देखो, परमपिता परमात्मा के अनुशासन की मैं चर्चा कर रहा था विचार यह दे रहा था कि जितना भी यह जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, मानो देखो, यह ब्रह्म का, एक रूप है देखो, उसी का अनुशासन है, एक परमाणु परमाणु में रत्त रहने वाला है, आज

का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, अपने को यह स्वीकार कर लें, कि हम परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान हैं, वही हमारा धिराज हैं मानो देखो, उसी के अनुशासन में मानो उस बाह्य जगत में वह पाप से रहित हो जाता है, वह पापाचार में परिणत नही होता, वह ब्रह्म को सर्वत्र स्वीकार करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का यह विचार समाप्त होने जा रहा है कल मुझे समय मिलेगा तो कल बेटा! मैं तुम्हें ब्रह्म के राष्ट्र की चर्चा करूंगा और पिप्लाद और यह जिज्ञासु क्या-क्या विचार एक वर्ष तक करते रहे यह चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।

३ ब्रह्मचर्य व्रत 03 03 1987

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहारी वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे गुणगान मानवीय हृदय से गाता रहता है, तो मानव का हृदय अगम्य बन जाता है, और वह अपने में यह अनुभव करने लगता है कि मैं प्रभु के आनन्दमयी जगत में विद्यमान हूँ। क्योंकि जब वह अपने मनस्तव, सान्तवना, आभा को ले करके और उन तरंगों में वह रमण करने लगता है तो उनमें तरंगित हो करके वह अपने को द्यौ-लोक में पहुंचा देता है।

राष्ट्रपिता परमात्मा

तो मुनिवरों! आज हम वेदों की उस आभा में, अपने को ले जाते चले जा रहे थे, जहाँ परमपिता परमात्मा की महिमा का, प्रायः गुणगान गाया जाता है, और परमपिता परमात्मा की जो आनन्दमयी, मानो जो प्रतिभा कहलाती है, वह प्रायः उस महानता का दिग्दर्शन है, जिन दर्शनों में जाने के पश्चात, परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसकी रचना के ऊपर हमारा विचार विनिमय होता रहता है। वे परमपिता परमात्मा कितना रचयिता है और वह कितना मानो राष्ट्रपिता है प्रायः मानो देखो, राष्ट्रपिता वह कहलाता है जो संसार रूपी मानो राष्ट्र को अपने में धारण कर रहा है, और इस ब्रह्माण्ड को जो संचालन करने वाला है। तो मेरे पुत्रों! आज हम परमपिता परमात्मा को यह स्वीकार करते हैं, कि राष्ट्रपिता तो वे परमपिता परमात्मा है वह मानो देखो, विष्णु बन करके, इस संसार रूपी राष्ट्र का संचालन कर रहा है। मानो जब वे प्रत्येक वस्तु मे उस का भान करने लगते है तो वही तो अनुशासन में रहने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता है।

मानव आकार का शब्द आकार

जो नाना प्रकार के मानो इस ब्रह्माण्ड में ये क्रियाकलाप हो रहे हैं, चाहे वह शब्दों के द्वारा हो रहे हैं, चाहे वह मौन हो करके हो रहे हैं, चाहे वह शब्दों के आकार के रूप में परमाणु, एक दूसरे में रत्त हो रहा है, मानो देखो, उनको अनुशासन में बनाने वाला, वह राष्ट्रपिता कहलाता है। एक मानव के मुखारबिन्दु से एक शब्द का उच्चारण होता है, परन्तु वह शब्द का आकार इतने आकार वाला है, जितना मानव का यह शरीर कहलाता है और उतने आकारों में वह परमाणुवाद भ्रमण करता हुआ, मानो उसी आकार के रूप का मुनिवरों! देखो, वह अन्तरिक्ष में रमण करता है वह शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो जाता है और

विद्यमान हो करके उसी आकार का वह शब्द है और उसी आकार के शब्द में मानो देखो, चित्र विद्यमान हैं और उसी आकार का वह चित्र कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, कोई न कोई तो इसका विज्ञानवेत्ता है, मानो जो यह विज्ञान, जो प्रत्यक्षवाद में नहीं था, मानो था परन्तु देखो, उसका निर्माणवेत्ता तो वह मेरा देव ही कहलाता है।

मेरे प्यारे! यह कैसा अनुशासन में जितना उसका क्रियाकलाप होता है और उतनी ही मानो देखो, वह गतियों में रत्त होता रहता है, तो वह कौन है ऐसा? वह कौन कर रहा है? मानो वही तो वह मेरा देव परमपिता परमात्मा कहलाता है मेरे प्यारे! नाना प्रकार की वनस्पतियों का रस है जो नाना प्रकार के मानो देखो, अन्नाद में विद्यमान है। वह चाहे मानव हो, चाहे कोई भी प्राणी मात्र हो, परन्तु देखो, इनमें सबमें एक ही रूप का वनस्पतियों के रस का निर्माण होता रहता है, और उन्हीं रसों के द्वारा मानो देखो, इस संसार की रचना होती रहती है। वह मेरा प्यारा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है अथवा वह नियन्त्रण में है और उसी गति से वह गतिवान है, मानो देखो, उसी प्रकार से उसका क्रियाकलाप हो रहा है, तो वह निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु देखो, उस परमपिता परमात्मा को कोई उद्गीत गाने लगे, तो बेटा! गाया नहीं जाता। वह इतना अनूठा है, इतना विचित्र है कि उसके गान गाने में मानव की वाणी मौन हो जाती है, नेत्र दृष्टिपात करना शान्त कर देते हैं, श्रोत्र बेटा! शब्दों से वंचित हो जाता हैं। तो विचार क्या, मानो देखो, ऐसा अनुपम, ऐसा भव्य यह जगत है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण, अनुसन्धान करता रहता है।

गौ नाम का स्वरूप

मेरे प्यारे! आओ, मैं तुम्हें इसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! महर्षि पिप्पलाद मुनि के द्वारा जिज्ञासु जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब वे जिज्ञासु जब मानो देखो, उन्होंने एक निर्णय कर लिया, एक अनुसन्धान करते हुए, और परमपिता परमात्मा को राष्ट्रवेत्ता स्वीकार करते हुए, यह स्वीकार कर लिया कि ब्रह्म है, तो बेटा! देखो, उन्होंने कहा कि हमें एक वर्ष तक मानो देखो, गऊओं का हमें पालन करना है। बेटा! यहाँ गऊओं के दो अर्थ माने जाते हैं। एक गौ नाम का पशु होता है, मेरे प्यारे! देखो, एक गौ नाम का पशु है, और एक गौ नाम इन्द्रियों का है मानो देखो, गौ नाम पृथ्वी को भी कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह विचारा, कि हमे गौ की रक्षा, गौ सेवा करनी है, जब मेरे प्यारे! जिज्ञासुओं को निर्देश प्राप्त हो गया कि तुम्हें गऊओं का पालन करना है, तो वह गऊओं का पालन करने लगे। तो मानो देखो, इन्द्रियों को संयम करते हुए, और आश्रम में जो गौ नाम का पशु है, उस पशु के द्वारा मानो देखो, का दुग्ध आहार करते हुए, उनकी भी वह सेवा करते थे। इन्द्रियों के ऊपर संयम

का नाम उसकी सेवा है। और पशु की सेवा करने का नाम मानो देखो, गौ सेवा कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के विज्ञान को जानने का नाम मानो देखो, वह गौ सेवा कहलाती है मेरे पुत्रों देखो, ब्रह्मा वाचन्नमं ब्रह्मा व्रतम् तो मुनिवरों! देखो, गौ नाम पशु को कहा जाता है, तो मानो देखो, यहाँ प्रकरण यह कहता है, क्या गौ नाम पशु का तो होता ही है, परन्तु गौ नाम यहाँ इन्द्रियों को माना गया है। मेरे प्यारे! ऋषि ने यह कहा था कि ब्रह्मचर्य से हमे रहना है, जब ब्रह्म जिज्ञासु है तो क्या वे ब्रह्मचारी नहीं थे? परन्तु वे ब्रह्मचारी भी थे, उसके पश्चात भी मानो देखो, ब्रह्मचारी और उसे पूर्ण आदेश प्राप्त होता है कि तुम्हें गऊओं की सेवा करनी है, क्या गौ नाम जब इन्द्रियों का है, ब्रह्मचर्य से रहना है।

ब्रह्मचर्य का अभिप्रायः

तो मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचर्य का अभिप्राय यह है मैंने तुम्हे कि जो कई काल में वर्णन किया है, और यह कहा है कि गौ नाम मानो इन्द्रियों का माना है, ब्रह्मचर्य व्रत वह कहलाता है जो मानो देखो, अपने में ब्रह्म और चरि दोनों को, प्रत्येक श्वांस एक सूत्र में पिरोना है, एक सूत्र में सूत्रित करता है और माला बना करके, ब्रह्मरूपी मानो जो सुमेरू है, अथवा उसी को तो हमें एक प्रतिष्ठा में पहुंचाना है, उसी की हमें प्रतिष्ठा करनी है। तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है, इनके जीवन कालों से अथवा उनके आश्रमों से यह दृष्टिपात हुआ, कि ब्रह्म की जिज्ञासा कितनी विशाल होती है और ब्रह्म की जिज्ञासा कितनी महान मानवीयता की उग्रता में परिणीत होती रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, बेटा! एक समय वह सभी जिज्ञासु रात्रि के मध्यकाल में अपनी स्थलि पर विद्यमान हो कर विचारने लगे कि हमें जो आचार्य ने यह उपदेश दिया है, कि तुम ब्रह्मचारी रहो परन्तु हमने ये कहा कि ब्रह्म की तो निष्ठा हो गयी है, तो क्या हम ब्रह्मचारी नहीं हैं? तो मुनिवरों! देखो, वे ये विचारने लगे कि ब्रह्मचरिष्यम् ब्रह्मा, मेरे प्यारे! देखो वह अपने में निर्णय करने लगे, कि आचार्य ने हमें ब्रह्मचर्यव्रत के लिए क्यों कहा है। जब इतना समय हमें मानो देखो, गृह का वास किये हुए हो गए हैं, ब्रह्म की जिज्ञासा के लिए, हमने बारह-बारह वर्ष के तीन अनुष्ठान किए हैं और उसके पश्चात भी आचार्य कहता है कि तुम ब्रह्मचर्य का पालन करो, तो यह ब्रह्मचर्य क्या है, इसके ऊपर भी तो विचारना है।

तो वह विचारने लगे, मेरे प्यारे! देखो, इतने में गार्गे ने कहा कि मेरे विचारों में तो ब्रह्मचर्य तो मानव के मन की प्रवृत्ति है। वह प्रवृत्ति प्राण में तल्लीन हो जाए या प्राण में मन तल्लीन हो जाए तो ऐसा मानो कि वह ब्रह्मचारी है। इसके पश्चात उन्होंने कहा कि हम यह भी स्वीकार कर सकते हैं परन्तु इसीलिए नहीं किया जाता कि ये प्राण भी और मन भी, यह तो एक ही सूत्र के दोनों मनके हैं। उसके पश्चात भी मन और प्राण को एकाग्र करते हुए ब्रह्म की

जिज्ञासा में हमने ब्रह्म को जाना है, परन्तु ब्रह्म पिपासा में तल्लीन रहे है तो आज इस वाक् को हम कैसे स्वीकार करें? इसमें ब्रह्मचारी कबन्धि ने कहा कि आचार्य ने इसलिए कहा है कि तुम्हारा जो यह मानो यह शरीर है, यह मानो देखो, ब्रह्मचर्य से जकड़ी एक आकृत्ति कहलाता है। ब्रह्मचर्य से और प्रकृति के सन्निधान का नाम ही मानो ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है, इसीलिए दोनों को जानना है, दोनो को जानने का नाम उन्होंने ब्रह्मचर्यव्रत कहा है। मेरे प्यारे! देखो, इतने में सुनीति बोले कि नहीं, भगवन! यह भी विचार हमारे आंगन में नहीं आया है, क्योंकि ये तो दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने अपना निर्णय दिया कि मेरे विचार में तो यह है कि हम इस ब्रह्माण्ड को जान लें, और जान करके ब्रह्माण्ड और पिण्ड दोनों को जान करके दोनों का हम समन्वय कर दे तो उसका नाम ब्रह्मचरिष्यामि कहलाता है।

मेरे प्यारे! ये भी वाक् उनके आंगन में नहीं आया। विचारा कि जैसे राष्ट्र और प्रजा दोनों मानो देखो, सम्मिलित हो करके, राष्ट्र का संचालन करते हैं। प्रजा के बिना राष्ट्र शून्य है और राजा के बिना प्रजा शून्य कहलाती है। इसी प्रकार दोनों का मानो देखो, समावेश और संचालन हो रहा है। ऐसे ही मानो देखो, ब्रह्म इसमें पिरोया हुआ है, उस ब्रह्म को स्वीकार करना ही हमारा ब्रह्मचर्यत्व कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् पान करते हुए मुनिवरों! देखो, महर्षि अरवेतु ऋषि ने कहा कि ये भी विचार हमारे में नहीं आ रहा है, क्योंकि यह तो स्वतः हो रहा है। आचार्य ने ये सब तो हम जानते हैं, परन्तु उसके पश्चात भी आचार्य ने ब्रह्मवर्चोसि कहा है।

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है कि जैसे ऊर्ध्वा और ध्रुवा में प्रकृति में ये गतियां हो रही हैं, इन गतियों को ऊर्ध्वा और ध्रुवा दोनों में जानने का नाम मानो देखो, ब्रह्मचर्य व्रत कहलाता है। ऊर्ध्वा और ध्रुवा में जितनी भी गतियां हो रही हैं, जितना भी वर्णन हो रहा है मानो देखो, यह ब्रह्मचर्य व्रत कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तिम जिज्ञासु ने कहा कि नहीं ऐसा नहीं है। मेरे विचार में यह आता है कि जो श्वास पर श्वास अपनी ध्वनियां कर रहा है, मानो देखो, जैसे प्रातःकाल में सूर्य की ऊर्ज्वा आती हैं, सूर्य की किरणें आती हैं और वह सूर्य की किरणें पृथ्वी को तपायमान करती हैं और पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है, नाना प्रकार की वनस्पतियों में नवीन ऊर्ज्वा वाला प्राण आ जाता है तो इससे मुझे यह प्रतीत होता है कि इसी प्रकार जैसे ऊर्ज्वा किरण आयी और गति कर गयी, किरण आयी फिर गति कर गई फिर आयी, पुनः गति कर गयी, ऐसे ही मानव का स्वाभाविक श्वास गति कर रहा है। मानो इस श्वास में ब्रह्म को मध्यस्थ बना करके प्राण और मन के साथ में दोनों का चिन्तन करना, मनका बनाना और मनका बना करके मानो देखो, ब्रह्मसूत्र में पिरोने का नाम ब्रह्मचर्य कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, अन्तिम निर्णय दिया, कि संसार में ब्रह्मचारी कौन

कहलाता है? उसमें जो अपने श्वास की गति को जान करके, ब्रह्म को मध्यस्थ बना करके जो श्वासों के मनके बनाता है, और मनके बना करके, उसकी माला बनाता है ब्रह्म को सुमेरू बना करके माला बना देता है, मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! वह नाना वह बाह्य जगत में भी मनकों का निर्माण करता है।

मुनिवरों! बाह्य जगत में कैसे निर्माण हो रहा है? मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत में यह जो ब्रह्माण्ड है, यह जो ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आ रहा है इसके मानो तथ्यों को जान करके, विज्ञान के वांग्मय में प्रवेश करते हुए मुनिवरों! देखो, अपने में जो पिरोना जानता है, प्रत्येक तरंग को मुनिवरों! वैज्ञानिक जिस प्रकार तरंगों को जान करके, मानो उसके अणु और परमाणु को जान करके, यन्त्रों को निर्माण कर देता है तो वह कहता है कि ब्रह्म के रचनामयी तथ्यों को एकत्रित करके मैंने यन्त्रों का निर्माण किया है। मानो देखो, वह जो यन्त्रों का जो निर्माण किया है, यन्त्रशाला में जो यन्त्रों का निर्माण किया है तो मैंने ब्रह्मसूत्र में एक मनका बनाया है। वह मनका तो कहलाता है जब वैज्ञानिक यह स्वीकार करता है कि यह मनका परमात्मा की एक धरोहर है और **वायुमण्डल में एक एक तरंग धरोहर विद्यमान है, उस धरोहर को हमने कुछ जाना है, बाह्य जगत में उनका प्रदर्शन कर दिया है,** मानो उसका जो रचयिता है वह ब्रह्म कहलाता है, वही आभा में निहित हो रहा है।

मेरे पुत्रो! जब इस प्रकार का विचार वैदिक आचार्य ने दिया, उस समय ऋषियों का अन्तरात्मा गद्-गद् हो गया। अब्रहे कृतं लोकाम् मेरे प्यारे! देखो, यह विचार होता रहा और अन्त में यह निर्णय, हो गया कि प्रत्येक श्वास का मनका बना करके मुनिवरों! देखो, ब्रह्मसूत्र में पिरोने का नाम ब्रह्मचारी कहलाता है और वह ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, मैं बहूत दूर चला गया हूँ, अपनी बहुत गम्भीर मुद्रा में चला गया हूँ। बहुत गम्भीर मुद्रा है। वैदिक साहित्य में इस प्रकार के जैसे यज्ञमान मानो देखो, अपना मनका बनाता है, एक समय बेटा! देखो, एक रात्रि तो समाप्त हो गयी द्वितीय रात्रि आई, अध्वर्यु, उदगाता, यज्ञमान और ब्रह्मा इत्यादि यज्ञशाला के समीप विद्यमान हो गये, और विद्यमान हो करके और मेरे पुत्रों! देखो, वह जिज्ञासु बन करके यज्ञमान के समीप पंहुचें यज्ञमान ने उसका स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भगवन!। हम इसलिए आए हैं यज्ञमान! क्या तुम जो मानो अन्न के रूप में विद्यमान हो, हम यज्ञमान के आशय को जानना चाहते हैं कि तुम यज्ञमान क्यों बने हो? ब्रह्मचारी सुनीति मुनि जो यज्ञमान बने हुए थे, उन्होंने कहा कि मैं यज्ञमान, यज्ञमान तो प्रभु! हैं जो इस संसार रूपी यज्ञशाला का निधित्व करने वाला है। मैं भी मानो देखो, अपना भौतिक याग रचा रहा हूँ। मैं आध्यात्मिक याग में प्रवेश होने के लिए, और संसार के ऋणों से

उत्रृण होने के लिए मैं मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हूँ। उन्होंने कहा कि-प्रभु! आप यज्ञ क्यों कर रहे हैं? जो यज्ञमान कहता है कि मैं याग इसलिए कर रहा हूँ कि यह जो संसार है मानो वह परमात्मा से प्रतिष्ठित हो रहा है परमात्मा की इस संसार रूपी प्राण-प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करने वाला है। जैसे राजा राष्ट्र की आभा में अपने चरित्र की प्रतिष्ठा करता है और चरित्र की प्रतिष्ठा करता हुआ, प्रजा अपने चरित्र की प्रतिष्ठा करता हुआ राजा के चरित्र से मानो बन करके, एक राष्ट्रीय माला बना देते हैं, राष्ट्र उसी माला को ले करके मुनिवरों! देखो, प्रतिष्ठित हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या विचार ये कि यज्ञमान कहता है, याग ब्रहे मैं यज्ञशाला में विद्यमान हूँ। जो भी तरंगे इस यज्ञ में, से साकल्य के द्वारा जो भी तरंगें मेरी भावना के साथ, साकल्य में प्रविष्ट हो करके, वायुमण्डल में जा रही है, मैं भी मानो, परोक्ष रूप में, उन देवताओं के समीप जाना चाहता हूँ, जो देवत्तमयी, श्वास लेते हैं, जो देवत्तमयी विचारते हैं, देवता तुल्य वह अपने को बना करके देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब यज्ञमान ने यह कहा तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा धन्य है भगवन! यज्ञमान कहता है भगवन! मानो सबका प्रतिनिधित्व तो परमपिता परमात्मा कहलाता है, मैं ऐसे रथ को निर्धारित करना चाहता हूँ **जिस रथ में विद्यमान हो करके, मैं द्यौ लोक में जा सकूं। उस रथ के जो अरे हैं वह मेरा आचरण है।** मानो रथ का जो वाहन ऊर्ध्वा में गति करेगा तो वह मेरा स्वाहाः है, क्योंकि स्वाहा को इसीलिए याग का प्राण माना गया है। बेटा! देखो, यज्ञशाला में जब स्वाहा उच्चारण करता है मानो देखो, वह याग का प्राण माना गया है जिसे प्राणों की प्रतिष्ठा में, मैं प्राणो की प्रतिष्ठा उसमें मानों देखो, उसमें प्रतिष्ठित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि, इस प्रकार अपने उद्गार देता हुआ कहता है कि मेरा तो यही मन्तव्य रहा है, कि मेरे संसार के समन्वय में कोई स्वार्थपरता नहीं है। मैं तो यह चाहता हूँ कि वह जो प्रकृति का भाग है, ये चेतना मेरी भावना रूपी वृत्तियों में परिणीत हो करके, वह द्यौ लोक में छा जाए, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाए।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने एक वाक्य और बड़ा महत्वपूर्ण कहा कि जब मानव यज्ञ में स्वाहाः उच्चारण करता है और वह तरंगें, भावना के साथ और साकल्य श्रद्धामयी घृत के साथ जब वायुमण्डल में प्रवेश होती हैं तो जितना दूषित वायुमण्डल है, जितना दूषित परमाणुवाद है, मानो देखो, उस परमाणु को वह निगलता रहता है उस परमाणु को वह निगलता रहता है और अपनी प्रतिभा को चौमुखी बना करके मानो देखो, वायुमण्डल में वह छा जाता है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है कि राजा को अश्वमेध याग करना चाहिए।

गौमेध, नाना प्रकार के यागों में परिणित रहना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो, यज्ञमान की पत्नी कहती है कि मेरा वायुमण्डल, मेरा अन्तर्हृदय, अन्र्तमुखी, जो आकाश है वह इतना महान बन जाए, कि जिससे मैं इस संसार में अपने कर्तव्यवाद में परिणित हो सकूं, और कर्तव्यवाद अपनी आभा में रत्त रहने वाला है।

तो मेरे प्यारे! विचार क्या, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूं। मैं कोई विशेष चर्चा तुम्हे देने नहीं आया हूं, केवल विचार क्या कि छः जिज्ञासु, पिप्पलाद मुनि आश्रम में, मध्यरात्रि के पश्चात निद्रा से तल्लीन, मानो देखो, निद्रा से परे अकृतियों में रत्त होते हुए, वह अपने में इस प्रकार का विचार विनिमय करते रहते थे। विचार क्या था मुनिवरों! देखो, प्रातःकालीन याग करना, याग करने के पश्चात मानो पुनः छः जिज्ञासु अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के, अपने-अपने विचार व्यक्त करने लगे। उन्होंनें कहा महाराज! यह जो याग हमने किया है, इस याग को हमारे आध्यात्मिकवाद से क्या समन्वय है? तो उसमें बेटा! कवन्धि ने कहा कि ये मानो देखो, आध्यात्मिकवादी प्राणी जब आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है तो वह अपने वातावरण को, अपने वायुमण्डल को अनुकूल बनाता है, जिससे मैं इन तरंगों में विद्यमान हो करके, अपनी तरंगों को तरंगित करके मानो मैं उस लक्ष्य पर पहुंच सके, जो लक्ष्य उसने बनाया है। मानो, देखो, मैं ब्रह्म को जानना चाहता हूँ या विज्ञान में प्रवेश करना चाहता हूं या मैं राष्ट्रीयवाद में प्रवेश करना चाहता हूँ मेरी विचारधारा उसके अनुकूल और चरित्र की प्रतिभा में रत्त हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कबन्धि ने यह अपना वक्तव्य दिया, कि क्या मानो देखो, आध्यात्मिकवाद जब हमारा बाह्य जगत पवित्र बन जाता है, तो वही आध्यात्मिकवाद में सहायक बन करके यही, विज्ञान में प्रवेश हो करके परमात्मा के राष्ट्र को अच्छी प्रकार, समष्टि रूप में जान सकेगें। जब उन्होंने यह वाक् कहा तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए।

मेरे प्यारे! देखो, सुनीति ने कहा कि मैं यज्ञमान बना हूँ, मानो, प्रभु इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माणवेत्ता है, मानो वह निर्माण कर रहा है, वह यज्ञ का रचयिता है, वह यज्ञमान है परन्तु हम तो केवल निमित्त कहलाते हैं। परन्तु आध्यात्मिकवाद तो हमारा जीवन है। जब परमपिता परमात्मा का और हमारे क्रियाकलापों का, दोनों का समन्वय हो जाता है तो मानो देखो, हम परमपिता परमात्मा के चैतन्यमयी, प्रकाशमयी राष्ट्र में अथवा उसके राज्य में जब अपने को स्वीकार करते हैं, तो वही हमारा आध्यात्मिकवाद है क्योंकि बाह्य जगत से उपरामता को चले गए हैं, देखो, हमारा आध्यात्मिकवाद एक लक्ष्य से मानो हम उस मार्ग के पथिक बनने जा रहे हैं, जिस मार्ग में जा करके हम सान्तवना को प्राप्त हो सकें।

मेरे प्यारे! तृतीय जिज्ञासु ब्रह्मचारी ने कहा कि हमारे इस याग का आध्यात्मिकवाद से

क्या समन्वय रहता है कि हम अनुष्ठान करते हैं, हमारा हृदय पवित्र हो जाता है और हमारे बाह्य जगत में जो देवता है, पंचीकरण जो हो रहा है वही पंचीकरण हमारे हृदय में विद्यमान है, वही हमारे शरीरों में विद्यमान हैं जब मानो बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों का समन्वय हो जाता है, दोनों से विजातीय पदार्थ नष्ट हो जाते हैं जैसे मानो देखो, प्राण चिकित्सा वाला, जब प्राण चिकित्सा करता है, **तो विजातीय प्राण अथवा जो विजातीय वायु श्वास के साथ में प्रवेश कर गया है प्राणायाम करने से मानो उसका शुद्धिकरण हो जाता हैं** और वह रुग्णो को, वह विजातीय को नष्ट कर देता है, स्वच्छता को प्रदान कर देता है। इसी प्रकार मेरे प्यारे! हम जो याग कर रहे हैं, इसका आध्यात्मिकवाद यह है कि हम अपने में शुद्धिकरण करते हुए और उसी शुद्धिकरण में मानो देखो अपने में शुद्धिकरण होता हुआ, हमारे आन्तरिक जगत में जो देवता क्रियाकलाप कर रहे हैं, उनका शुद्धिकरण और प्रसन्नता वास हो जाता है, विजातीयता नष्ट हो जाती है। तो बाह्य देवता और आन्तरिक देवता दोनों के मध्य में से, विजातीय नष्ट हो गया है और सजातीय हो करके हम मानो मानो बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों जगत का समन्वय कर लेते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार, जब ऋषियों ने अपना-अपना निर्णय देना प्रारम्भ किया, तो चतुर्थ जिज्ञासु ने कहा कि हम जो अपने में विद्यमान हैं, वह आध्यात्मिकवाद के लिए नहीं, हम इसलिए उसमें विद्यमान हैं कि हम सर्वत्र जगत को जान करके, ब्रह्म का दर्शन करना चाहते हैं। मानो देखो, जैसे हम निःस्वार्थ हो करके, अग्नाध्यान करके अग्नि में जब हम स्वाहाः कहते हैं, स्वाहाः यज्ञ का आत्मा बन करके और हमारी अन्तरात्मा का उद्गार उत्पन्न हो करके बाह्य जगत की प्रसन्नता और आन्तरिक जगत की प्रसन्नता दोनों मिलान करके, मानो एक ब्रह्म की आभा का जन्म हो करके हम द्यौ-लोक को प्राप्त हो जाते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषियों ने इस प्रकार अपना गम्भीर वाक् प्रारम्भ किया, तो इसमें उनका अवरोध होने लगा, मानो अपने में परिणीत हो गये, मानो देखो, उस याग का आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय हो करके, हम ब्रह्मसूत्र में अपने को पिरो करके और ब्रह्म को सुमेरू बना करके बेटा! हम उस परमपिता परमात्मा को प्राप्त कर सकें। ऐसा सदैव हमारा मन्तव्य रहता है जिसमें देखो, भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान और दर्शन विद्यमान रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा, इसलिए राष्ट्र का निर्माण करता है कि मैं अपनी प्रजा का शुद्धिकरण कर सकूं, परन्तु देखो, राजा जब अपना शुद्धिकरण कर लेता है आहार में, व्यवहार में तो प्रजा भी आहार और व्यवहार में अपना शुद्धिकरण करके राष्ट्रीयता को सजातीय बना

करके आध्यात्मिकवादी और बुद्धिजीवी बन करके, मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जान करके इस सागर से पार हो जाए, यह हमारा सदैव मन्तव्य रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मैंने कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि हम जब ऋषि-मुनियों के क्षेत्रों में अथवा उनकी वार्त्ताओं में परिणित होते हैं तो हमारा जीवन प्रबल होने लगता हैं। हम अपने में यह स्वीकार करते हैं कि यह उनकी कितनी महान देन है, उनके महान उद्गीतों में, हमें मानो देखो, कितना उपदेश प्राप्त होता है जिससे हम, परमपिता परमात्मा, जो महान देव है, उस राजा के राष्ट्र में हम प्रवेश हो जाएं, विष्णु बन करके हम अपना कल्याण कर सकें और जो पालन करने वाला देव है, जो हमारे अंग-संग रहता है, उसे हम जान सकें। यह हमारा मन्तव्य रहा है। विचार विनिमय क्या, हो रहा है आज का विचार क्या कह रहा है बेटा! छः के, छः जिज्ञासु अपना-अपना मन्तव्य दे रहे हैं, अपने-अपने विचार और इन्द्रियों का पालन कर रहे हैं।

बेटा! आज का विचार यह, कि हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उस महान, जो जनजीवन को उद्गीत दे रहा है, मानो प्रबल बना रहा है, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए, अपने में निश्चय कर लें बेटा! जो साधक जन होते हैं साधक वही होता है जो बेटा देखो, परमपिता परमात्मा के अनुशासन से अपने विचारों को गूंथ देता है, अपने विचारों की माला बना देता है। जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में मानो देखो, स्वाहाः की माला बना देता है, प्रत्येक वेदमन्त्र के साथ में जो ज्ञान और विज्ञान है, उन तरंगों के साथ में स्वाहाः कह करके परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में प्रवेश करना चाहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का विचार क्या? आज के विचार उच्चारण करने का अभिप्राय ये, कि जब तक मानव यह स्वीकार नहीं करेगा, कि मैं परमात्मा के राष्ट्र में हूँ, परमात्मा राष्ट्रपिता है, मानो सर्वत्र प्राणी उसकी प्रजा हैं, जब तक यह स्वीकार नहीं करेगा, तब तक कोई भी साधक संसार में अपनी साधना को पूर्ण नहीं कर सकता। जब तक प्राण और मन का मनका बन करके, ब्रह्मसूत्र में श्वास के साथ में मनका नहीं पिरोया जाता, तब तक मानव की वाणी का, विचारो का शुद्धिकरण नहीं होगा और जब तक शुद्धिकरण नहीं होगा तो बेटा! ब्रह्म को कैसे प्राप्त करेंगे।

आज का विचार हमारा यह कह रहा है कि हम स्वीकार करें कि परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता है और वह मानो देखो, जन-जन में विद्यमान रहता है, वह कण-कण में विद्यमान है, वह जल-आपों की तरंगों में, वायु तरंगों में, एक-एक शब्द के रूप में अनुशासन कर रहा है और वह अनुशासनवेत्ता है। उसका अनुशासन बड़ा विशाल है, बड़ा अनुपम है, बड़ा गम्भीर कहलाता है। इसके ऊपर हम प्रायः विचार विनिमय करते रहते हैं। आज का विचार यह कि हम

परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। इन जिज्ञासुओं को विचार करते-करते एक वर्ष बीत जायेगा तो यह विचार कल प्रकट करेंगे। परन्तु देखो, पिप्लाद मुनि से जो चर्चा हुई तो वह कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त, अब समाप्त होने जा रहा है शेष चर्चा कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। लाक्षागृह, बरनावा ०३-०३-१९८७

४ ऋत और सत् 04 03 1987

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान है। मानो उसकी महानता इस संसार रूपी राष्ट्रवाद की प्रतिभा में निहित रहती है। क्योंकि हमारे, यहाँ एक-एक वेदमन्त्र में राष्ट्रवाद की चर्चाएं होती रहती है और भिन्न-भिन्न प्रकार के राष्ट्रों में अथवा राष्ट्रों की जो भिन्न-भिन्न प्रणाली हैं अथवा मानव के मस्तिष्कों की जो उपज है, वह वेद के वांग्मय में निहित रहती है। तो इसीलिए वे परमपिता परमात्मा राष्ट्रपिता हैं मानव इस नाना प्रकार के मार्ग से होता हुआ, जब वह परमपिता परमात्मा के सर्वमार्ग में प्रवेश करता है अथवा उसमें ओतप्रोत हो जाता है, तो उसे यह अनुभूति होती है कि मैं ऐसे राष्ट्रपिता के राष्ट्र में आ गया हूँ, जैसे माता का बालक, क्षुधा से पीड़ित हो करके माता की लोरियों में प्रवेश करता है तो उसकी नाना रूप में जो क्षुधा जागरूक हो रही थी वह शान्त हो जाती है।

तो इसी प्रकार जब हम परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान हो जाते हैं, तो परमात्मा का जो राष्ट्र है, एक अनूठा है, मानो उसमें जाने मे पश्चात, मानव इस नाना प्रकार के बन्धनों को जो जगत है, इससे वह मानव उपराम हो जाता है, और वह सर्वत्र उसी में अपने को प्रवेश कर देता है। अथवा समर्पित कर देता है तो मेरे प्यारे! हम यह विचारने लगे, कि जब प्रत्येक मानव ये विचारने लगेगा कि यह परमात्मा का राष्ट्र है और सब हम उस परमात्मा के राष्ट्र में उसके अनुशासन में अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए। परन्तु जब वह उसके जीवन में और परमात्मा की जो जीवन सत्ता है, उसके मध्य से मानो अन्तर्द्वन्द्व प्रतिपादित रहे, मानो उनका बहिष्कार कर देता है तो बेटा! सजातीय विचार रह जाते हैं, सजातीय क्रियाकलाप रह जाता है और जिन सजातीय क्रियाकलापों में प्रवेश हो करके, मानव अपने में ऊंची-ऊंची कल्पनाएं, ऊर्ध्वा में कल्पना करने लगता हैं, तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं तुम्हे विशेष विवेचना तो देने नहीं आया हूं, आज मैं तुम्हे ये विचार देने के लिए आया हूं कि मानव को, अपने को परमात्मा के राष्ट्र में स्वीकार करना चाहिए। जिस प्रकार अबोध बाल्य, माता की लोरियों को, उसकी आभा को अपना राष्ट्र स्वीकार करता है, इसी प्रकार ज्ञान और विज्ञान के मार्ग से गमन करता हुआ, वे मुनिवरों! देखो, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार कर लेना चाहिए।

तो आज में पुत्रो! विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार यह दे रहा हूं मैं तुम्हें वहीं ले जा रहा हूँ मानो जहाँ छः जिज्ञासुओ को ऋषि पिप्पलाद ने यह आज्ञा दी कि तुम जाओ और

ब्रह्मचर्य व्रत से रहो और एक वर्ष तक गऊओं का पालन करो। तो मानो अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए उनका एक वर्ष व्यतीत हो गया। बेटा! एक वर्ष पूर्व के अन्त माह में एक समय बेटा! छः जिज्ञासु विद्यमान हो गए और यह मनन-चिन्तन करने लगे, कि आचार्य ने हससे पूर्व एक शब्द कहा था, मानो उसका एक वर्ष होने को है और उन्होंने यह कहा कि ब्रह्मचारियों! तुम व्रत से रहो और मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूँ। परन्तु द्वितीय विचारों में उन्होंने यह कहा, कि मैं जानता होऊंगा तो अवश्य उत्तर दूंगा। मुनिवरों! ऋषि-मुनियों की जो बुद्धि है, वह बड़ी तपोमयी कहलाती है और वह मेधा में, जब प्रवेश कर जाते हैं, तो वह प्रत्येक वाक् को और प्रत्येक शब्द को, वह बड़ा चिन्तनमयी बना करके, मानो अपनी बुद्धि और मेधा में प्रवेश हो करके, उसके स्वरूप को अपने अन्तर्हृदय में, एक विषय बना लेते हैं। तो बेटा! उन्होंने पिप्पलाद जी के इस वाक् को ले करके, अपना एक चिन्तन का विषय बनाया।

उन्होंने कहा कि ये उसमें ब्रह्मचारी कबन्धि ने यह कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है कि ऋषि ने यह कहा है कि मैं जानता होऊंगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा। तो मानो उन्होंने यह क्यों कहा? क्योंकि ऋषि-मुनियों में अभिमान नहीं होता, और वह जो भी शब्द उद्गीत रूप में गाते हैं, मानो वह उपराम हो करके गाते हैं और उसमें निष्काम कर्म होता है, हमारे यहां निष्काम कर्म की बड़ी विवेचना मानी गयी है। बेटा! आदि ऋषियों ने निष्कर्म अपने को बनाया और राष्ट्र को भी यह उपदेश दिया और परमात्मा के राष्ट्र में रहने के लिए परमात्मा का उद्गीत गाया और यह कहा कि परमपिता परमात्मा किसे प्राप्त होते हैं? परमात्मा उसे प्राप्त होते हैं जो निष्कर्मवादी होता है, जो निष्कर्म करने वाला होता है। निष्कर्म कौन करता है? निष्कर्म वह महान पुरूष करते हैं जिनके हृदयों में एक विशाल, ज्ञान रूपी अग्नि जागरूक होती है और वह दूसरों के प्रति जागरूक रह करके, अपने को जगाते रहते हैं। दूसरों को जागरूक बनाना और अपने में स्वतः सतर्क रहना है, अपने में मानो जगाना और अपने में जागना है, अपने में यागाम ब्रह्मः वो जगाना है। दुसरे को जागरूक करना, अपने को जगाना है, जो अपने को नहीं जगाता है, वह दूसरों को भी नहीं जगा सकता, मेरे प्यारे! वह दूसरों को जागरूक नहीं बना सकता। इसीलिए प्रत्येक मानव का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने को जागरूक बनाए, दूसरों को जागरूक बनाने से पूर्व अपने में जागरूक बने।

तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों का एक बड़ा विशाल विचार रहा है। उन्होंने कहा कि आचार्य ने हमें जागरूक बनाया है। इसलिए कहा है कि तुम उस समय गऊओं का पालन करने लगे, इस प्रकार का पालन करो, जिससे तुम्हे जिससे अभिमान न आ जाए। मानो देखो, मैं जानता हूँ और मैं जानता होऊंगा, तो उत्तर दूंगा, ये दो वाक् हो गए। मानो देखो, जैसे उनका

तप और अध्ययन था, उसके अनुसार तो आचार्य जानते थे परन्तु वे यह उच्चारण करना कि मैं जानता होऊंगा तो उत्तर दूंगा, उसका अभिप्राय यह है कि वह उस वाक् को इसलिए उद्गीत रूपों में गाते रहते थे, कि मैं मानो देखो, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में हूँ, मैं उसकी प्रजा हूँ, और वह मेरा स्वामी है, मेरी रक्षा करने वाला है, मानो हो सकता है, कि मैं तुम्हारें प्रश्नों का उत्तर न दे सकूं। मेरी बुद्धि भ्रमित हो जाए, मैं सुषुप्ति में चला जाऊं, जागरूक न रह सकूं, तो इसलिए मानो देखो, मैं जानता होऊंगा, तो तुम्हारें प्रश्नों का उत्तर दे सकूंगा।

मेरे प्यारे! इसका अभिप्राय यह हुआ, कि मानव को अभिमान नहीं करना चाहिए। ज्ञान हो, ज्ञान के साथ में विवेक हो, विवेक के साथ में तप हो। तप, ज्ञान और विवेक यह तीनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं। उन्होंने यह वाक् इसलिए कहा कि ऋषि और तपस्वी जो होते हैं वे निरभिमानी होते हैं, वे परमात्मा के विषयों को, ऐसे अपने में ओझल कर देते हैं, जैसे मानो देखो, मेघों में विद्युत अपना प्रकाश देती है, मेघों को तपाती है परन्तु मेघों में अपने को ओझल कर लेती है। इसी प्रकार देखो, मानव परमात्मा के विषय में अपने को ओझल कर लेते हैं। तो विचार-विनिमय क्या? पुत्रों! एक वर्ष तक मौन विचार चलता रहा और ये ब्रह्मचारी कबन्धि ने कहा कि वास्तव में आचार्य सुयोग्य हैं, यह पूज्य हैं, मानो निरभिमानी हैं।

मेरे प्यारे! देखो, जब एक वर्ष समाप्त होने वाला था, सब जिज्ञासुओं ने अपनी यह विचारधारा बनायी कि कैसे वे हमें जागरूक बनाएगें भी तो गऊओं का पालन करते हुए, गऊओं को अपने में धारयामि बनाते हुए, उनका दुग्धाहार करते हुए, हमारे यहां बेटा! दो प्रकार का दुग्ध आहार होता है एक तो भौतिक होता है, जिससे शरीर की पालना-पोषणा होती है, मानो वह तो पशु माना गया है। उस गौ नाम के पशु की रक्षा करना है। मानो देखो, एक है जो इन्द्रियों का जो रक्षक है, इन्द्रियों की रक्षा करनी है। रक्षा का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक इन्द्रिय का जो विषय है, मानो देखो, उसका जितना भी ज्ञान है, विज्ञान है, उस ज्ञान और विज्ञान को जान करके, हमें क्रियाशील बनाना है और उनका एक साकल्य बनाना है, एक साकल्य बना करके और मानो देखो, यज्ञशाला में उसकी आहुति देनी है, मेरे प्यारे! देखो, स्वाहाः कहना है। जैसे यज्ञशाला में यज्ञमान, नाना प्रकार के साकल्य को एकत्रित करता है, श्रद्धामयी घृत को ले करके, मानो देखो, वह अपने अन्तर्हृदय से उसको स्वाहाः उच्चारण करता है तो उस यज्ञमान की माला बन करके रहती है। मेरे प्यारे! जैसे मानव चक्षु प्रकाश के आश्रित रहता है, मेरे प्यारे! देखो, रसना स्वादों के रसों के आश्रित रहती है, त्वचा प्रेम और स्पर्श की आभा बन करके रहती है, इसी प्रकार, प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है, उन सबका समावेश हृदय में माना गया है। हृदय में यह केन्द्रित हो जाते हैं और सबका साकल्य बन करके हृदय ही

उनका कोष कहलाता है। मानो हृदय ही, उनमें समाहित हो जाता है, और हृदय में वह साकल्य समाहित हो करके, मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान इस प्रकार अपने हृदय को बना करके आहुति देता है स्वाहाः रूपी शब्द पर, साकल्य की तरंगें बन करके, अग्नि को अपना स्वाहा बना करके, द्यौ लोक को प्राप्त हो जाते हैं और द्यौ लोक से जो यज्ञमान चाहता है, हम देवताओं से वही प्राप्त कर लेता है। मेरे प्यारे! वही उन्हीं को प्राप्त होता है।

राम द्वारा वाजपेयी याग

हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों में, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। हम तुम्हें ले जाना नहीं चाहते हैं, जब हम साहित्य में जाते हैं, तो राष्ट्र का राजा, जब अपने यहाँ याग करता है तो उसमें महानता की एक प्रतीति होने लगती है। मुझे स्मरण आता रहता है, भगवान राम ने त्रेता के काल की यह वार्त्ता है। भगवान राम ने जब लंका को विजय करके अयोध्या में प्रवेश किया तो उसके पश्चात बारह वर्ष का उन्होंने तप किया और तप करने के पश्चात राष्ट्रपिता बने, जब राष्ट्रवेत्ता बने तो कुछ समय तक वह राष्ट्र का पालन करते रहे परन्तु कुछ समय के पश्चात उनके राष्ट्र में एक अकाल पड़ गया जल प्लावन आ गया और वह भयंकर अकाल था। प्रजा मानो देखो, वह कैसा पर्ण अकाल पडा सब ओर जल प्लावन आ गया। तो मुनिवरो! राम ने यह विचारा, कि अब मैं क्या करूं? मानो देखो, माता अरून्धती और वशिष्ठ दोनों विद्यालय में ब्रह्मचारियों को अध्ययन कराते रहते थे, मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ाते रहते। राम और मुनिवरों! देखो, उनकी देवी सीता, दोनों ने भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो, आचार्यकुल में प्रवेश किया। माता अरून्धती और वशिष्ठ ने उनका आदर किया उन्होंने कहो भगवन! तो राम ने कहा कि-प्रभु! आपको प्रतीत नहीं है कि हमारे राष्ट्र में अकाल हो रहा है। उन्होंने कहा कि बहुत प्रिय राम! तुम क्या चाहते हो? राम ने कहा यह अकाल नहीं रहना चाहिए, यह पर्ण अकाल समाप्त होना चाहिए। उन्हांने कहा बहुत प्रिय।

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये वार्त्ता प्रकट करते हुए यह कहा था सम्भवं ब्रह्मा ऋतं देवा मानो देखो, ये कहा कि तुम एक याग करो। मानो उन्होंने अग्निष्टोम याग को त्याग करके वाजपेयी याग किया और ऋषि ने पन्द्रह दिवस तक उनके हृदय को हृदयग्राही बनाया। राम और सीता, दोनों ने अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके पन्द्रह दिवस तक उन्होंने विद्या का अध्ययन किया, और उस अन्न को पान किया, जिस अन्न पर किसी का अधिकार नहीं था। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, कि राम जैसे महापुरूष इस पृथ्वी के गर्भ ने नाना प्रकार के अन्न को उत्पन्न करके पान करते थे। एक गऊ थी जो महात्मा वशिष्ठ से उन्हें प्राप्त हुई। वह कामधेनु गऊ का, दुग्ध आहार करते थे और उस अन्न को पान करते, जो

स्वयं मानो पुरूषार्थ करके उस अन्न का पान करना मेरे प्यारे! उसके **पश्चात उन्होंने वाजपेयी याग किया। वाजपेयी याग करने के पश्चात मेरे प्यारे! देखो, मेघ समाप्त हो गए।** वायुमण्डल में क्या, उनका विचार, उनका क्रियाकलाप स्वाहाः के साथ, द्यौ लोक में चला गया।

मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के शब्दों की मैंने तुम्हें विवेचना की है, एक शब्द भूः, भुवः, स्वः मानो भूः से मध्य लोक को ऊंचा बनाना, भुवः में रहना, निचले पृथ्वी तल को ऊंचा बनाना और मुनिवरों! देखो, स्वः लोक में जाना जहाँ यह तीनों समाहित हो जाते हैं। तो विचार क्या? यह जो स्वः है, यह द्यौ मण्डल कहलाता है। द्यौ उसे कहते हैं मुनिवरों! देखो, जहाँ सर्वस्व प्रभु का भण्डार विद्यमान हो जाता है, अथवा स्थिर हो जाता है। वही तरंगों का भण्डार, अतिवृष्टि, अनावृष्टि के रूप में, सूर्य की किरण के साथ में, पृथ्वी की आभा, गुरुत्व को ले करके मानो देखो, इसे जलमग्न करता रहता है या उष्णता में परिणित करता रहता है। तो परिणाम यह कि वह पण अकाल समाप्त हो गया। राम का अन्तर्हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। बेटा! हमारे विचारों का अभिप्रायः यह है विचारों का तारतम्य यह है मानव का विचार यह है कि यज्ञमान जब यज्ञशाला में विद्यमान हो तो उसे अपने विचार कैसे बनाने है। यदि वह चाहता है कि अग्निष्टोम याग के द्वारा मैं, पण अकाल को समाप्त करूं और वाजपेयी याग और उदगाता का हृदय से अग्निष्टोम के द्वारा मानो देखो, वृष्टि का संचार हो जाएं तो प्रायः वह जो हृदय है, यज्ञमान का हृदय, उदगाता का हृदय, अध्वर्यु और ब्रह्मा के हृदय से मिलान करता है उदगाता जब वेद मन्त्रों की ध्वनि को गाता है तो वह द्यौ लोक में छा जाती है। वही द्यौ लोक तो इस संसार का मानो देखो, केन्द्र माना गया है। जैसे मानव के कण्ठ का भाग, शरीर का केन्द्र माना गया है, इसी प्रकार वह भी केन्द्र माना गया है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, भगवान राम ने इसी प्रकार का याग किया और यागों का कर्मकाण्ड बड़ा विचित्र है।

आज मैं विशेषता में नहीं, बेटा! बहुत दूरी चला गया हूं, मैं साहित्य में जाना नही चाहता हूं। हम उत्कृष्ट रूपों से ऋषि-मुनियों की वार्ता प्रगट कर रहे थें और विचार यह चल रहा था मुनिवरों! देखो, कि छः जिज्ञासु कल्पना कर रहे थे, वह उच्चारण कर रहे थे कि हृदय अगम्य है और मानव का हृदय, यज्ञमान का हृदय का परमात्मा के हृदय से जब मिलान होता है तो वह अपने प्रभु से जो वह अपने हृदय से चाहता है, वही उसे प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! वह इतना गम्भीर, इतना उद्गत और अद्वितीय विचारों वाला बन जाता है कि परमपिता परमात्मा की अमूल्यता को प्राप्त कर लेता है। तो मेरे पुत्रो! विचार देता हुआ मैं इतनी दूर चला आया हूँ गम्भीर विचारों से, मैं साहित्यों में चला गया हूं विचार यह चल रहा था कि ऋषि-मुनि अपने में अध्ययन करते हुए, वह एक समय बेटा! मध्यरात्रि के अन्तिम पहर में, महर्षि पिप्पलाद मुनि

महाराज के कक्ष में पहुंचे। महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज जागरूक थे और अपने प्रभु से वन्दना कर रहे थे, और यह उच्चारण कर रहे थे कि हे प्रभु! तू तो वेदज्ञ है, स्वतः प्रकाश है, स्वतः मानो याग है, आध्यात्मिक हो, चाहे भौतिक हो। मानो वह इस प्रकार वह अपने प्रभु से एकान्त स्थलि में, शान्त वायुमण्डल में, प्रभु के हृदय से अपने हृदय का मिलान कर रहे थे। मानो समन्वय हो करके, मानो संसार की आभा को त्याग करके मानो देखो, शून्य बिन्दु की तरंगों में अपने को शान्त करना चाह रहे थे। मेरे प्यारे! देखो, जब छः जिज्ञासुओं ने इस प्रकार ऋषि के कौतुक को दृष्टिपात किया तो बेटा! वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि ऋषि बड़े विचित्र हैं, यह सदैव चिन्तन में लगे रहते हैं और प्रभु के सान्निध्य में मानो अपने को समर्पित कर रहे हैं। इसी प्रकार हमने भी अपने को समर्पित कर दिया है।

मेरे प्यारे! देखो, इसी विचार में एक वर्ष हो गया। जब अन्तिम दिवस आया, तो छः जिज्ञासु, उस गौ-शाला को, उस गौ-स्थलि को त्याग करके मुनिवरों! देखो, ऋषि पिप्पलाद के द्वार पर पहुंचे। पिप्पलाद मुनि ने कहा, आओ, ब्रह्मचारी विराजो। वह ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हो गए। सबसे प्रथम ब्रह्मचारी कबन्धि ने यह कहा कि महाराज! हम आपसे कुछ प्रश्न करना चाहते हैं? पिप्पलाद मुनि ने कहा, कीजिए भगवन! ब्रह्मचारी कबन्धि ने कहा कि-प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, पिप्लाद मुनि ने कहा कीजिए भगवन्! ब्रह्मचारी कवन्धी ने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि ऋत् और सत् किसे कहा जाता है? ऋषि ने उसका उत्तर दिया कि प्रकृति को ऋत् कहते हैं और ब्रह्म को सत् कहते हैं। सत् का ऋत् में पिरोना और ऋत् का सत् में पिरोने का नाम, मानो यह जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यदि ऋत् और सत् नहीं होंगे, तो प्रकृति नहीं होगी, ब्रह्म की ब्रह्म होगा, तो मानो देखो, यह रचना दृष्टिपात नहीं आएगी। हम भी तो ऋत् और सत् में पिरोए हुए हैं। मानो देखो, हम जैसे शिशु हम भी तो ऋत और सत् में पिरोये हुए हैं माता के गर्भ में ऋत् और सत् का दोनों का समन्वय होता है। तभी तो माता अपने महान पुत्र को जन्म देती है। मानो देखो, उन्होंने अपना यह एक विचार दिया।

ब्रह्मचारी कबन्धि मौन होने लगे, तो मौन होते-होते कबन्धि ने कहा कि-प्रभु! यह जो हमने ऋत्यं ब्रह्मा यह ऋत् और सत्यमयी जगत है? उन्होंने कहा सर्वत्र जगत ऋत् और सत् में है। मानव हृदय से सकंल्प करता है और हृदय में ही वह सकंल्प समाहित हो करके, वह वाह्य रूप में आता है। और बाह्य रूप में उस संकल्प का साकार रूप बनता है और साकार रूप बन करके मानो देखो, वह उसकी क्रिया में आता है। तो आज हमें विचारना है क्या हम ऋत् और सत् को जान करके अपने विचारों को क्रिया में लाना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने

कहा क्या क्रिया तो उसी समय हो गयी जब संकल्प जागरूक हो गया है और संकल्प का बाह्य रूप हो जाना यह हृदय के आन्तरिक उद्गार होते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि यह संसार की भी मानवीय सृष्टि का वर्णन है और यह प्रभु की सृष्टि का वर्णन है और ऋत् और सत् में यह प्रभु की सृष्टि का वर्णन है, मानो ब्रह्म का वर्णन है। यह मानवीय सृष्टि का जितना संकल्प है, इनका समन्वय बेटा! ऋत् और सत् से होता है। मेरे प्यारे! देखो, पिप्पलाद मुनि ने यह उत्तर दिया तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए।

द्वितीय सुनीति ब्रह्मचारी ने कहा कि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, कि मानव किस के आश्रित रहता है? मानव किस के आधार पर मानो देखो, अपने जीवन को, व्यतीत करता है? तो ऋषि ने कहा कि मानव अपने जीवन का जो मानव अपने जीवन को निर्धारित कर रहा है, अपने को स्वीकार कर रहा है। जाने-अनजाने में मानो वह प्राण है यह प्राण ही सखा है जो संसार को निगलता रहता है। बेटा! मानव नाना प्रकार का आहार करता है। आहार के पश्चात प्राण ही व्यवहार करता हैं क्योंकि उसमें क्रिया है, क्रिया के बिना मानो देखो, व्यवहार अथवा वह अपने में गतिशील नहीं होता तो इसीलिए वही प्राणं ब्रह्मे मेरे प्यारे वही प्राण संसार की प्रत्येक वस्तु का निगल रहा है, वही मानो उसे सूक्ष्म बनाता है, मुनिवरों! देखो, वही पृथ्वी पर आ करके, पृथ्वी से समन्वय करके दूसरे रूप में परमाणु विद्यमान हो जाते हैं। यह प्राण ही तो सखा है जो गाता रहता है, उद्गीत गाता है। यह प्राण सखा है, जो आहार कर रहा है। आहारों से गतियां चल रही हैं, परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में गमन कर रहे हैं। शब्दों की प्रतिभा में ध्वनि मानो देखो, ध्वनित हो करके द्यौ लोक में प्रवेश कर रही है, भू-लोक में प्रवेश कर रही है। मानो देखो, यह प्राण सखा श्वास के साथ में परमाणुओं को ले करके वही क्षुधा के मूल में विद्यमान है। पृथ्वी के गर्भ में वही मानो देखो, आपो प्राण शक्ति देता है, नाना प्रकार की वनस्पतियां उपज जाती हैं और वही वनस्पति मानव के किसी रूग्ण में, आहार के रूप में विद्यमान रहती है।

ब्रह्म का हृदय

मेरे प्यारे! कैसा अनूठा जगत है? आज मैं इसके वर्णन करने में असमर्थ हो जाता हूँ, ऐसा यह विचित्र जगत है। बेटा! एक-एक वस्तु पर विचार विनिमय करो, तो तुम्हारी वाणी मौन हो जाएगी, वाणी मानो देखो, क्रियाकलाप त्याग देगी। तो इसलिए विचारने से प्रतीत होता है कि मुनिवरों! देखो, यह प्राणसत्ता कहीं वायु के साथ रहती है, कहीं आपो-जल के साथ रहती है। कहीं यही प्राणसत्ता अग्नि के साथ रहती है, कहीं यही प्राणसत्ता अन्तरिक्ष के गर्भ में ओतप्रोत रहती है। मेरे प्यारे! जितनी भी क्रियाएं हैं, यह सब ऋत् और सत् से गुथी हुई हैं। जैसे मेरे

प्यारे! मानव के हृदय में जितना संसार का भौतिक या आध्यात्मिक विज्ञान हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान ये मानव के हृदय से गुथा हुआ है और मानव का हृदय ऋत् और सत् से गुथा हुआ है। ऋत् और सत् का ब्रह्मव्रतो ज्ञान है, वह ब्रह्म का हृदय माना गया है। बेटा! मैं कहाँ चला गया हूँ, यह विचार बड़े विचित्र हैं। दर्शनों में या वेदमन्त्रों के वांग्मय में जब हम जाते हैं तो वह अगाध समुद्र कहलाता है, वह ब्रह्म का समुद्र है। जो यह कहता है कि मैं ब्रह्म हूँ, मानो देखो वह ब्रह्म नहीं है, ब्रह्म तो एक अनूठा है, अरे, मानव तो मानव ही रहेगा।

परन्तु देखो, महर्षियों ने तो यह कहा है बेटा! एक समय मैंने च्यवन ऋषि के विचारों को ग्रहण किया था। जब च्यवन ऋषि की २००० वर्ष की आयु हो गयी, वह ब्रह्म के ऊपर चिन्तन करते ही रहते थे। एक समय वह यह उच्चारण करने लगे कि हे प्रभु! यदि मैं ऋत् और सत् के सम्बन्ध में जानता रहूँ तो मेरी सहस्त्रों वर्ष की आयु होनी चाहिए और इसके पश्चात भी मैं निश्चय नहीं कर सकता कि मैं आपके सम्बन्ध में सर्वत्रता को जान सकता हूं या नहीं। मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों का जो निरभिमानी, जो निर्भय विचार है, वह बड़ा विचित्र रहा है, वह बड़ा अनूठा रहा है। मानव के ज्ञान और विज्ञान में एक तीव्रता होनी चाहिए, महानता का दर्शन होना चाहिए, जिससे वह ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ सकेगा।

मुनिवरों! देखो, महर्षि पिप्पलाद मुनि ने ये उत्तर दिया कि यह प्राण ही तो आहार करता है। प्राणसत्ता ही आपो के रूप में मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार के खाद्य और खनिजों का निर्माण कर देती है। मानो देखो, वही निर्माण मानव किन्हीं न किन्हीं रूपों में भोगता रहता है, विचारता रहता है, सूक्ष्म बनाता रहता है। वह प्राण रूपी वस्तुओं को का वहीं ले करके उस ऋत् में उसको पिरो देता है। मेरे प्यारे देखो, जैसे स्वर्ण है, स्वर्ण का परमाणु बन गया है, परमाणु बन करके नाना रूपों में परिणित हो जाता है और फिर उसी परमाणु के रूप में प्रवेश हो जाता हैं। कोई वस्तु न कहीं जाती है और न कहीं से आती है, मानो यह एक ऐसा क्रियाकलाप बना हुआ है कि अपनी-अपनी क्रियाओं में अणु, परमाणु रत्त रह करके अपने रूपों में प्रवेश कर जाते हैं। अपने रूप में बन करके बेटा! वह आध्यात्मिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान के रूप में प्रवेश करके, बेटा! वह योगी बन करके, वह योग में अपने में प्रयोग कर लेता है। राजा के यहाँ वैज्ञानिक, उसी वस्तु में विज्ञान में रत्त हो जाते हैं। उन्हीं का यन्त्र बना करके, उन्हीं तरंगों का, नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में गमन करने लगते हैं। तो मानो देखो, यह प्राण, अपने में मानो अनूठा है, यही आहार करता है, यही त्यागता है, यही मानव को अकृत बना देता है। तो विचार पिप्पलाद यह कह करके मौन हो गए द्वितीय उन्होंने कहा कि महाराज यह सृष्टि

का चक्र बड़ा विचित्र है।

मेरे प्यारे! उन्होंने दस प्राणो की विवेचना की। मेरे पुत्रों! एक-एक प्राण की विवेचना, में विशेषता में तो जाना नहीं चाहूंगा। आज का विचार हमें क्या कह रहा है आज का वाक् हमें क्या प्रेरणा दे रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना और उसके ज्ञान को जानते हुए, अपने में महान बनते चले जाएं। मेरे पुत्रो! ऋषि मुनि सब मौन हो गए, तो पिप्पलाद ने उन्हें यह उपदेश दिया, कि **ऋत् में मन और सत् में प्राण है।** यह उन्होंने अपने वाक्यों में सिद्ध किया इसीलिए मुनिवरों! सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान जितना भी साधक वर्ग हुआ है, जितना भी साधक हुआ है वह सब अपने जीवन का तारतम्य बनाता है ईश्वर का, परमात्मा के मिलन करने का एक ही रूप बनाता है क्योंकि उन दोनों का विभाजन हो गया है। ऋत् का विभाजन हो गया है, सत् का विभाजन हो गया है। उस विभक्त क्रिया को एक सूत्र में लाना चाहता है साधक। वह कैसे लाता है? वह प्राण को ऋत् में पिरो देता है और ऋत् को सत् में पिरो करके उन दोनों का समन्वय हो करके एक पिण्ड बन जाता है, एक धारा बन जाती है, मानो एक तारतम्य बन जाता है, एक माला बन जाती है और उस माला को धारण करके बेटा! साधक उस ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

ये है बेटा आज का हमारा वाक् बेटा! आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः क्या आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूं ये तो विचारों का मुनिवरों! देखो, वन है, इस वन को लेता हुआ बेटा! मैं तुम्हे गम्भीरता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूं। केवल विचार यह कि हम, परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार से पार हो जायें बेटा! वेद का ऋषि, अपना उदगार देता हुआ, अपने विचार व्यक्त करता हुआ इस संसार सागर से पार होने की कल्पना करता है। महानता में जाने की कल्पना करता है और यह चाहता है कि मेरे अन्तर्हृदय में शान्ति आ जाए, मैं मृत्युंजय बन जाऊं, मानो मैं अन्धकार में न रहूँ, प्रकाश में चला जाऊं। **तो मानव को प्रभु के राष्ट्र में जाने के लिए सदेव तत्पर रहना चाहिए।** आज का विचार, अब समाप्त होने जा रहा है, आज के विचारों का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार से पार हो जाएं। कल मुझे समय मिलेगा तो मेरे प्यारे महानन्द जी, अपने विचारों को व्यक्त करने में तत्पर रहते हैं कई समय जिनकी धीमी-धीमी प्रेरणा आती रहती है, कल उनका विचार व्यक्त किया जा सकेगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाः लाक्षागृह, बरनावा ०४-०३-१९८७

५ कर्तव्य का पालन 05 03 1987

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और इस संसार रूपी राष्ट्र के वह स्वामीतव हैं, अथवा अनुशासन, निर्माणवेत्ता हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की प्रायः महिमा का गुणगान गाते रहते हैं क्योंकि हमें अपना जीवन अनुशासन में लाना चाहते हैं प्रत्येक मानव की यह कल्पना रहती हैं, अपने अन्तर्हृदय से विचारता रहता है, क्या मैं अपने में अनुशासनवादी बनूं और मेरा अनुशासन कैसे ऊँचा बनें, जबकि हम परमपिता परमात्मा, जो राष्ट्रपिता है मानो वह अपने चक्र को अनुशासन में निहित करता रहता हैं।

अनुशासन के लिए याग

तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते रहते हैं कि-प्रभु! हमारा जीवन अनुशासित हो जाएं और जैसे आप राष्ट्रपिता हैं, राष्ट्रवेत्ता है और तेरे राष्ट्र में जब यह मानव प्रवेश कर जाता हैं तो मानो वह निर्भय और निरवय हो जाता हैं तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहते हैं और यह उन वाक्यों के वेदमन्त्रों की आभा में मानो हम सदैव रत्त रहते हैं और विचारते रहते हैं कि हमारा जीवन अनुशासित हो जाएं, हमारे यहाँ, कई समय हो गये हैं हम बेटा! परमपिता परमात्मा को राष्ट्रपिता घोषित करते हुए मानो देखो, उसका जो नियमबद्ध जो संसार हैं ये अपने में अपनी वृत्तियों को प्राप्त होता रहता हैं मानो जिस भी काल में यह नाना प्रकार का जो रूप हमें दृष्टिपात आ रहा हैं, मानो उस ब्रह्म की आभा में हम सदैव रत्त रहते हैं, आज का हमारा वेदमन्त्र, ये उद्गीत गा रहा था ये उच्चारण कर रहा था क्या यज्ञमान जैसे ब्रह्मा यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपने यज्ञमान, होता जनों को मानो अनुशासन में परिणत करना चाहता है और वह अपने में भी अनुशासित रहना चाहता हैं जिससे हम कर्मकाण्ड की और परमपिता परमात्मा जो राष्ट्र पिता है हम उसकी आज्ञा का पालन कर सकें और मानो देखो, हम अपने में देखो, यज्ञ रूपी जो एक अनुशासन की प्रवृत्तियां है वह मुनिवरों! एक अनुशासित हो करके, उसका रथ अथवा उसमें जो क्रियाकलाप है, वह अन्तरिक्ष में अनुशासित होने वाले परमाणुओं को वह गति कर सके, और जो विजातीय परमाणु हैं विजातीय पदार्थ हैं मानो देखो, उनका विभाजन हो जाएं और वह विभक्तता में प्रतिष्ठित हो करके वह अपनेपन की आभा में रत्त हो जाएं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह है कि यज्ञमान अपने को अनुशासन में अपनी यज्ञमान को अनुशासन में लाना चाहता हैं अथवा यज्ञमान भी अनुशासन में इसीलिए क्योंकि उसका जो अन्तर्हृदय हैं अन्तर्हृदय से उसकी जो तरंगें है वह साकल्य और अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके यह अन्तरिक्ष से मानो ओत-प्रोत हो जाएं और वह द्यौ लोक को प्राप्त हो करके मानो वह समय आ जाएं कि यज्ञमान से वह तरंगें तंरगित होती रहती हैं। तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र बड़ी ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ रहा हैं आज हम विशेष चर्चा नही देंगें केवल विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और हम ऋत और सत का अपने में चयन करते हुए और सृष्टि का जो चक्र जो यह चल रहा है यह विचित्रता में मानो यह उद्धृत होता रहे और अपने में अपनेपन की आभा में सदैव रत्त रहें ऐसा हमारा मन्तव्य है अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उद्गीत रूप में उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यमाः सर्वं ब्रह्मा वायु यदितं नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल और मेरे भद्र समाज, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो यह नाना प्रकार का उद्गीत गाते रहते हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी, परमात्मा को राष्ट्र का स्वामी और यज्ञमान इत्यादियों की विवेचना कर रहे थें। मैं तो कोई इनके समीप मानो व्याख्याता नही हूँ और इनके समीप मैं विद्यमान हो करके मैं अपने में स्वीकार करता रहता हूँ क्या मैं पूज्यपाद गुरुदेव आपके चरणों की मुझे वन्दना मानो आपकी शरण ही मुझे प्राप्त होती रहती हैं मैं वन्दनीय बना रहूँ।

लाक्षा गृह की पुण्य भूमि

आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय हो गये है, वह राष्ट्र की चर्चा और परमपति परमात्मा को और मानवीय दर्शन और देखो, प्रकृति विज्ञान है, इसके बडे मौलिक रूप की चर्चा कर रहे थे मानो जिस स्थली पर हमारी यह आकाशवाणी जा रही है, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है, जब मानो इस स्थली पर वेदज्ञ ध्वनि और भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों का मैं अपने में अवलोकन करता रहता हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करता रहता हूँ और परिचय देता रहता हूँ क्या यह कैसी यह मानो ऐसी स्थली जिस स्थली पर देखो, महाराज दुर्योधन और पाण्डु पुत्रों के विवादग्रस्त एक गृह का निर्माण हुआ था उस गृह में जो वैज्ञानिक तथ्यों से, निर्माणित तथ्यों से निमार्णित किया हुआ गृह था, जब मैं विज्ञान की चर्चा करता हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से तो मेरा अस्वत हो जाता है, और मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अवलोकन कराता रहता हूँ निर्णय देता रहता हूँ क्या कि-प्रभु! यह वही स्थली हैं जहाँ महाराजा दुर्योधन और देखो, आचार्य द्रोण और जहाँ नाना देखो, महर्षि विभाण्डक नाना ऋषियों का आगमन होता रहा है महर्षि जैमिनी जी का भी यहाँ आगमन होता रहा हैं और यहाँ विज्ञान की

बहुत-सी बहुत से तथ्यों का निर्माण भी होता रहा हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते हैं परन्तु आधुनिक मध्य काल में जहाँ राजेश्वरी विचारधारा हैं जहाँ आचार्य और गुरु का दोनों का संवाद होता हो जहाँ ऋषि-मुनियों की गोष्ठियां होती हों जहाँ ऋषि-मुनियों के आध्यात्मिक विचार और वैज्ञानिकों को वैज्ञानिक विचार मानो उद्धबुध होते रहते हैं, होते रहे है और होते रहते हैं मैं दो वाक् उच्चारण कर रहा हूँ परन्तु होते रहे हैं जब महाराजा द्रोण यहाँ ब्रह्मचारियों को राजकुमारों को शिक्षा देते रहते थे उन्हीं शिक्षा के माध्यम से नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं मानो देखो, क्रियात्मक मानो देखो, अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण भी होता रहा है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में वर्णन कराया क्या, इस स्थली पर बहुत प्रयास हुआ क्या पाण्डव पुत्रों का देखो, और धृतराष्ट्र के पुत्रों का दोनों का समन्वय हो जाएं परन्तु ऐसे स्वार्थी तत्त्वों का निकास हुआ, क्या वह उनका समन्वय नही हो सका, उस समन्वय न होने से, यहाँ नाना प्रकार की अग्नि के काण्ड हुए अन्त में यह हुआ क्या महाभारत देखो, यहाँ प्रारम्भ हुआ और महाभारत में देखो, यहाँ वैज्ञानिक पृथ्वी के वैज्ञानिक समाप्त हो गये और बुद्धिमानों का ह्रास हो गया मानो इसका परिणाम यह हुआ कि ये संसार अन्धकार में चला गया और संसार के अन्धकार में जाने से, मानव का संस्कार मानो संसार से विहिन हो गया। जब किसी राष्ट्र में या किसी भी समाज में, या किसी भी काल में, जब वैज्ञानिक और देखो, बुद्धिमान और बुद्धिजीवी विवेकी पण्डिता नही होते बुद्धिमानो का ह्रास होता है तो वह समाज मानो रसातल को चला जाता है।

मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया, क्या महाभारत काल के पश्चात नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म हुआ हैं नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म क्यों हुआ, क्योंकि राष्ट्र स्वार्थी बन गया, बुद्धिजीवी राजा नही और प्रजा को अनुशासन में नही ला सके मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी यह प्रगट कर रहे थे, कि अनुशासन होना चाहिए परमपिता परमात्मा का जो राष्ट्र हैं यह अनुशासन में रहता है और परमपिता परमात्मा इनके ऊपर अनुशासन करता हैं परन्तु मानव समाज के निचली स्थलियों में परमात्मा परमाणुओं को अनुशासन में कर सकता हैं मानो होता रहता है परन्तु जीव कर्म करने में स्वतत्र होने से यह अपने में मानो देखो, अनुशासित नही हो पाता जब यह अपने में यह अनुशासित हो जाता है तो इसको हम समाज का राष्ट्र का कल्याण हो जाता हैं मैंने मानो देखो, उसके पश्चात अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में वर्णन करते हुए कहा क्या जिस काल में वेद की पतिका ऊर्ध्वा में गति करती हैं मानो वैदिकता को धर्म कहते हैं क्योंकि वेद का नाम प्रकाश हैं और धर्म में ही प्रकाश हैं परन्तु देखो, धर्म और वेद दोनों देखो, वेद का धर्म वेद का प्रकाश और प्रकाश ही धर्म है और वह जो प्रकाश जब तक

रहता है जब तक वेद का प्रकाश रहता हैं तो मानव में भोलापन, मानव में वृत्तियाँ और कर्तव्य का पालन बना रहता हैं और कर्तव्य के पालन होने से समाज में महानता का जीवन मानो देखो, वहां बनता रहता है और राष्ट्रीयता की मानो देखो, उसे राष्ट्र की आवश्यकता नही रहती। मैने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में प्रगट करते हुए कहा था, क्या संसार में राष्ट्र का निर्माण, जब होता हैं जबकि प्रजा में देखो, अप्रियता देखो, निष्क्रियता आ जाती हैं और निष्क्रियता आ करके, उसमें मानो देखो, हीनता और बुद्धि ह्रास हो जाता हैं। कर्तव्य के वाद के लिए मानो अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है, और मानव समाज को राष्ट्रवाद में लाता है मैं यह कहता रहता हूँ कि राष्ट्रवाद की संसार में आवश्यकता क्या है जब मानव अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने लगता हैं, और जब तक मानो अपने कर्तव्य का पालन नही करता, समाज में अकर्तव्यवाद बना रहता हैं, तो राष्ट्रवाद बन करके मानो देखो, समाज को देखो, राष्ट्र निर्माणित कर देता हैं, या राष्ट्र का अपना शोषण करके अपने में आनन्दित हो जाता हैं। यह क्यों होते हैं? यदि मानव अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने लगे, तो यहाँ राष्ट्र की, यहाँ नाना प्रकार के राष्ट्र की रूढ़ियों की आवश्यकता नही रहती संसार में, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करते हुए कहा था, क्या महाभारत काल के पश्चात जिस स्थली पर यह हमारी आकाशवाणी जा रही है इसी भूमि पर देखो, राष्ट्र के विनाश की देखो, धारा का निर्माण हुआ था, यह वही स्थली है, जहाँ राष्ट्र की और देखो, यह वह भी स्थली हैं जहाँ विज्ञान के तथ्यों का निर्माण हुआ था, वैज्ञानिक तथ्यों का निर्माण भी हुआ था और देखो, राष्ट्रीय हस्तिनापुर के द्वारे ब्रह्मे अग्नि का जो प्रहार हुआ, वह इस स्थली से प्रारम्भ हुआ, परन्तु आज मैं इस स्थली की चर्चाएं, इतनी उद्गीत रूप में नही गाना चाहता हूँ, विस्तृत में लेना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह हमारा कि हम परमपिता परमात्मा को अग्रणीय बनाते हुए और समाज को चाहते हैं कि यह समाज अपने कर्तव्य का पालन करे मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता रहता हूँ मानो देखो, हमें सबसे प्रथम, राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, प्रत्येक मानव को राष्ट्र की चिन्ता में मानो चिन्तित हो रहा है अरे, भोले प्राणियों यह चिन्ता का विषय नही हैं यह तो कर्मठता का विषय है यहाँ जब प्रत्येक मानव में जब शोषण प्रवृत्ति नही रहेगी जब यहाँ मानव अपने कर्तव्य का पालन करने लगता हैं मानो देखो, रूढ़ियों को अपने राष्ट्र में पनपने नही देता अपने समाज में तो यह मानो देखो, यह कर्तव्यवाद स्वतः आ जाता हैं।

मैंने बहुत पुरातन काल में कहा क्या जिस-जिस काल में समाज में देखो, नाना प्रकार की ईश्वर के नामों पर रूढ़ियाँ पनपी हैं नाना प्रकार के धर्मों की चर्चा राष्ट्र करता है, जानों की उसे राष्ट्र का विनाश होने वाला है। मानो देखो, जहाँ नाना प्रकार के धर्म के नामों पर, एक

दूसरें के विचारों में देखो, विभाजन हो जाता है, उन विचारों के विभाजन होने से रक्तभरी क्रान्ति का संचार उत्पन्न हो जाता हैं, जब मैं यह विचारता रहता हूँ जब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था एक समय, क्या राष्ट्र की घोषणा मानव क्यों कर रहा है। अरे, मानव तू अपने धर्म और मानवता के मानो दर्शन की चर्चा क्यों नही कर रहा हैं मानो देखो, जब मानव दर्शन की जब चर्चा करता है कि मानव क्या है? धर्म क्या हैं? वेद क्या है? याग क्या हैं? और मानो इसके मार्ग पर चल करके, जिस प्रकार की विज्ञान की धाराओं का जन्म होता रहेगा, जब मैं यह विचारता रहता हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मैंने चर्चा कई काल में विचार व्यक्त करते हुए कहा था आज मैं कोई नवीन, नही देने आया हूँ, क्योंकि संसार में न कोई नवीन चर्चा हैं जब परमपिता परमात्मा ईश्वर के, परमपिता परमात्मा से दूरी हो जाता हैं तो नाना प्रकार की रूढ़ियों का आश्रय प्राणी लेने लगता है और रूढ़ियों का आश्रय लेने से, वह राष्ट्र और समाज में उन रूढ़ियों के पनपने से ही देखो, राष्ट्र का ह्रास होता रहता हैं। आज मैं राष्ट्र को या राष्ट्र की चर्चा करूं राष्ट्र कैसे जिये। अनुशासन का नाम राष्ट्र हैं प्रशासन नाम अनुशासन है मानो देखो, अनुशासन में जब राष्ट्र यह विचारता रहता हैं क्या तेरा कर्तव्य क्या है? तू कितना ज्ञानी हैं? तू कितना तपस्वी है? मानो तेरे राष्ट्र में कौन-कौन-सा क्रियाकलाप महान हैं? जब इस प्रकार का राष्ट्र के हृदय में यह विचार आ जाता है मानो देखो, वह काल, वह विचित्रता में राष्ट्र परिणत हो करके राष्ट्र मानवता का प्रसार हो जाता है।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण करने लगूं कि राजा यदि अहिंसा परमो धर्मी बन जाता हैं तो यह राष्ट्र भी अहिंसा परमोधर्मी बनेगा, मानो यदि देखो, यदि राजा ज्ञानी होगा, ब्रह्म ज्ञानी होगा तो राष्ट्र भी ब्रह्म ज्ञानी बन जायेगा। यदि मानो देखो, राजा यागिक होगा और वेदोक्त होगा, वह उसका राष्ट्र भी वेदोक्त बनेगा, जब राष्ट्र को यह चिन्ता लगी हुई हैं यदि तुमने भगवान का स्मरण क्या चिन्तन कर लिया तो दूसरे को मानो देखो, जो रूढ़िवादी है वह तुझे क्या कहेंगें, जब इस प्रकार का अपनी आत्मा को, जो अपनी अन्तरात्मा के हृदय जो अन्तरात्मा हृदय के वाक को मानव या राजा नष्ट करता हैं उस राजा का स्वतः नाश हो जाता हैं। मैने कई काल में यह कहा है क्या मानव को अपनी अन्तरात्मा की वाणी को शान्त नही करना चाहिए, और अन्तरात्मा से अहिंसा परमो धर्म के उद्गारों का जन्म होता है परन्तु देखो, उसके ऊपर मानव विचारता नही हैं, आज जब मैं यह विचारता हूँ क्या संसार में मानो देखो, एक शब्द बना हुआ हैं, यहाँ एक शब्द है बलिदान, यहाँ एक शब्द है देखो, बलि देना, एक शब्द है मानो देखो, दूसरे को जैसे अपने को समर्पितक करना हैं मानो उस प्रकार के शब्दों का उद्घोष है जब मैं यह मानता हूँ मोहम्मद के मानने वालों के द्वार पर जाता हूँ, तो वह कहते हैं

कि हम तो बलि प्रदान करते हैं अरे, नाना प्रकार के प्राणियों की बलि देने से, क्या तेरा कल्याण हो सकता है या नाना प्रकार की वेदियों पर बलि देने से कल्याण नही होगा। अरे, यह कुर्बानी का अभिप्रायः देखो, यह जो ब्रह्मे मानो देखो, जो बलि का अभिप्रायः यह है क्या मानव को पुरूषार्थ करना चाहिए अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहिए अपने जीवन को चरित्रवान बना करके कर्तव्य का पालन करने का नाम ही बलिदान होना है जब मानव यह विचारता हैं तो यह राष्ट्र और समाज और देखो, नाना प्रकार की आभा में यह संसार ऊँचा बन सकता हैं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में यह वर्णन कराया है, क्या जब मानव मानव का भक्षण कर जाता हैं जब मानो प्राणी प्राणी का भक्षण करने लगता हैं वह राष्ट्र कितना और वह समाज मानो कितना देखो, हीनता को प्राप्त होता रहता है, मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं जब यह संसार के प्राणी मानो कोई भी प्राणियों में महापुरूष आता है वह महापुरूष अहिंसा परमो धर्मी कहलाता हैं, वह अहिंसा परमो धर्मी पुकार को ले करके अपने उद्गीत गाता रहता है परन्तु उसके जो अनुयायी होते हैं उसके जो मानने वाले होते हैं वह अपने कुछ संस्कारों के विचारों को ले करके महान आत्माओं के हृदय भी दूषित कर देते हैं इनके क्रियाकलाप भी दूषित हो जाते हैं।

तो इसीलिए आज इनके हृदयों को अथवा इनके क्रियाकलापों को दूषित नही करना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि यह राष्ट्र बड़ा दुर्भागी होता हैं जो रूढ़ियों के नामो पर मानो देखो, एक-एक गृह में देखो, रक्त का रक्त बहाया जाता हैं वह धर्म नही है मानो देखो, वह रूढ़ि कहा गया हैं उनकी धृष्टता है और देखो, मैं अपने पूज्यपाद को कहता हूँ तो आश्चर्य आता हैं जब मैं मानो देखो, अपने में यह विचारता हूँ कि राष्ट्रीय विचारों की, आज वायुमण्डल में भी राष्ट्रीय विचारों का मानो देखो, एक विचार ऊर्ध्वा से जा रहा हैं और ऊर्ध्वा में जाता हुआ वह ऊर्ध्वा में रह रहा हैं और प्रत्येक मानव जो आध्यात्मिक और भौतिक जो जीवन है उसे वह नष्ट करता चला जा रहा हैं क्योंकि उसमें स्वार्थ है, उसमें स्वार्थपरता होने से देखो, वह राष्ट्रीयता देखो, हिंसा का एक मूल बना हुआ हैं। जब मैं यह विचारता हूँ कि राष्ट्र कैसा हो? राजा का यह कर्तव्य है कि राजा राजा से मानो देखो, राजा से जब मिलन करता हैं और मैने देखो, विशेष वर्णन शैली उच्चारण की, आज देखो, ईश्वर के नामो पर, प्राणियों का रक्त बहाया जा रहा हैं जिनका कोई भी अस्तित्व नही हैं मानो देखो, वह बहाया जा रहा हैं विचारों में दूषितपना आ गया है, क्योंकि यह नाना प्रकार की रूढ़ियाँ, उसमें रूढियां मूल में रहती है नाना प्रकार की रूढ़ियाँ उसके मूल में है हे राजन! यदि आज तू यह चाहता है क्या मैं इसका कैसे निदान करूं? एकान्त स्थली पर विद्यमान होता है तो राजा यह

विचारता है क्या मैं इसका कैसे निदान करूं, अपने राष्ट्र का कैसे निदान हो परन्तु यह तो विचारता है अन्तर्हृदय से परन्तु जब बाह्य जगत में आता है तो पद की लोलुपतता में लग जाता हैं वह पद की लोलुपता मानो देखो, उसके आत्मा की अथवा हृदय की जो पुकार है वह शान्त हो जाती हैं, और वह शान्त हो करके मानो देखो, वह भी शान्त हो जाता हैं जब मैं यह विचारता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई कालों में यह वर्णन किया था यह वर्णन कराया था क्या राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो सबसे प्रथम जो नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं उनके आचार्यों को एकत्रित करना चाहिए। उनके आचार्यों को एकत्रित करके और राजा को इसका मध्यस्थ बनना चाहिए और मानो देखो, अपने हृदय में वेद की पोथी हो, उपनिषदों की पोथियां हों अथवा उनके हृदयों में नाना प्रकार के रूढ़ियों के जो मुख्य-मुख्य मानो देखो, विचारों की पोथियां है वह उनके समीप हों, और उनको नाना ब्रह्मवेत्ता देखो, तपस्वी ब्राह्मण तपस्वी मानो देखो, वेदों को विचारने वालें, धर्म के मर्म को जानने वाले, वह विराजमान हो करके जितनी रूढ़िया सबका निर्णय देने वाले हों, और जो निर्णय दें विज्ञान पर, मानव दर्शन पर, मानो कर्तव्यवाद पर निहित हो जाएं वही राष्ट्र में मानो देखो, एकोकी धर्म होना चाहिए।

मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय दिया आज के संसार में, ऐसा क्यों हो रहा है? प्रत्येक मानव इस संसार का चिन्तित हो रहा हैं, चाहे वह समुद्रों के तल पर रहने वाला हो समुद्रों से दूरी रहने वाला हो परन्तु पृथ्वी मण्डल पर इसी की आभा में रत्त रहने से, मूल में यह है क्या देखो, जितने आचार्य हुए हैं जितने रूढ़ियों को आचार्य हुए है, वह मानो देखो, उन्होंने तपस्या तो की हैं परन्तु वह अन्त में स्वार्थ की परता में आ करके और मानो देखो, राष्ट्रीयता का कर्तव्य का और धर्म का ह्रास कर दिया। विचारा नही, क्योंकि इसको राजा को विचारना चाहिए, हमारे यहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया क्या राजा जब अश्वमेध याग करता है अश्वमेध याग का क्या अभिप्रायः है मानो देखो, मानव नही विचार रहा हैं अश्वमेध याग का अभिप्रायः यह है क्या कोई भी मानो देखो, राजा के राष्ट्र में रूढ़ि नही रहनी चाहिए, अश्व नाम राजा का और प्रजा मेध बन करके मानो जब सुगठित हो करके, राष्ट्र का पालन अथवा अपने-अपने कर्तव्य का पालन करता है, तो वह मानो अग्नि का चयन करता हुआ अपने कर्तव्य का पालन करता है और कर्तव्य का नाम ही अश्वमेध याग हैं हे राजा! और कर्तव्य तेरा उस काल में बनेगा जब तेरे राष्ट्र में रूढ़ि नही होगी जब मानो देखो, रूढ़ि बन जाती है जैसे मानो एक साधारण गृह है, साधारण गृह में पुत्र हैं, एक पुत्र वधु हैं, मानो एक पुत्री है, एक मानो देखो, पत्नी हैं, और भी नाना पुत्र है, जब प्रातः देखो, जब पिता में माता मे रूढ़ि बन जाती हैं, तो गृह में अग्नि के काण्ड होने लगते हैं, जब माता तो यह विचारती हैं क्या मैं कौन-

सी पुत्र वधु से स्नेह करूं पिता यह विचारता है कौन-सा पुत्र मेरा सुयोग्य हैं मानो जब यह रूढ़ियाँ उसके विचारों में आनी प्रारम्भ होती हैं एक दूसरे में ईर्ष्या हो करके, गृह का विभाजन हो जाता हैं। इसी प्रकार देखो, राजा के राष्ट्र में भी इस प्रकार विभाजन हो जाता हैं, विभाजन जब भी होता है जब होता है जब स्वार्थपरता आ जाती हैं और स्वार्थपरता आने से देखो, राजा के राष्ट्र में देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियाँ होने से नाना प्रकार की रूढ़ियों के मूल में विभाजन देखो, उसके गर्भ में निहित होता हैं जब मैने बहुत पुरातन काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि विज्ञान क्या है? मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे बहुत-सी विज्ञान की चर्चाएं प्रगट की, दूषित वायुमण्डल की चर्चाएं तो मैं कल प्रगट कर सकूंगा यदि मेरे पूज्यपाद आज्ञा देंगें आज तो मैं केवल इतना उच्चारण करने के लिए आया हूँ क्या राष्ट्र की यह घोषणा होना राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि प्रजा को एक सूत्र में लाने का प्रयास करें, और वह सूत्र कौन-सा है क्या ये नाना प्रकार की रूढियां जब तक इनके ऊपर संघर्ष नही होता, जब तक सत्य का निर्णय नही होता और राजा इतना शक्ति शाली हो उसकी यह घोषणा करे, क्या मैं उस विचारधारा को, राष्ट्रीयता दूंगा जिस विचार में विज्ञान हो, मानव दर्शन हो, कर्तव्यवाद हो, अहिंसा परमोधर्म हो, ऐसा राजा जब घोषणा करता है तो राष्ट्र ऊँचा बनता हैं। परन्तु देखो, आज प्रत्येक मानव नरसंहार की चर्चा करता है, नर संहार ही कहता कहता चला जाता हैं कि नर संहार हो रहा हैं अरे, यह नर संहार क्यों हो रहा हैं? मानो देखो, इसके मूल मे स्वार्थ हैं, इसके मूल में स्वार्थ है और वह स्वार्थपरता ही मानो देखो, नर संहार करा देती हैं। विचार देते हुए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया था, क्या यह नाना प्रकार की रूढियां नष्ट होनी चाहिए, नाना प्रकार की रूढ़ियों का ह्रास होना चाहिए, मानो देखो, यहाँ नाना प्रकार की वृत्तियों में मानव परिणत हो रहा हैं उसकी आभा में रत्त रहना चाहिए आज मैं जब इस विचारधारा को लेता हूँ तो मेरा हृदय यह कहता रहता हैं कि आज यह समाज कहाँ चला गया मुझे वह काल स्मरण आता रहता हैं मुझे वह काल स्मरण मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया आज प्रत्येक मानव भगवान राम की चर्चा करता रहता हैं, भगवान कृष्ण के मुखारबिन्दु से उद्गीत, उदगार मानो देखो, मानो देखो, अपने हृदय का उदगार बनाना चाहता हैं, परन्तु जब यह विचार आता है क्या भगवान कृष्ण और भगवान राम का जीवन कैसा, उनका उनके जीवन में कितनी प्रतिभा रही हैं भगवान राम सदैव मानो देखो, शाकाहार में परिणत रहते थे, शाकाहार किसे कहते हैं मानो देखो, जो पृथ्वी के गर्भ से अपना मानो देखो, अपना जो अपना जो आहार है उसको वह पान करते थे, उस आहार को पान करना उसी में वह सतोगुणी भावना को जन्म देना। आधुनिक काल को जो मानो देखो, जो राम को मानने वाले हैं या कृष्ण को मानने वाले

हैं मानो उनके आहार और व्यवहार दोनों दूषित हो रहे हैं। जब आहार दूषित हो रहे हैं, वह मानो देखो, फल इत्यादियों का पान करते थे, गो घृत का पान करते थे, गो रस का पान करते थे, अहा गऊओं के मांस का भक्षण कर जाते हैं तो कितना अन्तर्द्वन्द्व आ गया हैं। विचार आता रहता है और वह यह राष्ट्र यह कहता है कि मैं राम राज्य लाना चाहता हूँ अरे, राम राज्य कैसे आ सकता हैं? राम राज्य जब आयेगा, जहाँ प्रत्येक प्राणी की रक्षा होगी, प्रत्येक प्राणी जब तक देखो, रक्षा में नही हो सकती चाहे वह प्राणी जलचरों में रहने वाला हों, चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाला हो, चाहे मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में रमण करने वाला हो, प्रत्येक प्राणी की जब तक राष्ट्र मे रक्षा नही होगी राजा का राष्ट्र पवित्र नही बना करता।

मैंने बहुत पुरातन काल में भगवान मनु की चर्चा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे प्रगट कराई थी, जब भगवान मनु समुद्रों में स्नान करने जाते, तो संध्या और तर्पण करते रहते थे जब उन्होनें संध्या और तर्पण किया तो कमण्डलु में मछली आ गई जब मछली आ गई तो वह मछली को ले करके अपने आश्रम में आये आश्रम में आने के पश्चात उन्होनें मानो देखो, जब वह कमण्डलु में मछल ब्रहे उसको अर्पित ब्रहे मानो मछली को दूरी करने लगे तो वह मछली अपनी वेदनामयी कहती है क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपनी-अपनी वेदना में देखो, वेदनित रहता हैं अरे, उस भाषा को जानने वाला मानव होना चाहिए मानो उसकी भाषा बड़ी विचित्र भाषा होती हैं उसकी आत्मा की बड़ी महान तरंगें होती हैं उस तरंगों योगी जन जानते हैं क्योंकि भगवान मनु योगी थे भगवान मनु योगेश्वर होने से उन्होंने उनकी वेदना को स्वीकार किया और उनकी वेदना यह कह रही थी वह वेदनित थी हे मनु! मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ क्योंकि समुद्रों का जो मिलन है प्रकृति का नियम हैं क्या देखो, बड़ी मछली सूक्ष्म मछलियों का आहार बना करके और वह अपने उदर की पूर्ति करती रहती है मेरी इच्छा यह है कि मैं आपकी शरण में आई हूँ, मैं किसी का आहार नही बनना चाहती। मानो देखो, भगवान मनु ने, उस मछली की रक्षा की, गढेला बनवाया मछली प्रबल हो गई वही मछली देखो, भगवान मनु की रक्षक बन गई, वह कैसे रक्षक बनी? जब मानो देखो, मछली प्रबल हो गई, विशाल मछली हो गई तो उस समय मछली ने एक समय भगवान मनु से कहा हे भगवन! मैं अब अपने पूर्ण रूपेण हो गई हूँ मानो देखो, अमुक समय पर जल प्लावन आयेगा, और जल प्लावन में जाने के लिए तुम एक नौका का निर्माण करो, तो भगवान मनु ने उस नौका का निर्माण कराया और नौका में अपना वास किया उसी समय पर जल प्लावन आया और मछली ने कहा मै हिमालय से मिलन होगा नौका को देखो, उसमें जकड़ देना जब भगवान मनु ने नौका को उससे जकड़ा तो वही मछली जिसकी रक्षा की वही मानो देखो, भगवान मनु की रक्षक बन गई। अरे, जिस प्रकार का राजा

हो, इस प्रकार का समाज हो, मानो देखो, प्रत्येक प्राणी की जो रक्षा करने वाला हो, क्योंकि यह अपनी रक्षा करती हैं, अपने में शुद्धिकरण करती है, और वह शुद्धिकरण करते-करते अपने में अभ्योदय हो जाती हैं। तो विचार क्या, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैं अपने को, मैं यह निर्णय देता रहता हूँ अपने विचारों को व्यक्त करता रहता हूँ कि यदि समाज को ऊँचा बनाना है तो अहिंसा परमो धर्म में प्रत्येक मानव कहता है कि गऊ की रक्षा होनी चाहिए प्रत्येक प्राणी कहता है मैं वायुमण्डल में उसको ग्रहण करता रहता हूँ अरे, भोले प्राणियों यह जो नाना प्रकार के प्राणी मानो अपनी आहार में ला करके, व्यवहार में ला करके देखो, विलासता का एक क्षेत्र बना रहा हैं अरे, यह जो नाना प्राणियों का मछली इत्यादियों को पान करने वाला, मानव अपने को विलासता के रूप में परिणत कर रहा हैं नाना देखो, अजा को पान करने वाला नाना अपने विलासता के क्षेत्र को बना रहा है क्या भोले प्राणियों देखो, गऊ और प्रत्येक प्राणी राष्ट्र कि लिए लिए ही तुल्य माना गया हैं। विचार आता रहता है कि संसार में प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिए कौन प्राणी ऐसा है संसार में जो एक दूसरे से कटिबद्ध नही, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराया था, कई कालों में यह कहा है क्या मानो देखो, प्रत्येक प्राणी, परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में रहता हैं और प्रत्येक प्राणी मानो एक दूसरे से गुथा हुआ है, एक दूसरे को लाभप्रद देने वाला है, एक दूसरे का सहयोगी बना हुआ है अरे, यह तो परमात्मा की रचना की मानो विचित्र माला हैं इस माला को जो जान लेता हैं वही तो अहिंसा परमोधर्मी बनता है आज जब मैं यह विचारता रहता हूँ क्या संसार में कोई मानो पुत्र न रह करके, वह नाना प्राणियों का आहार की वृत्तियों में बलि के प्राण प्रस्सुत करने लगता है देखो, मोहम्मद के मानने वाले कहते हैं, क्या मैं तो अप्रतं ब्रह्मा क्या देखो, हमारे यहाँ बलि दी जाती है अरे, इदानं ब्रहे देखो, ब्रहे मानो देखो, इनके पूर्वजों ने, पुत्र की बलि दी, मानो पुत्र नही रहा तो तीन प्राणी बलि के बन गये अरे, भोले प्राणियों! मैं जानना चाहता हूँ पुत्र भी प्रभु का है और भी प्राणी प्रभु के हैं और कहते हैं कि हम प्रभु को मानने वाले है अरे, प्रभु का जो मानने वाला होता है, वह किसी प्राणी का भक्षण नही करता प्रभु को मानने वाला मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उच्चारण कर रहे थे देखो, कई समय हो गये देखो, जिज्ञासु यह अपना निर्णय दे रहे हैं क्या प्रभु हैं जब यह निर्णय हो जाता है कि-प्रभु! है तो वह प्रभु के होने पर तो वह किसी का बलिदान नही करते वह मानो देखो, किसी को बलि नही देते अरे, बलि की तो प्रथा हैं यह महाभारत काल के पश्चात प्रारम्भ हुई उसी बलि की प्रथा को यहाँ देखो, और नाना रूढ़िवादियों ने अपनाना प्रारम्भ हुआ उसके अपनाने से यह बलि प्रथा का प्रारम्भ हुआ जब मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ कि समाज में बलि नही पुरूषार्थ होना चाहिए अरे, बलि ही पुरूषार्थ हैं पुरूषार्थ

ही बलि है मानो देखो, अपने जीवन को ऊँचा बनाना हैं पुरूषार्थ करते-करते परमात्मा के निकट जाना है तो इसीलिए नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं नाना प्रकार का जो अहिंसक जो विचार है हिंसा का विचार है वह अहिंसा में परिणत होना चाहिए जब अहिंसा में परिणत हो जाता हैं तो यह राष्ट्र और समाज उल्टे मार्ग पर चला जाता हैं।

मैं यह कहता रहता हूँ जहाँ उतानपाद मानो देखो, राजा याग करते रहते थे इस आभा को मैं कल प्रगट करूंगा यदि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे आज्ञा देंगें, आज का विचार तो मैं केवल इतना उच्चारण करने जा रहा हूँ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे आज्ञा दी मैंने कुछ परिचय दिया है और परिचय यह है कि प्रत्येक मानव को, अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, चाहे वह राजा हो प्रजा हो जब तक कर्तव्य का पालन नही होगा, मानो देखो, राष्ट्र और समाज कदापि ऊँचा नही बन सकता यह राष्ट्र और जब समाज ऊँचा बनता है जब कर्तव्यवाद की वेदी पर मानव तत्पर हो जाता है, पुरूषार्थ और देखो, नाना देखो, राजा अपने राष्ट्र में शान्ति चाहता हैं मानवता चाहता है यदि वह मानवता और महानता चाहता है तो रूढ़ियों का विनाश होना चाहिए रूढ़ियों का विनाश ज्ञान का और वेद का प्रसार होना चाहिए ब्रह्म ज्ञान का प्रसार होना चाहिए, मानव दर्शन प्रत्येक प्राणी के समीप होना चाहिए।

आज का यह विचार क्या हैं मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से यह उद्गीत गाता रहता हूँ क्या प्रत्येक जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें परम्पराओं से यह शिक्षाएं दी हैं क्या प्रत्येक मानव अपनी मानवीयता का तत्पर रहना चाहिए आज मैं देखो, राष्ट्रवाद या समाजवाद किसी भी प्रकार की आभा में रत्त नही रहना चाहता हूँ कल मुझे मेरे पूज्यपाद मुझे समय देंगें तो कल मैं साम्यवाद की चर्चा करूंगा कि वेद और मानवीयता में कितना साम्यवाद हैं कल वह मुझे समय मिलेगा तो चर्चा करूंगा देखो, जिन राष्ट्रों में आज उनकी संस्कृति का ह्रास हो गया प्राचीनता का मानो देखो, अतीत की सृस्कृति न रही उसकी मैं चर्चा कल करूंगा अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे सम्भवा, मेरे प्यारे महानन्द जी ने, अभी-अभी अपना वाक् प्रगट किया इनके विचारों में साधारणतव, बड़ी गम्भीर वाक् मानो हमें प्राप्त होते रहते हैं, इनके वाक्यों में बड़ी एक महानता रही है इनके विचारों में राष्ट्रीयवाद कर्तव्यवाद और मानवता की आभा रत्त रही हैं। कल मेरे प्यारे महानन्द जी अपने विचार और उद्गीत रूप में गा सकेंगें, आज का वाक् अब यह समाप्त होने जा रहा हैं, कल समय मिलेगा तो कल मेरे पुत्र इसी भूमिका आगे बनायेंगें आज का विचार समाप्त ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माणा वाचन्नं

६ वैदिक साम्यवाद 06 03 1987

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे प्रभु का गुणगान गाया जाता है मानो वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं, संसार की स्थली ऐसी नही हैं जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, मानो आज का हमारा वेदमन्त्र, याग के सम्बन्ध में मानो उस परमपिता परमात्मा गुञ्जार होता हुआ हैं जैसे मानो चन्द्रमा और सूर्य दोनो एक दूसरे के पूरक हैं, मानो एक ऊर्ज्वा देता है, तो एक अमृत बहा रहा हैं, सूर्य प्रकाश देता है, चन्द्रमा भी प्रकाश देता हैं, परन्तु वह जो प्रकाश है वह चन्द्रमा दे रहा है वह प्रकाश अपने में बड़ा अनूठा हैं, वह मानो देखो, उत्पति के मूल में रहता हैं और चन्द्रमा और सूर्य मानो उसकी उत्पति के मूल के रूप में वे उस प्रकाश बन करके रहता है और वह प्रकाश देता रहता हैं तो जब हम अपने प्रकाश की चर्चाएं करते हैं तो मानो चन्द्रमा और सूर्य दोनों का विज्ञान प्रायः हमारे समीप आने लगता हैं और यह कहा जाता है कि चन्द्रमा तो अमृतमयी प्रदान करता रहता हैं, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक वैज्ञानिकों ने, चन्द्रमा से जो मानो देखो, ऊर्ज्वा को जाना हैं जो अमृत के रूप में विद्यमान रहती हैं मानो जो सूर्य के आँगन में, जो ऊर्ज्वा बन करके रहती हैं वही तो ऊर्ज्वा मानो देखो, उस मानव के और ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में रत्त होती रही है।

तो आज मैं बेटा! तुम्हें विज्ञान के वांगमय में नही ले जाऊंगा, केवल आज का हमारा जो वाक् है हम परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का प्रायः हम वर्णन करते रहते हैं और ये विचारते रहते हैं कि यह ब्रह्म एक अनूठा है मानो देखो, इसी वाक् को ले करके महर्षि पिप्लाद मुनि महाराज ने छः जिज्ञासुओं को यही कहा है क्या यह मानो प्राण स्वरूप हैं ये जो प्राण है ये दस रूपों में रत्त रहने वाला हैं मानो यह प्राण जब भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में रत्त होता रहता है, तो मानो वह प्राण ही भोगतव्य है और प्राण ही भोगता माना गया हैं मानो देखो, यह प्राण ही आहार करता हैं और यह ही जानता हैं यह उपज देता हैं और वही ऊर्ध्वा में प्रवेश करा देता हैं।

तो आज हम मुनिवरों! मुझे इतना समय तो आज्ञा नही दे रहा है तो आज मैं प्राणो के ऊपर अपनी विवेचना प्रगट करूं, परन्तु संकेत में इतना हैं क्या यह जो प्राण है, यह अपने में मानो क्रियाशील है और वह प्राणतव अपने में क्रिया में रत्त रहने वाला, अभ्योदय होता रहता है। जिस आभा में मानव सदैव रत्त होता रहता है और जीवन की अनूठी-अनूठी धाराओं में और उत्पति के मूल में मानो वह अपने क्रियाकलापों में, इस संसार को एक आभा में निहित कर

रहा है जिसके ऊपर हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, ऋषि-मुनि बेटा! अनुसन्धान करते रहते हैं परन्तु कोई वाक आते रहते हैं मानो एक ऋत है एक सत हैं मानो देखो, ऋत में यह ब्रह्माण्ड जो दृष्टिपात आने वाला हैं ये सब ऋत कहलाता हैं अब जो परोक्ष रूप से विद्यमान हैं। अथवा क्रियाकलाप कर रहा है इन क्रियाकलापों में मेरे प्यारे! देखो, वह सतप्रद्धे वह सत ही विद्यमान हैं मानो देखो, जब तरंगों का विभाजन किया जाता हैं जैसे वैज्ञानिक एक अणु, परमाणु, और त्रेसेणु इत्यादियों का जब विभाजन करता है अथवा उसकी विभाजन तत्त्वों में, एक मानो उसके गर्भ में जो एक चेतनतव सता हैं वही तो मेरे प्यारे! देखो, सत के रूप में विद्यमान है वह मानो देखो, सतमयी कहलाती हैं, अन्तरात्मा के समीप मानो विद्यमान होने वाला एक आत्मा परमपिता परमात्मा हैं दोनों ने ही तो अपने में भोगतव्य वृत्तियों में मानव निहित हो करके मुनिवरों! देखो, दोनो अपने में मग्न वृत्तियों में विद्यमान होते हैं।

तो आज बेटा! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ आज मैं विज्ञान के वांगमय में नही मानो एक-एक परमाणु के विभक्त करने से, इतनी ऊर्ज्वा का जन्म हो जाता हैं कि उस ऊर्ज्वा को ले करके हम अपने मे महान बनते रहते हैं अब मेरे प्यारे महानन्द जी देखो, उनका समय देने से पूर्व आज का हमारा वेदमन्त्र याग के सम्बन्ध में उद्गीत गाया जा रहा था, वेद का मन्त्र याग के लिए मानव को बाध्य कर रहा हैं मानो देखो, यागां ब्रह्म लोकां याग वही प्राणी करता है जो संसार में जागरूक रहता हैं अथवा जो जागता रहता है वही तो मेरे पुत्रों! देखो, यागिक माना गया है आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार अपने विचारों को हम यही विराम दे रहे हैं अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने कुछ वाक् मानो उद्गीत रूप में गायेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् पश्चौ रथं भविता माणौ सर्वं भद्राणि गन्धर्वौ वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथव मेरे भद्र ऋषि मण्डल और भद्र समाज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी मानो गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे पूज्यपाद गुरुदेव सदैव ज्ञान और विज्ञान में अपनी उड़ान उड़ते रहते हैं उनके विचारों का जो माध्यम अथवा उनके विचारों की जो प्रतिक्रियाएं है वह मानो देखो, परम्परागतों से बड़ी विचित्र मानी गई है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी मानो कुछ विज्ञान के वांगमय में जाना चाहते थे और विज्ञान की कुछ इन्होंने चर्चाएं भी की हैं परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो बहुत समय से एक-एक वस्तु पर अन्वेषण करते रहते हैं और विचार-विनिमय करते रहते हैं परन्तु उन विचारों में कितनी विचित्र उड़ाने हैं और उनकी कितनी मानो एक दूसरे पर कितना अध्ययन हम यह अपने में मानो शान्त हो जाते हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी कुछ वाक् उच्चारण किये मानो देखो, मैं और विशेष चर्चा तो देने नही आया हूँ बहुत समय हो गया भगवान राम के काल में और उससे पूर्व कालों में भी ऋषि-मुनियों की

सभाएं और उनका प्रदर्शन होता रहता था मेरे पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कई काल में यह प्रश्न भी किया था परन्तु जहाँ अध्ययन का करने यह प्रतीत हुआ है क्या सृष्टि के प्रारम्भ से क्या भगवान मनु के काल से कुछ पश्चात ऋषि-मुनियों का एक समूह विद्यमान हुआ। और भगवान मनु महाराज ने ऋषि-मुनियों को वेद की पोथी में रत्त किए गए और ये उन्हें कहा गया कि हे ऋषि जनों! यह जो समाज हैं मानो यह जो प्राणी मात्र है इनके जीवन में अस्वस्थता होने वाली हैं मानो देखो, ये कर्तव्य विहिन हो रहे हैं तो ऐसी नियमावली बनाईये जिससे मानो यह क्रियाकलापों में तत्पर हो करके और यह अपने मानो देखो, दूरिता एक क्रिया न बना सके और उसके मनन की जो क्रियाकलापता है वह यागिक रूप में परिणत हो जाएं।

वैदिक साम्यवाद

तो मेरे भद्र पुरूषों मानो देखो, ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित हुआ, और उस समाज में मानो देखो, उन्होंने यह प्रश्न किया था, क्या राष्ट्रीयता निर्माण करो कि राष्ट्रीयता को हम निर्धारित कर सकें, तो मानो देखो, उस समय उन्होंने सबसे प्रथम साम्यवाद की चर्चाएं की मानो देखो, हमारा जो वेद का मन्त्र है वह साम्यवाद की चर्चा कर रहा हैं साम्यवाद किसे कहते हैं? मानो देखो, समूह का वाद हैं जो समूह के विचार हैं सामान्य विचार है, मानो उन विचारों को ले करके मानो साम्यवाद विचारों से क्रियाकलाप होता हैं हमारे यहाँ मैं बहुत पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता हुआ परन्तु परिचय दूंगा क्या मानो देखो, हमारे वैदिक वांगमय में, हमारे यहाँ सबसे प्रथम ब्रह्मयाग आता है पूज्यपाद गुरुदेव ने ब्रह्मयागों की बड़ी विचित्र चर्चाएं अथवा बड़ी महान से महान उड़ाने उड़ी हैं, उन उड़ानों में, पूज्यपाद गुरुओं ने और भी नाना ऋषियों ने और उस काल के ऋषियों ने यह निर्णय दिया, कि ब्रह्मयाग होना चाहिए, जिस परमपिता परमात्मा ने हमारा निर्माण किया हैं, जिस परमपिता परमात्मा ने नाना प्रकार की सृष्टि का सृजन किया हैं, जिस परमपिता परमात्मा ने उस ब्रह्माण्ड की रचना की हैं और रचना करके उनको जो क्रिया दे रहा हैं, मानो उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, प्रातःकालीन चिन्तन करने वाले बनें चाहे राजा हो चाहे सामान्य प्राणी हो, चाहे मानो देखो, युवक हो, चाहे युवक पत्नी और पति हों किसी भी रूप में मानव विद्यमान हो ब्रह्म का चिन्तन अवश्य करने वाले बनें। मानो देखो, जो माता-पिता सुयोग्य होते हैं जिन माता-पिताओं के हृदय में यह वेदना होती है कि मैं माता के हृदय में यह वेदना की मैं सुयोग्य सन्तान को जन्म देना चाहती हूँ तो मानो माता-पिता को तपस्या करनी होगी क्योंकि बिना तपस्या के सन्तान सुयोग्य उत्पन्न नही हुआ। करती तपस्या का अभिप्रायः क्या है क्या अपने क्रियाकलापों को मानो देखो, संयमी बनाता रहे, अपने क्रियाकलापों में त्रुटियां नही होनी चाहिए और जब मानो देखो, त्रुटियां नही होंगी तो उनके हृदय के उदगार,

उनके हृदय की तरंगें, दोनों के हृदय की तरंगें मानो जब समावेशता में आती हैं तो सन्तान सुयोग्य उत्पन्न होती हैं।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई कालों में यह चर्चाएं की हैं, आज मैं उसकी पुनरूक्ति तो देने नही आया हूँ विचार यह है कि मैं मानो यह जो ब्रह्मयाग होना चाहिए उस याग में, जब हम देखो, ब्रह्मयाग के पश्चात देखो, देव याग की पूजा करते हैं। देव याग किसे कहते हैं, देवताओं को हमें कुछ अर्पित करना हैं हमारे यहाँ देवताजनों के सम्बन्ध में, भिन्न-भिन्न प्रकार की आख्यिका आती रहती है। मुझे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई कालों में वर्णन कराया, चरणों में विद्यमान हो करके, नाना प्रकार के प्रश्न और उत्तर होते रहते हैं मानो देखो, हम देवताओं की पूजा करते हैं, अग्नि होत्र करते हैं, अग्न्याध्यान करके यज्ञमान देखो, उद्गाता और अध्वर्यु बन करके, ब्रह्मा इत्यादि पुरोहित बन करके याग कर्म करते हैं। यागां ब्रह्मा उसका क्रियाकलाप उसका कर्मकाण्ड बड़ा भिन्न होता है परन्तु मैं कर्मकाण्ड की पद्धतियों में बड़ा विचित्र एक याग हैं देव याग का अभिप्रायः है कि यह जो देवता हैं जैसे बुद्धिमान हैं मानो राजा है, ब्रह्मणे ब्रह्मा यह राजा तो देवता नही जैसे जल, अग्नि, तेज वायु हैं ये सर्वत्र मानो देवता है और हम मानो देखो, देव पूजा करते हैं, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाएं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि प्रत्येक मानव यह कह रहा है कि मानो देखो, वायुमण्डल दूषित हो गया हैं दूषण काल भी हैं मानो देखो, जो अन्तरिक्ष में वह परमाणुओं के परमाणुओं के मानो देखो, झुण्ड के झुण्ड विद्यमान हैं वे परमाणु जैसे मानो देखो, वर्षा काल आ करके देखो, पर्वतों की माला मानो देखो, निचली स्थलियों पर आने लगते हैं उसी प्रकार विज्ञान की मानो देखो, परमाणुवादों की जो तरंगें हैं उनमें देखो, भिन्नता आ गई हैं मैं यह कहता रहता हूँ क्यों है मैं साम्यवाद की चर्चा इसीलिए कर रहा हूँ यदि याग हो जाएं देवता जन प्रसन्न हो जाएं तो परमाणुवाद मानो देखो, अपनी स्थलियों से द्वितीय स्थलियों पर नही जा सकता क्योंकि याग राजा को करना चाहिए प्रजा में होना चाहिए परन्तु देखो, इस प्रकार के जो विचार है इस प्रकार का जो वेद का साम्यवाद है वह यह कहता है कि यागिक बने रहो मैं यह दृष्टिपात करता रहता हूँ मैनें अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा है जिस स्थली पर हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो देखो, वहाँ नाना प्रकार के देखो, रूढ़िवादी प्राणी भी रहते हैं आधुनिक काल रूढ़िवाद से बड़ा सम्पन्न हो रहा हैं रूढ़िवादों का बड़ा नृत्त हो रहा हैं मानो देखो, यहाँ मोहम्मद के मानने वाले और भी नाना प्रकार के विचारार्थ प्राणी रहते हैं परन्तु एक दूसरे के विचारों में बड़ी विडम्बना हैं बड़ा मानो देखो, मतावलम्ब है विचारते रहते हैं कि यह जो याग हो रहे हैं यह मानो हमारे प्राणों के हमारे लिए प्रतीत नही एक समय क्या होगा ऐसा विचारते रहते हैं मैं यह कहता रहता हूँ मैं यह

कहता रहता हूँ कि हे भोले प्राणियों क्या तुम चाहे मोहम्मद के मानने वाले हों चाहे ईशा के मानने वाले चाहे मानो देखो, तुम नाना प्राणियों को भक्षण करते हों उस काल में तो नही विचारते कि हमारे लिए क्या होना हैं परन्तु जहाँ याग होते हैं जहाँ सुगन्ध आती है जो हमारी प्राचीनता जो मानव का सबसे महान क्रियाकलाप हैं जब मैं यह विचारता हूँ तो आश्चर्य और दृष्टिपात करता हूँ तो आश्चर्य आता हैं क्या मानो देखो, यह जो सुगन्ध है। यह उनके गृहों में नही उनके मानो देखो, दर्शनों में उनकी घ्राण इन्द्रियों में भी यह सुगन्ध जाती हैं। इसको वह नष्ठ नही कर सकते। परन्तु ऐसा साम्यवाद है ऐसी साम्य चक्रिका है जिसको कोई भी प्राणी मानो देखो, पान किये बिना रह सके, विचार आता है विचारं ब्रहे परन्तु देखो, इसको हम देव याग कहते हैं, जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, वायु पवित्र होती है वायु देखो, अग्नि को पवित्र करती हैं वायु देखो, जल का शोधन कर देती हैं और जल पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश हो जाता है मानो यही प्राण सता को प्रदान करने वाला हैं मेरे पूज्यपाद गुरूदेव देखो, याग का नाम ही साम्यवाद हैं ऐसा साम्यवाद यह चक्र है जिसको धारण करने के पश्चात मानव का जीवन एक महानता की वेदी पर आ जाता हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आज मै जो आपको परिचय देना चाहता हूँ द्वितीय साम्यवाद का, जब यज्ञमान मानो देखो, याग करता है वह देव याग से वायुमण्डल पवित्र हो गया हैं वह कहता है कि वायुमण्डल में रहने वाला, जो प्राणी मात्र है मानो देखो, यज्ञमान कहता है मैं सभी का सेवक हूँ, मानो सभी को मुझे अर्पित करता है वह अपने कर्मकाण्ड की पद्धति में, याग ब्राह्मणजन जाता हैं, पुरोहित जाता है जैसे ब्रह्मा अध्वर्यु जाता है तो वेद के कुछ आख्यिकाएं मन्त्र हैं मानो देखो, वह प्रत्येक प्राणी के लिए याग करता हैं। वह अतिथि याग करता है अतिथि कौन है? किसी भी गृह के पति पत्नी और बाल्य बालिका उनके गृह से कोई भी महापुरूष आ जाएं प्राणी आ जाएं मानो कोई अज्ञान अतिथि आ जाएं, उसको भोज कराता है, उसको भोज कराने का नाम हमारे यहाँ मानो देखो, उसे हमारे यहाँ अतिथि याग कहा जाता हैं वह अतिथि याग है, अतिथि याग मानो कौन है मानो कोई भी अतिथि आ जाएं उसको भोज्य कराना उसका आदर करना मानो देखो, उसकी पूजा, पूजा का अभिप्रायः यही है कि उसकी इच्छाओं को पूर्ण करना हैं परन्तु देखो, द्वितीय याग है, वह मानो जो इससे पूर्व याग है, वह पितर याग हैं, **हमारे यहाँ पितरों की कोटि में यह सर्वत्र जगत के प्राणी आते हैं** मानो देखो, जितने पितर जन हैं, मातृ जन है, महापिता है, पड़ पिता हैं, वह भी संसार में राजा भी हमारा मानो पितर कहलाता है जो अनुशासन करता कराता है मानो देखो, और भी पितर कहलाते हैं जैसे आचार्य जन हैं, मानो देखो, पितर याग करना है, उनकी पंक्ति लगी हुई हैं और भोज्य कराना है मानो पुरोहित जन है, वह सब मानो पितर कहलाते हैं, आज हम

पितरों की कोटि में प्रवेश कर जाते हैं तो मानो वही बाल्य ब्रह्मे मानो देखो, वही उनकी सेवा करते रहते हैं उनकी सेवा करने का नाम पितर याग है, परन्तु इसके पश्चात वह मानो देखो, सब देखो, नाना प्रकार के प्राणी है, जो प्राणी मानो जैसे कुतर है, मानो बिल्ल है, कृतिका है, उन सबको मानो यज्ञमान अपनी इच्छानुसार भाग देता हैं मानो अरे, यहाँ यह जो बड़ा विचित्र है वेद का साम्यवाद है। जहाँ मानव के लिए नही प्राणी मात्र के लिए मानो जो अपने में से ग्रास प्रदान करता रहता हैं यह कितना विशाल साम्यवाद है परन्तु देखो, वेद का साम्यवाद रहा जहाँ वह याग भी करता है, जो प्राणी चले गये हैं परन्तु देखो, ऐसा विश्वसनीय है, क्या अन्तरिक्ष में आत्मा भ्रमण कर रही हैं मानो देखो, जल के द्वारा अन्न के द्वारा उन प्राणियों के प्रति भी मानव श्रद्धांजलि करता है विचार देता है यह साम्यवाद कैसा साम्यवाद हैं जब राजा मानो देखो, वह साम्यवादी राजा कहलाता है वह समाज कहलाता हैं, जिस समाज में मानो देखो, प्रत्येक गृह में याग होना ब्रह्मयाग होना, देव याग होना अतिथि याग होना, पितर याग होना, बलि वैश्व याग होना, मानो देखो, यहाँ यागों की क्रिया होती रहती हैं। याग का अभिप्रायः है क्या कोई भी प्राणी देखो, राजा के राष्ट्र में, समाज में, मानो देखो, अन्न जल से विमुख न रहे उसका नाम साम्यवाद कहलाता है। परन्तु देखो, यह तो साम्यवाद हुआ, जिस साम्यवाद में, प्रत्येक मानव मानव का प्रिय बन करके मानो देखो, उसकी आभा में रत्त हो जाता हैं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आदि ऋषियों ने मानो देखो, इस प्रकार की साम्यवाद की चर्चा की हैं।

आज मैं आधुनिक काल, के साम्यवाद पर आना चाहता हूँ, आधुनिक काल का साम्यवाद, वह कहलाता हैं जो मानो देखो, द्रव्यपति है आधुनिक काल का साम्यवाद वह है जो दूसरे के मानो देखो, द्रव्य का शोषण करके अपने को कहता है मैं साम्यवादी हूँ, मानो देखो, आधुनिक काल का साम्यवाद वह है जो एक दूसरे राष्ट्र को अपने नीचे दबा करके मानो देखो, अपने राष्ट्रवाद का प्रसारण करना चाहता हैं आधुनिक काल का साम्यवाद यह कहता हैं, आधुनिक काल का साम्यवादी कहता है, क्या परमपिता परमात्मा को मानो देखो, नाम मात्र कहलाता हैं। आधुनिक काल का साम्यवाद यह कहता है क्या ब्रह्मे मानो देखो, मैं अपने को ऊँचा बनाऊं, मैं साम्यवाद के लिए प्रश्न करता रहता हूँ, क्या मानो देखो, जब एक-दूसरे को दमन करके और और अपने में ऊर्ध्वा में बनना चाहते हो, तो यह साम्यवाद नही कहलाता है। वास्तव में साम्यवाद वह कहलाता हैं जहाँ साम्य प्रवृत्तियां बन जाती है जहाँ सामान्य जिसका आहार और व्यवहार बन जाता हैं आज मानो देखो, मैं किसी भी राष्ट्र में जाना चाहता हूँ, किसी भी राष्ट्र की प्रतिक्रियाएं, आधुनिक जगत का जब मैं वर्णन करना चाहता हूँ, तो नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं का निर्माण हो रहा है और वह मानो देखो, साम्यवादी निर्माण कर रहे हैं जो

साम्यवाद की घोषणा करते हैं, मैं यह जानना चाहता रहता हूँ, मेरी यह प्रक्रिया रही है, क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों की वन्दना करता हुआ, यह उच्चारण करता रहता हूँ क्या जिस काल में साम्यवाद है प्रजा को समाज को एक दूसरे को साम्यता देने वाला उसको अणु और परमाणुओं की आवश्यकता क्यों होने लगी अणु और परमाणुओं की आवश्यकता तो वहाँ होती है जहाँ द्वेष होता है मानो देखो, एक यह भी कि मानव अपनी जानकारी करना चाहता है नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करना चाहता है आधुनिक काल में प्रत्येक मानव चिन्तित हो रहा है कि इसका विज्ञान का बनेगा, क्या इस विज्ञान का परिणाम क्या होगा।

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह प्रश्न किया था, और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें यह निर्णय भी कराया, और मैं भी आधुनिक काल के जगत को दृष्टिपात करके ये कहा करता हूँ कि देखो, यह अणु और परमाणु मानो देखो, जिनका निर्माण हुआ हैं, निर्माण हो रहा है और मानो देखो, मानव की जितनी वाणी है, वह माता-पिता के रूप की वाणी हो चाहे विद्यालय की वाणी हो, चाहे देखो, राष्ट्रीयता की वाणी उसको उद्घोष कहते है उस वाणी से वायु मण्डल देखो, भुः भुवः यह दोनो अशुद्ध हो गये हैं और दोनो के अशुद्ध होने से ही वाणी के कारण यही शब्द मानो देखो, आभा में निहित होते रहते हैं, यही शब्द मानो देखो, इन्हीं शब्दों के कारण गृह अपवित्र कहलाते हैं और राजा के राष्ट्रों में भी अपवित्रता आ रही है देखो, जब मैं यह विचारता हूँ वेद के वांगमय में प्रवेश करता हूँ या गम्भीर यौगिक मुद्रा में सदैव हम जाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है क्या मानो देखो, यह जो विचारों की समूहता के साथ विद्यमान हैं जो द्यौ लोक में प्रवेश करते हैं जो द्यौ लोक में मानो देखो, अपनी स्थिति किये हुए हैं उनका अणु और परमाणु बन करके वही निचली स्थलियों पर आना चाहते हैं आ रहे हैं परन्तु देखो, उसी को दूषित वायु मण्डल कहते हैं इसी को मानो देखो, दूषणता कहते हैं जब मैं यह विचारता हूँ कि हे भोले प्राणियों! तुम्हें अपने कर्तव्य का पालन करना हैं, जब तुम अपने कर्तव्य का पालन करोगे, तो यह यह विज्ञान अनूठा बन करके, यह विज्ञान महान बन करके मानो देखो, एक आभा में निहित हो जायेगा। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, महर्षि भारद्वाज मुनि के विचारों से मानो देखो, उनके विचार बड़े विचित्र हैं जो कागभुषुण्ड जी महाराज ने अपने विचार दिये हैं, लोमश मुनि के सहित, वह बड़े विचित्र हैं। आज मैं आधुनिक काल के मानो आध्यात्मिक वेत्ताओं से यह कहता रहता हूँ, क्या तुम आध्यात्मिकवाद का प्रगट तो करते रहते हो, परन्तु देखो, आध्यात्मिक तुम्हारा जो मार्ग हैं वह तुम विपरीत जा रहे हो। हमारे यहाँ पुरातन काल में, जहाँ नाना ऋषि-मुनियों की विचारधाराएं परिणत होती है, परन्तु आज नाना प्रकार के रूढ़िवादी है, वह जो रूढ़ियाँ, मैंने कल भी रूढ़ियों की चर्चा की, जो धर्म

के नामों पर, ईश्वर के नामों पर, जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ है, वे रूढ़ियों से जितने अध्यक्ष महोदय हैं, वह सब मानो देखो, ब्रह्म ही ब्रह्म कहते हैं, अपने को सब ब्रह्म कहते हैं परन्तु यदि कोई प्राणी उनके शरीर से स्पर्श कर जाता है, तो ब्रह्म की आभा को सबको नष्ट कर देते हैं। वहाँ ब्रह्म नही रहता, क्योंकि वहाँ दुखद हो रहा हैं। विचार आता है कि ब्रह्म तो मानो देखो, हिंसक प्राणी में भी है, अहिंसा में भी विद्यमान है। विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय किया, क्या जब तब यह समाज मानो देखो, अपने को ब्रह्म कहता हुआ, लज्जित नही होता, जब तक आध्यात्मिकवाद का उत्थान नही हो सकता, और आध्यात्मिकवाद जब ऊँचा बन जायेगा। मानो देखो, अणु और परमाणुओं की प्रतिभा नष्ट हो जायेगी।

विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल से कहा है क्या एक योगी हो जाएं संसार में मानो जो परमात्मा के प्राणों से और मन का समन्वय करने वाले हो, एक सहस्र राजाओं के तुल्य कहलाता हैं। विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाते हुए कई वाक् मैंने पूर्व काल में प्रगट किये थे। आज मैं यह विचार दे रहा हूँ कि मानव का साम्यवाद, मैं साम्यवाद की चर्चा कर रहा हूँ, दोनों प्रकार के याग हमारे समीप रहते हैं दोनों प्रकार के मानो विचारों में हम भ्रमण करते रहते हैं जहाँ हम यागों में साम्यवाद हैं वेद का साम्यवाद भिन्न है आधुनिक काल का साम्यवाद भिन्न कहलाता हैं वेद का साम्यवाद यह कहता है कि अहिंसा परमोधर्मी बनो और देखो, जो साम्यवाद आधुनिक काल का है वह यह कहता है क्या भक्षणं ब्रह्मे देखो, प्राणियों का भक्षण करो जिससे अन्न की पूर्ति हो जाएं ऐसा मानव कह रहा है ऐसा मानव क्यों कह रहा है क्योंकि अज्ञान है कर्तव्यवाद में विज्ञान का दुरूपयोग हैं विज्ञान के दुरूपयोग में कोई मानव यह चाहे, क्या मैं आध्यात्मिकवाद को ऊर्ध्वा में ले जाऊं, तो मानो असम्भव प्रतीत होता होगा। आज विज्ञान का दुरूपयोग है, जब मैं यह विचारता रहता हूँ, मैं विद्यालयों में मानो किसी भी स्थली पर भ्रमण करूं जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि विचार क्या हैं मानो देखो, माता-पिता कहाँ जा रहे हैं माता-पिता के गृह में मानो बाल्य का जन्म हुआ, वह युवा हो गया हैं मानो वह युवा हो करके चर्चा करता है नृतिकाओं की, वह चर्चा कर रहा है विज्ञान मानो चित्रावलियां की, अरे, राजन! तू चाहे कि मेरा राष्ट्र आज ऊँचा बन जाएं यह असम्भव हैं परन्तु देखो, जब तक तेरे यहाँ विज्ञान का दुरूपयोग होगा, हे संसार के प्राणियों! जब तक तुम्हारे विज्ञान का दुरूपयोग होगा, न तो तुम्हारा विद्यालय ऊँचा बनेगा, और न तुम्हारा समाज ऊँचा बनेगा, परन्तु देखो, वह एक दूसरे के रक्त का पान होता रहेगा। परन्तु देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था पूज्यपाद गुरुओं ने वर्णन करते हुए कहा था मैं तो उनके वाक्यों को पुनरूक्ति कर रहा हूँ मैं उनके विचारों की पुनरूक्ति करता रहता हूँ आज माता-

पिता है अपने बाल्यों को ले करके जब मानो देखो, नृतिकाओं के समीप विद्यमान होते हैं अरे, उनका ब्रह्मचर्य कहाँ चला गया मानो देखो, मैं जब विचारता रहता हूँ भगवान राम की जीवन जब मानो देखो, विद्यालयों में विराजमान हो करके वशिष्ठ और अरूणधती के चरणों की वन्दना करते वह अपने में विज्ञान वेद के विज्ञान, को ले करके वेद के साम्यवाद को ले करके, राम का पवित्र जीवन व्यतीत हो रहा हैं आधुनिक काल का राष्ट्र आधुनिक काल का राष्ट्र गुरु के चरण को प्राप्त होते नही क्योंकि जब तक राजा को ऊर्ध्वा में विचार देने वाला ब्रह्मवेत्ता नही होगा राजा कदापि ऊँचा नही बनता। मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा था कि जब देखो, राम राज्य का निर्माण कर रहे थे विष्णु राष्ट्र की स्थापना कर रहे थे उस समय वशिष्ठ और माता अरूणधती मानो देखो, राम को शिक्षा दे रहे हैं राम को कहते हैं तुम्हारा चरित्र महान होगा मानवता ऊँची होगी तो तुम्हारा राष्ट्र पवित्र होगा मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव के मुखारबिन्दु से श्रवण किया गया, क्या जिस समय देखो, गंगोत्री अपने जीवन को समाप्त करने लगी तो महाराजा शान्तनु से यही कहा कि हे पति देव! मेरा तो देव लोक को गमन हो रहा हैं, मैं तो अपने लोक को जा रही हूँ परन्तु देखो, यह जो राष्ट्र है, आप राजा बन रहे हैं, राजा हैं, परन्तु देखो, किसी भी द्वितीय मानो देवी के प्रति तुम्हारा दुष्विचार नही होना चाहिए आज मैं यह विचारता रहता हूँ आधुनिक काल का राष्ट्र आधुनिक काल के मानो देखो, कर्णधार जब मैं यह विचारता हूँ, जब पति, पत्नियों को त्याग करके नाना देवियों के सतीत्व को हनन किया जाता है चाहे वह तो यह राष्ट्र कैसे ऊँचा बनेगा जहाँ पुरातन वैदिक विचारों को ले करके हम चलते हैं तो हमें यह प्रतीत होता है कि हमें अपने जीवन को कहाँ पंहुचाना है जब मेरी पुत्रियाँ चित्रावलियों में नृत्यं करती हैं तो बाल्य बालिका दोनों का जीवन भ्रष्ट हो रहा हैं आज हमारी सन्तान युवक समाज पवित्र बने राष्ट्र ऊँचा बने यह असम्भव हैं। आज संसार में यह अग्नि प्रदीप्त हो रही है, कौन राष्ट्रवेत्ता ऐसा है जो इस अग्नि को नष्ट कर सकता हैं कोई राष्ट्रवेत्ता ऐसा प्रतीत नही हो रहा हैं।

आधुनिक काल में जो कुरूतियां हैं उनको विचारना है, हे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम एक स्थली पर विद्यमान हो करके तुम एक दूसरे को नष्ट करने की मत विचारों कि राष्ट्र में चरि कैसे आये? परन्तु आधुनिक काल के राजा एकत्रित होते हैं तो ऐसी-ऐसी वार्त्ता प्रगट करते हैं कि अमुक राष्ट्र में क्या और क्यों संग्राम हो रहा हैं? परन्तु जब सब राजा विद्यमान हो करके विचारेंगें कि विज्ञान का दुरूपयोग नही होना चाहिए, नृतिका नही होनी चाहिए और बाल्य जब उनके चरित्रों को दृष्टिपात करेंगें, तो विज्ञान का सदुपयोग होगा विज्ञान का सदुपयोग होगा तो कर्तव्यवाद आएेगा, तो विद्यालय राष्ट्र और समाज पवित्रता की वेदी पर विद्यमान हो जाएगें। जिस काल में

प्रत्येक मानव अपनी यह पुकार कर रहा है कि मुझे अधिकार प्राप्त होना चाहिए मानो जो व्यवसाय करने वाले हैं वह तो अपने से कहते हैं कि हमें अधिकार प्राप्त हो उनके सेवक कहते हैं कि हमें अधिकार प्राप्त हो राजा कहता है कि मैं अधिकार चाहता हूँ, सभी अधिकार चाहते हैं, कर्तव्य कोई नही कर पाता, तो यह समाज कैसे पवित्र बनेगा।

अरे, जिस राष्ट्र में प्रातःकाल होते ही नाना प्राणियों के रसों का पान किया जाना हो, नाना प्रकार के प्राणियों को नष्ट करके अपनी जीविका को ऊर्ध्वा में लाया जाता हो यह राष्ट्र कैसे अहिंसा परमोधर्मी बनेगा। हे राजन! तुझे अहिंसा परमोधर्म को लाना है। अहिंसा परमोधर्म तेरे राष्ट्र में जब आएगा, तब तू स्वतः अहिंसा परमोधर्मी बनेगा। प्रजा में महानता आ जाएगी। उस महानता का परिणाम यह होगा, कि प्रत्येक मानव कर्तव्यवादी बनेगा राजा जब कर्तव्यवादी होता है, जब उसके गुरुजन कर्तव्यवादी होते है, जब ब्रह्मवेत्ता गुरुजन होते हैं आधुनिक काल के जो राजा हैं, उनका कोई आचार्य ब्रह्मवेत्ता नही हैं आधुनिक काल में जो विचार देते हैं वह राजा से निचली श्रेणी के होते हैं। यह नीचे विचार देते है तो मानो यह विचार कोई महान नही हुआ करते।

राष्ट्र की उच्चता का आधार

जब भगवान राम लंका को विलय करने के पश्चात अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो गये, तो विभीषण जी ने का कि मैं राम को अपने यहाँ अन्न पान कराना चाहता हूँ, उस समय राम ने अपनी गोष्ठियां की, विचार-विनिमय करने लगे कि मैं क्या करूं। उस समय उनमे महा-पुरोहित कौशलिक ऋषि महाराज उनके आश्रम में आऐ और हनुमान जी को उन्होंने कहा कि जाओ राम से कह दो कि इस निमन्त्रण को स्वीकार न करे, राम ने उस निमन्त्रण को स्वीकार नही किया। क्योंकि राम स्वतः भी जानते थे कि उनके कुटुम्ब का लंका में संग्राम हुआ था, वह राम को भी नष्ट कर सकते थे। इस प्रकार की विचारधारा जब आचार्यजन देते हैं, तो यह विचारधारा महानता में होती हैं, जब राम अयोध्या के राष्ट्र की स्थापना कर रहे थे तो वशिष्ठ ने कहा कि तुम्हें सुचरित्र और महानता का गमन करना है सीता से कहा कि तुम्हें भी महानता का गमन करना हैं जब सर्वत्र एक महातना की वेदी पर आ जाते हैं तो समाज में बुद्धिजीवी प्राणी वेद का प्रकाश और नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नष्ट होना ही मानवीयता और राष्ट्र का ऊर्ध्वा में गमन करना हैं। प्रत्येक मानव राष्ट्र में शान्ति से रहे अपने कर्तव्य का पालन करने वाला हो और साम्यवादी विचारधारा को अपना करके एक दूसरा प्राणी प्राणी का सहयोगी बना रहे विचारधारा यह होती है इस विचारधारा को कौन देता हैं इस विचारधारा को ब्रह्मवेत्ता देता हैं और ब्रह्मवेत्ता जब तक राजा के राष्ट्र में नही होंगे जब तक राष्ट्र ऊँचा नही बना करता।

कर्तव्यवादी को अधिकार

विचार क्या कि मैंने ऊर्ध्वा में एक वाक्य कहा था कि पाण्डितव वह होता है जो निर्वाचन प्रणाली को पवित्र बना सके निर्वाचन प्रणाली में बुद्धिमानो का संग होना चाहिए और बुद्धिमान भी तपस्वी हो प्रत्येक मानव को मानवता की दृष्टि से मानव का अधिकार दिया जाना चाहिए अधिकार भी जब दिया जाना चाहिए जब वह कर्तव्यवादी हो। राजा कर्तव्य का पालन करने वाला हो तो उसे अधिकार तो स्वतः प्राप्त हो जाता हैं एक मानव पुरूषार्थी बना हुआ है पुरूषार्थ कर रहा हैं तो देखो, उसको अधिकार स्वतः प्राप्त हो रहा हैं कर्तव्यों के पश्चात अधिकार तो प्राप्त हो जाता हैं आज बुद्धिमानो का कर्तव्य है चाहे वह राष्ट्र का निर्वाचन करने वाले हों वेद के मर्म को जानने वाले जो पाण्डितजन ब्रह्मवेत्ताजन हैं उन्हें नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नष्ट कर देनी चाहिए। जब तक राजा मे रूढ़ियाँ बनी रहेंगी उनकी ईश्वर वाद के ऊपर श्रद्धा नही होगी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा था कि परमपति परमात्मा तो राष्ट्रवेत्ता है वह राजा है वह धिराज हैं यह स्वीकार करके मानो उसका सेवक बन करके राजा सेवना नही करेगा तो उसका राष्ट्र समाप्त हो जायेगा। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा चाहूँगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने आज बहुत-सी वार्त्ताएं सामाजिक पद्धतियों के आधार पर, और उनमें जो त्रुटियां थी, प्रगट की, उग्रता के क्षेत्र मे ऋषियों ने कहा था कि चन्द्रमा परमपिता परमात्मा हैं, क्योंकि वह अमृत देता हैं और वह उत्पति के मूल में रहता हैं, ऋषि पिप्लाद ने कहा था कि ऐसा नही है, यह तो एक शिक्षा है जैसे माता-पिता अपने बाल को योग्य बनाने के लिए शिक्षा देते हैं, इसी प्रकार जिज्ञासुओं ने ऋषि को से कहा कि हम सूर्य को भगवान स्वीकार करते हैं, ऋषि ने कहा कि इसका जो प्रकाश है, वह अनुपम है, ऊर्ज्वा युक्त हैं जो खनिजों के मूल में रहता हैं और प्रकाश की आभा में रत्त रहता है। इसीलिए यह सूर्य भी जैसे माता-पिता अपनी सन्तान को ऊँचा बनाना चाहते हैं या गुरु शिष्य को ऊँचा बनाना चाहता है तो यह साधारण एक व्यवस्था एक विचार है यह तो बेटा! एक बड़ी विचित्र माला है जिसको अभी मैंने प्रगट किया।

आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने साम्यवाद की चर्चा की परन्तु यह साम्यवाद कहा से ले आते हैं भगवान मनु के यहाँ नाना ऋषि विद्यमान हुए यह तो वाक्य यथार्थ है उन्होंने राष्ट्रवाद का निर्माण किया और राष्ट्रवादों में उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचना की, परन्तु उन अर्थों में सबसे प्रथम भगवान मनु ने और ऋषियों ने यह माना कि सुयोग्य राजा और राष्ट्र की प्रणाली पवित्र हो और राजा यागिक और ब्रह्मवेत्ता हो, ऐसा भगवान मनु ने वर्णन किया है। परन्तु इन्होंने इन वाक्यों की पुनरूक्तियां की, विचार यह कि इनका विचार, साधारणतव रूप में बड़ा विचित्र रहा है, रहा विज्ञान, इनका विज्ञान और विज्ञान के ऊपर हम अपनी टिप्पणीयाँ कल

प्रगट करेंगें। क्या विज्ञान अपने में कैसा अनूठा हैं, और आधुनिक काल के विज्ञान की चर्चाएं, मेरे पुत्र ने अभी-अभी प्रगट कीं और इन्होंने भौतिक विज्ञान के सम्बन्ध में सबसे प्रथम विज्ञान के मानो युग की चर्चा की हैं विज्ञान का दुरूपयोग नही होना चाहिए। विज्ञान के दुरूपयोग के काल में मानो राष्ट्र और समाज दोनों नष्ट हो जाते हैं, ऐसा प्रायः कही मानो देखो, राजाओं के यहाँ ऐसा हुआ हैं। वह चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वाक् मानो समाप्त होने जा रहा हैं।

७ ऊर्ध्वा में कर्तव्य 07 03 1987

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणागान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं मानो वह सर्वत्रता में ओत-प्रोत हैं वह महान और विचित्रतव कहलाता हैं। जब हम यह विचारते रहते हैं कि हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता हैं, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने और परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में मानो ऋषि-मुनि अपना विचार-विनिमय करते रहें है। उन विचारधाराओं में आदि आचार्यों ने बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार की आभाओं का प्रायः वर्णन किया है अथवा उसके गुणों का गुणवादन, अपनी वर्णन शैली में उद्गीत रूपों में गाने लगते हैं, तो हमारा प्रायः हृदय पवित्रतव हो जाता है। संसार में प्रत्येक प्राणी चाहे वह किसी भी लोक-लोकान्तरों में रमण करने वाला हो, चाहे वह पृथ्वी मण्डल पर हो, परन्तु सर्वत्र प्राणी की एक ही पिपासा रहती है, कि मैं आनन्दवत में प्राप्त हो जाऊं, और मुझे हर प्रकार का, नाना प्रकार का, आनन्दवत मुझे प्राप्त हो जाएं।

तो मेरे प्यारे! जितने भी मानव नाना प्रकार के अनुष्ठान करता हैं नाना प्रकार के यागों में सम्वृत्तियों में रत्त हो जाता हैं चाहे वह भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ान उड़ने वाला हो परन्तु उस उड़ान उड़ने वालों ने, अपनी-अपनी आभाओं में सदैव रत्त रहने वाला, मानो अपने में अभ्योदय होता रहता है, और यह विचारता रहता है कि मैं आनन्दवत हो जाऊं, मानो एक राजा राष्ट्र का पालन कर रहा हैं, वह नाना प्रकार के विचारों में वही अपना उद्गीत गाता हैं क्या मेरा राष्ट्र मेरी प्रजा में महानता का दर्शन हो जाएं। एक सूत्र में प्रत्येक मानव सूत्रित हो जाएं, तो यह हमारे यहाँ, परम्परागतों से और वेद के वांगमय में चिन्तन करने वालों ने प्रायः इस प्रकार की कल्पनाएं और विचार-विनिमय किया हैं। आज मैं उन विचारों में न जाता हुआ, केवल यह कि मानव इतना आनन्दित कैसे हो सकता हैं? उस आनन्द को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं? जिस आनन्द के लिए माता भी पिपासी रहती हैं, पिता भी पिपासी रहता है माता पिता भी यह चाहते हैं कि हमारा गृह स्वर्ग बन जाएं मानो गृह में एक आनन्दवत हो जाएं और इससे ऊर्ध्वा में जाता है मानो वह विज्ञान में जाता है तो अपने अन्तर्हृदय में एक परमपिता परमात्मयी चेतना को, अपने में धारण करने वाला वह धारण करने के लिए तत्पर होता है, यह कहता है कि मैं धारयामि बन जाऊं और मैं इसको अपने हृदय में धारण करने लगूं मानो देखो, इस प्रकार उसकी विचित्र अपनी आन्तरिक विचारधारा होती हैं।

इससे पूर्व काल में, मेरे प्यारे महानन्द जी राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहे थे कहीं साम्यवाद के ऊपर विचार दे रहे थे कहीं मानो देखो, वह साम्यवादी विचारों को प्रगट कर रहे थे आज मैं उन विचारों में न जाता हुआ, मेरे पुत्र ने एक वाक् बहुत प्रियतम कहा था क्या संसार में ऋषि-मुनियों का एक जो मन्तव्य है, अथवा ऋषि-मुनियों का जो विचार रहा है, कि मानव का अनुशासन मानव का अनुशासन, मानो देखो, वह राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं। मानव के हृदय में, जब मानव हृदयग्राही बन करके और विद्या का अध्ययन करता हैं और विद्यालयों में अनुशासित प्राणी मानो देखो, अपने में प्राणवर्द्धन करने लगता है और प्राण वर्चोसि बन जाता है मानो देखो, राजा के राष्ट्र में, एक मानवीयता का प्रसार हो जाता हैं। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक वाक् और बड़ा विचित्र प्रगट किया, क्या प्रत्येक इन्होंने रूढ़िवादियों की चर्चाएं की, परन्तु मैं यह वाक् इतना नही जानते, क्या रूढ़िवादी क्या है? परन्तु जो ईश्वरवाद के ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार होते रहते हैं, अथवा भिन्न-भिन्न प्रकार की जो धाराएं हैं, उनमें जो मानव रत्त रहना चाहता हैं, वही उसके मानवीय दार्शनिक, मानवीय विचार और मानव को ऊर्ध्वा में ले जाने वाले हैं।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेषता में तुम्हें नही ले जाऊंगा, आज मैं तुम्हे उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि-मुनि प्रत्येक स्थलियों पर विद्यमान हो करके, प्रत्येक वस्तु के ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं। मेरे पुत्रों! उन्होंने याग के सम्बन्ध में, जैसा इन्होंने उच्चारण किया, कि साम्यवाद, एक साम्यवाद क्या हैं? उनकी दृष्टि ऋषि-मुनियों का विचार हैं, ऋषि-मुनियों ने अपने अकाटय विचार दिये हैं और तप करने के पश्चात, उन्होंने अपने विचार दिये हैं, मानो जब मुझे ये तो यहाँ नाना ऋषि-मुनियों के, एक विचार मुझे स्मरण आने लगते हैं, इन विचार धाराओं में मानो एक विचार है कि हम अपनी प्रतिभा को ऊँचा बनाना चाहते हैं मानो देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, भगवान राम का वह राष्ट्र, स्मरण आता हैं जब भगवान राम मानो देखो, लंका को विजय करने के पश्चात, उन्होने देखो, बारह वर्ष का तप किया, और बारह वर्षों तक उन्होंने अपने प्रवृत्ति का शोधन किया जो मानो देखो, रजोगुण प्रवृत्ति हैं, उनमें मानो देखो, नर संहार की वार्त्ता आई, या अपने राष्ट्र के लिए, या अपने कर्तव्य के लिए मानो जो कर्तव्यवाद करता रहता है मानो देखो, उन्होने उसी प्रकार ब्रह्मणां ब्रहे अो अस्तुति उन्होंने मेरे पुत्रों! देखो, तप करने के पश्चात, अपनी राष्ट्रीयता का निर्माण किया, वास्तव में राष्ट्रीयता का निर्माण तो महाराजा भरत ने ही कर दिया था, परन्तु देखो, राम जब मानो लंका से अयोध्या में आये तो उन्होने एक वाक् अपने विधाता से कहा, कि हे भरत! मानो मेरी इच्छा यह है, कि मैंने जब इस प्रकार का तप किया है, तो मैं राष्ट्रवाद में मुझे पूर्णरूपेण क्यों प्रवेश करना चाहते हो? मेरे पुत्रों! देखो, उस

समय महाराजा भरत ने और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा कि हे राम! देखो, तुम्हें इसीलिए धिराज बनाना चाहते हैं, क्या राजा के राष्ट्र में प्रजा में, यदि राजा तपस्वी नही होगा, राजा तप में नही होगा, तो वह अपने राष्ट्र को ऊँचा नही बना सकता। इसीलिए आज हमारी इच्छा यह है, कि तुमने जो तप किया है, तुम्हारा जो रजोगुण, जो तमोगुण, जो लंका में तुमने संग्राम किया वह मानो देखो, उसका तुमने अनुष्ठान किया, क्या मेरी जो प्रवृत्ति थी, वह मुझसे दूरी हो जाएं और तुम्हारा हृदय पवित्र बन गया है, और तुम्हारे हृदय में नाना प्रकार की सात्विक विचारधाराएं, मानो प्रायः हमें दृष्टिपात आती रहती हैं क्योंकि बिना मानो सात्विक विचार के, सात्विक अपने जीवन को बनाये बिना, मानव के अन्तर्हृदय में शान्ति नही हुआ करती है क्योंकि राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी भी होने चाहिएं तपा हुआ, राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी इसीलिए और राजा के राष्ट्र में ईश्वरवाद के ऊपर, परमपिता परमात्मा के नामों के मानो देखो, नाना प्रकार के रूढ़ियाँ, विचारधारा न बन जाएं, क्योंकि बुद्धिजीवी प्राणी की आवश्यकता इसीलिए होती हैं, जब मानो देखो, माता अपने पुत्र को निर्माणित कर देती और अपने पुत्र का निर्माण कर देती है, अपनी लोरियों का पान कराते-कराते, अपने विचारों को दे करके मानो बुद्धिजीवी बन करके, वह माता के नामोकरण का उद्गीत गाता हैं माता के हृदय को ऊँचा बनाता हैं, तो इसीलिए मैंने पुरातन काल में यह वर्णन करते हुए कहा था जब माता के तपस्या में रत्त रहना चाहिए, क्योकि तपश्चर ही तो मानव को ऊँचा बनाता है, जब माता गृह को ऊँचा बनाना चाहती हैं, राजा राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता हैं क्योंकि राजा में भी पालन करने की प्रवृत्ति होती हैं और माता में भी पालन करने की प्रवृत्ति, उसे स्वतः प्राप्त रहती हैं तो मानो देखो, दोनों एक ही सूत्र के मनके कहलाते हैं, परन्तु देखो, आज का हमारा, यह विचार भगवान राम ने जब देखो, भगवान राम ने यह वाक् जब श्रवण किया, श्रवण करने के पश्चात राम ने कह-प्रभु! मैं यह चाहता रहता हूँ, क्या मेरा तो तपोमय जीवन है वह तपोमयी बना रहे और राष्ट्रीयता का निर्माण भी प्रायः होता रहे मेरे प्यारे! यह भरत ने वाक् स्वीकार कर लिया, मुनिवरों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा हैं, ऐसा प्रतीत होता रहता है, क्या मुनिवरों! देखो, राम ने जब राष्ट्रीयता का निर्माण किया, तो उन्होंने सबसे प्रथम समाज को यह कहा कि हे समाज यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं राष्ट्रीय मानो देखो, राष्ट्र का पिता बन जाऊं सब प्रजा ने एक स्वर में कहा बुद्धिजीवी प्राणियों ने कहा क्या बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! देखो, वह जब राष्ट्र का पालन करने लगे, राष्ट्रं ब्रह्मा मानो देखो, राष्ट्र के नियमावली को, उन्होंने अपनाया। मेरे प्यारे! देखो, इतने में ही और ऋषि-मुनियों के प्रश्न उत्तर होने लगे, महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश मुनि महाराज मानो देखो, जब राम के समीप आये, जब राम को राज्यभिषेक होने वाला था तरे

राम को यह दायित्व दिया गया, कि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है।

तो मुनिवरों! देखो, उस समय कागभुषुण्ड जी ने, राम से कहा कि हे राम! तुम इस राष्ट्र को क्यों अपनाना चाहते हो? मानो तुम्हारा इसमें कौन की स्वार्थपरता हैं, जब तुम्हें परमपिता परमात्मा ने जीवन तपस्या के लिए दिया हैं, तो मेरे प्यारे! भगवान राम ने बड़े ऊँचे स्वरों में कहा क्या हे ऋषिवर! क्या मैं इसीलिए देखो, राष्ट्र में अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए राजा कर्तव्य का पालन करता है तो मानो देखो, आप जैसे महापुरूषों की चरणों की धूलि को अपने मस्तिष्क से मानो आलिंगन करता है और आलिंगन करके राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं परन्तु देखो, जब राम ने यह कहा तो कागभुषुण्ड जी ने कहा क्या मेरे प्रश्न का कोई उत्तर नही बना हैं उन्होंने कहा तो प्रभु! अन्तिम उत्तर यह है कि जैसे हमारे इस मानव शरीर में मानो देखो, यह आत्मा शासन रूप में रहती हैं जैसे मन मानो प्रत्येक इन्द्रियों के साथ लगा रहता है, और उस का चित्त से समन्वय होता है, और चित्त का समन्वय चेतना से होता है और चेतना का समन्वय महान चेतना से होता हैं। तो मानो देखो, ब्रह्म चेतना आत्म चेतना मनों वृत्तियाँ मानो देखो, इन्द्रियों का समागम जब होता है। तो यह एक अनुशासन है। मानो देखो, यह एक हृदय की आकांक्षा रहती है जैसे परमपिता परमात्मा मानो देखो, अनुशासन करने वाला है जैसे आत्मा ही, इस शरीर पर शासन करने वाला है, प्रत्येक इन्द्रियों के ऊपर मानो देखो, मन शासन कर रहा हैं, वह उससे कटिबद्ध रहता है, कि सूत्र बन करके मानो देखो, मन इन्द्रियों का सूत्र है और देखो, मन बुद्धि का देखो, मन बुद्धि चित्त अहंकार यह मानो देखो, साम्यवस्था में आत्मा का सूत्र बने हुए हैं मानो देखो, प्राणतव के सूत्र बने हुए हैं वही सूत्र मानो देखो, आत्मा का जो सूत्र है वह ब्रह्म हैं और ब्रह्म सूत्र में देखो, इस संसार को जब देखो, जब हम स्वीकार करते हैं, तो मुनिवरों! देखो, राष्ट्र पवित्र बन जाता हैं यह भौतिक याग, आध्यात्मिक याग दोनों का समन्वय हो जाता हैं तो मेरे पुत्रों! देखो, जब भगवान राम ने, आत्मिक चर्चाएं प्रगट की, तो कागभुषुण्ड जी बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु कागभुषुण्ड जी ने यह प्रश्न किया क्या आप अपने राष्ट्र का क्या नियम बनाना चाहते हो?

उन्होंने कहा जब मैं बाल्य काल में वशिष्ठ मुनि महाराज और माता अरूणधती के चरणों को चुम्बन करता रहता है, श्रद्धा में, मानो मैं अपने में ओत-प्रोत करता था कि उन्होंने राष्ट्रीयता की बहुत-सी चर्चाएं की हैं मानो देखो, मैं भयंकर वनों में वन में रहा हूँ तो ऋषि-मुनियों ने मुझे बहुत से उदगार दिये हैं, उन्ही उदगारों के साथ मैं यह चाहता रहता हूँ कि राजा का राष्ट्र यदि ऊँचा बनना हैं तो राजा के राष्ट्र में विद्यालय में अनुशासन होना चाहिए विद्यालयों में अनुशासन जब होगा जबकि गृह में मानो देखो, माता-पिता दोनो अनुशासित रहेंगें तो मानो देखो, यह दो

वाक हो गये उनमें कौन-सा प्रश्न है जो ऋषि ने बेटा! इसका उत्तर देते हुए क्योकि राम जब देखो, ऋषितव को प्राप्त हुए उन्होंने कहा क्या इसीलिए मैं राष्ट्र का भी निर्माण करूंगा तो सबसे प्रथम प्रत्येक गृह में मानो देखो, याग होना चाहिए प्रत्येक गृह में देव पूजा होनी चाहिए। वह प्रत्येक गृह में जब मानो सुगन्धित मेरा राष्ट्र हो जायेगा यह मेरे पितरों मानो देखो, महापिता ने दिलीप के विचारों ने यहाँ प्रत्येक गृह में सुगन्धि होती रही हैं महाराज अज के समय में सुगन्धि होती रही हैं मेरे पिता ने उस सुगन्ध को कुछ शान्त कर दिया हैं मैं पुनः से उस सुगन्ध को जागरूक करना चाहता हूँ। यदि मुझे राष्ट्र और समाज के ऊपर विचारना है और मानव के मोक्ष की आभा में रत्त करना हैं तो भगवान राम ने कहा क्या सबसे प्रथम क्या, मैं सबसे प्रथम प्रत्येक माता से यह कहूँगा क्या हे माता! तू नाना रूपी भौतिक श्रृगार को त्याग करके मानो तुझे अपने कण्ठ के श्रृगार को अपनाना है मानो देखो, कण्ठ का श्रृंगार क्या है क्या माता के कण्ठ में कितना माधुर्यतम होना चाहिए जिससे बालक को लोरियां देती हुई, उसको ब्रह्म का ज्ञान करा दे, वह याग का ज्ञान करा दे मानो देखो, माता के हृदय में अपने में इस प्रकार की क्षमता होनी चाहिए जब मानो देखो, माता का हृदय सजातीय बन जाता हैं, ज्ञान में परिणत हो जाता है तो मानो देखो, माता का जो शिक्षा का जो स्तर है, शिक्षा की जो वृत्तियाँ है, वह जब मानो देखो, ऊर्ध्वा में गति करने लगती हैं वेदों का अध्ययन करते हुए, दर्शनों का अध्ययन करते हुए, माता अपने कण्ठ को सजातीय बना देती हैं मानो देखो, जहाँ नाना प्रकार के, आभूषणों से माता देखो, आभूषित हो जाती हैं, ऐसे माता के हृदय में ज्ञान होना चाहिए और विवेक होना चाहिए मानो देखो, माता अपने पुत्र को जब तक ब्रह्मवेत्ता या यागिक नही बनाएगी, ज्ञान में परिणत नही करेगी तो तब तक मानो देखो, यह लोक ऊँचा नही बनेगा मानो देखो, उसके पश्चात जब माता अपने बालक को, ब्रह्म आभा में, याग में परणित कर देती है वह जब विद्यालय में जाता है तो विद्यालय में जो भी प्रवेश करता हैं, तो मानो देखो, आचार्य उस ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करता हैं, अपने गर्भ में धारण करता हुआ कहता है, हे ब्रह्म ब्रहे मानो तू मुझे इन्द्रियों को प्रदान कर, यह सर्वत्र इन्द्रियों को प्रदान कर देता है, और इन्द्रियों को प्रदान करके उनके विषयों को आचार्य मानो उस विषयों को तपा करके ज्ञान के माध्यम से वेद के मन्त्र के द्वारा मानो देखो, बालक को देखो, विद्या अध्ययन कराता हुआ, वह प्रकाश में देखो, गो मेध याग करा देता हैं। हमारे यहाँ गो मेध यागों, को भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गये हैं। परन्तु आज मैं देखो, गो मेध याग का यही स्वरूप मैं तुम्हें उद्गीत रूपों में गाना चाहता हूँ। राम ने उच्चारण किया है राम ने कहा है क्या प्रत्येक मानव देखो, गो मेध याग होना चाहिए, गो मेध याग का अभिप्रायः यह कि ब्रह्मचारी विद्यालय में जब अध्ययन करता है तो गो मेध यागों में परिणत

होता हो करके मानो देखो, आचार्य याग की प्रणाली में स्वर्ण बना देता है, वैज्ञानिक बना देता हैं, पुरोहित बना देता है, वह मानो लोक-लोकान्तरों की उड़ान उड़ने में मानो तत्पर हो जाता हैं। जब वह लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है, तो राष्ट्र में विज्ञान होता है, राष्ट्र में मानवीयता होती हैं मानव दर्शन होता है वास्तव में मानव दर्शन क्या हैं हे माता! जब तू अपने पुत्र को, हे आचार्य! जब तू अपने पुत्र को, यह निर्णय देता हैं क्या धर्म क्या है मानो देखो, धर्म मानव की इन्द्रियों का निर्णय करा देता है कि इन्द्रियों में कैसा धर्म तेरी मानवीयता तेरी ओजस्ता मानो देखो, उसमें विद्यमान रहती हैं। आचार्य इस प्रकार का, जब ज्ञान करा देता हैं, तो इस संसार में देखो, उस राष्ट्र में नाना प्रकार की रूढ़ियों का जन्म नही हुआ करता है।

जैसे मुझे महानन्द जी ने इससे पूर्व काल में प्रगट किया क्योंकि अज्ञानता में ईश्वरवाद के ऊपर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बना करती हैं, और जब बुद्धिमान प्राणी होते हैं, मानो देखो, राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता जैसे मेरे पुत्र ने इससे पूर्व वर्णन किया था, क्या राजा राम जैसे ब्रह्मवेत्ता हों, जो ब्रह्म की उड़ान उड़ने वाले हों, आचार्यों के समीप मानो देखो, पत्नी एक धर्म देवी को स्वीकार करके, माता और पुत्री और देखो, वह भोजी के तुल्य स्वीकार और दृष्टिपात करने वाले सर्वत्र राष्ट्र होंगें, तो वह राष्ट्र ऊँचा बनता हैं। तो मानो देखो, भगवान राम ने कागभुषुण्ड जी से उत्तर देते हुए कहा, क्या मैं मानो सबसे प्रथम मेरा नियम, मेरी माताएं, मेरे पुत्रियाँ मानो देखो, कण्ठ में सजातीय हो जाएं, उनका कण्ठ माधुर्य रहना चाहिए, उनके कण्ठ में माधुर्यता नही पालन करने की भी क्षमता होनी चाहिए, परन्तु शिक्षा में अग्रणीय होने चाहिए, इसी प्रकार जब राजा के राष्ट्र में इस प्रकार बुद्धिजीवी प्राणी उत्पन्न होता रहेगा, तो राजा के राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति नही आती, राजा के राष्ट्र में केवल कर्तव्यवादी प्राणी होते है। और कर्तव्यवादी प्राणी ही संसार को ऊँचा ऊर्ध्वा में ले जाते हैं।

तो मानो देखो, राम ने कहा कि मेरे राष्ट्र में, एक शंख ध्वनि होनी चाहिए, प्रत्येक गृह में प्रातःकालीन मानो देखो, ध्वनि होनी चाहिए जैसे शंख ध्वनि होती हैं, शंख नाद होता हैं। नाद का अभिप्रायः है कि वाणी से वेदों का उद्गीत गाया जाएं, वेदमन्त्रों की ध्वनियां होनी चाहिए, मानो देखो, प्रातःकाल क्या, सांयकाल क्या, मानो देखो, वह अग्नि के समीप विद्यमान हो करके, अग्नि को और अपने को प्रकाश में लाना हैं वही प्रकाश ही मुनिवरों! संसार को ऊँचा बनाता हैं। प्रत्येक प्राणी मात्र को, महान बना देता हैं। तो मानो देखो, राम ने जब कागभुषुण्ड जी के प्रश्नों का उत्तर दिया, तो कागभुषुण्ड जी मौन हो गये, और यह कहा कि आपके वाक्यों से मेरा अन्तर्हृदय बड़ा प्रसन्न हो रहा हैं, मैं प्रशंसनीय बन रहा हूँ, परन्तु आपका नियम और क्या होगा, उन्होंने कहा मेरे राष्ट्र में मानो देखो, कर्तव्यवाद का महत्व विशेष होगा, और जब प्रत्येक हम

ब्रह्मे देखो, कहा कि-प्रभु! आप क्या कर्तव्य करेंगें? उन्होंने कहा मैं प्रातःकालीन मानो देखो, अपने प्रभु का धन्यवाद दूंगा, अपने प्रभु का गुणगान गाता रहूंगा, क्योंकि ब्रह्मयाग, ब्रह्म का चिन्तन करना और ब्रह्म को यह स्वीकार करना, कि मेरे अन्तरात्मा में मानो देखो, ब्रह्म विद्यमान हैं और उसके पश्चात मैं याग करूंगा क्योंकि-प्रभु! यागिक हैं और वेदों की ध्वनि मानो देखो, मेरे अन्तर्हृदय में जब उद्गीत गाती रहेंगी तो मानो देखो, समाज मेरा अनुकरण करेगा, और प्रजा का अनुसरण ही मानव के, हमारे इस राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है जब हमारे राष्ट्र में इस प्रकार देखो, क्रियाकलाप होंगें, तो उनके हमारे क्रियाकलापों को मानो देखो, द्वितीय राष्ट्र अपनाने वाले होंगें यदि मेरे राष्ट्र में पनपेगा मैं, विज्ञान को लाना चाहता हूँ विज्ञान हमारा एक अंग बना हुआ है, परन्तु विज्ञान में नाना प्रकार की चित्रावलियाँ होनी चाहिए और नाना प्रकार की चित्रावलियों में जो चित्रों का दर्शन होगा वह मानो देखो, ऋषि-मुनियों के तपस्यामयी विचार होंगें, और ऋषि-मुनियों के क्रियाकलाप होंगें, और मेरी पुत्रियों के, मेरी माताओं के चरित्र, जीवन चरित्र उनका चरित्र उनकी महानता, उनका उद्गीत यागिक जब देखो, चित्रालियों में दृष्टिपात किया जायेगा तो मेरा राष्ट्र मानो देखो, विज्ञान को होता हुआ, विज्ञान के वांगमय में मानो देखो, परिणत करता हुआ, महानता का मानो दर्शन का मानो देखो, दर्शन करता रहेगा, इसी प्रकार जब उन्होंने कहा मेरे राष्ट्र में देखो, विज्ञान अपना अनुशासन करता रहेगा नाना प्रकार की ऊर्ज्वा से मेरे राष्ट्र में विज्ञान मानो देखो, नाना प्रकार के धातु विज्ञान के रमण करने वाला विज्ञान होना चाहिए। मैंने क्योंकि देखो, बाल्यकाल में भारद्वाज मुनि के यहाँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव देखो, मुझे निर्णय कराते रहते थे, ऋषिवर।

तो मेरे प्यारे! ऋषि देखो, वह ऋषियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए, उन्हांने राष्ट्रीयता को अपनाते हुए कहा, क्या समाज में अनुशासन जब वह करता है जबकि मानव चरित्रवान बनेगा और चरित्र की प्रतिभा महानता में रत्त होती रहेगी, तो मानो देखो, राजा के राष्ट्र में, चरित्र और मानवीयता मानो देखो, रक्तोंमयी जीवन नही बनता, रक्तों में तो जब से यह शासनवादी की, प्रवृत्ति, संसार में उत्पन्न हुई हैं मानो उद्धृत हुई है उसी काल से देखो, रक्तों का एक दूसरें में आदान प्रदान होता रहा हैं। देखो, राम ने यह कहा कि साम्यवाद यह कहता है, साम्यवाद मेरा राष्ट्र हो, इससे प्रत्येक प्राणी को, अपने विचारों में अधिकार होगा परन्तु वह अधिकार बुद्धियुक्त हो विज्ञान से युक्त होना चाहिए, वही विचार तो देखो, मानव को ऊँचा बनाते हैं वही विचारधारा मानो देखो, मानव को महानता में ले जाती हैं तो राम ने देखो, यह वाक् कहा था। आज मैं सम्बन्ध में राम के चरित्र में या देखो, राम के क्रियाकलापों में आज मैं विशेष जाना नही चाहते हैं विचार केवल यह कि देखो, इन्होंने अयोध्या में अपने राष्ट्र की स्थापना की मानो देखो, उनके

यहाँ अश्वमेध याग, गो मेध याग और देखो, वाजपेयी याग और देखो, अग्निष्टोम यागों का चयन, प्रायः राजा के राष्ट्र में होता रहा।

तो मेरे प्यारे! देखो, समय-समय पर, विद्यालयों में प्रवेश होना, विद्यालयों की प्रतिक्रियाओं को ऊँचा बनाना, मानो देखो, यह सिद्ध हो गया, क्या विद्यालयों में जिना चरित्र मानो देखो, आचार्य तपा हुआ, महान होगा, उतना विद्यालय पवित्र होगा, और राजा के राष्ट्र में, जितना राजा तपा हुआ होगा, उतना ही मानो देखो, प्रजा को सुखद दे सकता है। इसी प्रकार, जब यह विचार मानो देखो, समीप आते रहते हैं, क्या हम यह विचारते हैं, कि मानो दर्शन क्योंकि दर्शनों का ज्ञान होना बहुत अनिवार्य है प्रत्येक मानव के यहाँ मानव का दर्शन होना चाहिए मानव दर्शन क्या है? क्या बेटा! देखो, मानव दर्शन उसे कहते हैं प्रत्येक मानव की ज्ञानेन्द्रियों कर्मेन्द्रियों का जो क्रियाकलाप है वह क्रियाकलाप ब्रह्माण्ड से उनका क्या समन्वय रहता है ब्रह्माण्ड से कैसे उनको क्रियाकलाप होता रहता है उन कल्पनाओं में जब हम रत्त होते हैं तो मानो देखो, ब्रह्माण्ड और पिण्ड की एक कल्पना करके मुनिवरों! हमारा जीवन पवित्र बन जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड और पिण्ड, दोनों एक ही सूत्र में हम लाना चाहते हैं।

परन्तु देखो, परमपिता परमात्मा, जैसा मैंने इससे पूर्व काल में, मैने देखो, तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था देखो, महर्षि पिप्पाद मुनि महाराज और वह छः जिज्ञासु जब ब्रह्म के आँगन में विराजमान हो करके बेटा! ऋषि से प्रश्न करते हैं क्या हे भगवन! कौन आहार करता है? कौन व्यवहार कर रहा है ?और कौन किसको मृत्युंजय बना रहा हैं ?और कौन किसको जीवन दे रहा हैं? तो पिप्पाद मुनि ने यह कहा कि प्राण ही भक्षण कर रहा हैं प्राण ही मानो देखो, क्रिया दे रहा हैं प्राण ही ब्रह्मे देखो, जैसे मानव जब स्वप्न में सुषुप्ति में चला जाता हैं तो यह मन ब्रह्मे मानो देखो, यह जो मन अपनी सुषप्ति में चला जाता है तो प्राण आत्मा के साथ जागरूक रहता हैं, आत्मा के साथ जब जागरूक रहता है, परन्तु वही प्राण कहलाता हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना में नही जाना चाहता हूँ आज मैं कोई व्याख्याता नही हूँ केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ और वह परिचय क्या हैं मानो देखो, जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने इससे पूर्व कालो में नाना प्रकार के यागों का चयन, यागों की प्रतिभा का वर्णन किया, मानो उसी का मैं पुनः से विशेषण कर रहा हूँ अथवा उसकी की पुनरूक्तियां कर रहा हूँ, क्या हम मानो देखो, पंच यागों में रत्त हो करके, और ब्रह्मयाग में परितण हो जाएं, मानो देखो, यह पृथ्वी ही तो उद्गीत गाती रहती है, यह पृथ्वी ही तो वसुन्धरा बनी रहती हैं, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म की गोद में, जब प्राणी चला जाता हैं तो ब्रह्म ही ब्रह्म मानो चेतना में चेतनित हो करके अपने जीवन को महान बनाता हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज बेटा! देखो, मैं यह कई कालों में, तुम्हें याग के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए कहा था, जब मानो देखो, उस याग में, यज्ञमान विराजमान हो करके, पुरोहित इत्यादियों के सहित विद्यमान हो करके, यज्ञमान अपना स्वाहाः कह करके, वह अपने मन, कर्म वचन के द्वारा, मानो देखो, स्वाहाः उच्चारण करके वह याग की आत्मा को ब्रह्म सूत्र में बेटा! वह पिरोता रहता है। मानो देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा, एक वाक् मुझे स्मरण आ गया एक समय बेटा! बहुत समय की वार्त्ता हैं, एक समय बेटा! देखो, ऋषि-मुनियों का एक समूह विद्यमान था। मानो देखो, उस समय सुनीति नाम के राजा मानो सुनीति नाम के मानो अयोध्या में एक राजा थे, तो राजा की धर्म देवी ने कहा क्या हे भगवन! हे राजन! हमारे जो पूर्वज थे, वह यागों में हमारा राष्ट्र यहाँ राष्ट्र में बहुत समय हो गया हैं याग हुए इसी महापुरूष किसी महापुरूष के द्वारा याग होना चाहिए, तो उस समय देखो, सुनीति राजा ने, देवी के वाक्यों को स्वीकार कर लिया, उन्होंने कहा-देवी! तुम्हारे विचार बड़े प्रिय हैं वह भ्रमण करते हुए ब्रीहि कृतं मानो देखो, ऋषि-मुनियों के समूह में जा पंहुचे, जहाँ देखो, महर्षि कागभुषुण्ड, जी और महर्षि लोमश और भी नाना ऋषिवर जैसे महर्षि विभाण्डक, महर्षि कणवृत्ति मुनि महाराज और मुनिवरों! देखो, महर्षि वैशम्पायन और भी नाना ऋषि-मनि विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, जब वह उस समूह में पंहुचे, तो मुनिवरों! ऋषि-मुनियों के चरणों की वन्दना की, और ऋषियों ने कहा आईये राजन, वे विराजमान हो गये और विराजमान हो करके मानो ब्रह्मे वृतं मानो अपनी आख्यिका वह प्रगट करने लगे। उन्होंने कहा कि-हे प्रभु! आज हम मानो देखो, मध्य रात्रि में मैं और मेरी देवी हम ब्रह्म का चिन्तन कर रहे थे और ब्रह्म के चिन्तन में हमें देखो, याग का प्रकरण आ गया, हमारे पूर्वज यागों के मानो देखो, मर्मज्ञ देखो, बुद्धिमान और विचारक रहे हैं, और यागों में उनका जीवन व्यतीत हुआ हैं। तो प्रभु! मेरी देवी ने मुझे प्रेरणा दी हैं, क्या आप याग करो। क्या कि-प्रभु! मेरी इच्छा यह है, क्या मैं अयोध्या में एक याग करना चाहता हूँ, प्रभु मैं निमन्त्रण करने आया हूँ, और मुझे किस प्रकार का याग से पूर्व, मुझे किस प्रकार का पालन करना चाहिए क्या साकल्य एकत्रित करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा के वाक्यों को पान करके वेद का ऋषि एक दूसरे के मुखारबिन्दु को दृष्टिपात करने लगा। मेरे प्यारे! देखो, जब कोई उद्गीत न गा सका, राजा ने कहा भगवन! आप तो वेद के मर्म को जानने वाले हो, वेद की प्रतिभा को जानते हो, परन्तु आप मौन क्यों हो रहे हैं? उन्होंने कहा कि हे राजन! हम मौन इसीलिए हो गये हैं क्या, तुम किस प्रकार का कैसा याग कराना चाहते हो? उन्होंने कह-प्रभु! मेरे राष्ट्र में, हर प्रकार का सुखद है, प्रजा बड़े आनन्द से रहती हैं, एक दूसरे से प्रसन्न, मेरा राष्ट्र हैं परन्तु देखो, मैं ऐसा याग करना चाहता हूँ, जिससे

मेरा अन्तरात्मा पवित्र हो जाएं और मेरे अन्तरात्मा पवित्र होने से मेरा राष्ट्र ऊँचा बन जाएं ऐसे याग का मानो देखो, आत्मा स्वाहा है, इसी प्रकार देखो, मेरे राष्ट्र का जो स्वाहा है, वह प्रजा का राजा हैं और राजा के लिए प्रजा स्वाहा है मानो देखो, एक दूसरे की आत्मोन्नति के लिए हम कल्पना करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, जब राजा ने यह कहा, तो ऋषिवर बड़े प्रसन्न हुए, उसमें महर्षि वैश्म्पायन जी ने कहा क्या आप याग कीजिए भगवन! आप जैसा याग चाहते हैं, वैसा ही होगा। मेरे प्यारे! देखो, याग का समय नियुक्त किया गया, और साकल्य एकत्रित करने के लिए, आज्ञा दी और राजा ने याग से पूर्व, प्रजा में भ्रमण किया, याग का प्रारम्भ होने लगा, जब प्रारम्भ हुआ, तो उन्होंने अपनी प्रजा में मानो प्रारम्भ से पूर्व प्रजा में भ्रमण किया और प्रजा को दृष्टिपात किया कि मेरी प्रजा में कोई मानो अन्न से पीड़ित तो नही हैं, मेरे राष्ट्र में बुद्धि की कोई सूक्ष्मता नही है, मानो देखो, इस प्रकार का उन्हांने राष्ट्र में भ्रमण किया और भ्रमण करके वह जो ऋण था, उस ऋण को मानो देखो, राजकोष से मानो अवऋण किया और अवऋण करने के पश्चात उन्होंने याग में बेटा! देखो, यज्ञशाला का निर्माण करके, याग को प्रारम्भ करने लगे, जब याग का प्रारम्भ हुआ, तो बेटा! महर्षि वैशम्पायन, महर्षि विभाण्डक, महर्षि शृंगी और महर्षि उदगोतिक ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, कोई उसमें से उद्गाता बना, कोई ब्रह्मा बना, मानो देखो, कोई होता बना, कोई उद्गीत गाने लगा और राजा देखो, यज्ञमान बन करके बेटा! याग प्रारम्भ हो गया जैसे याग प्रारम्भ हुआ इतने में बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए, वायु मुनि महाराज के मानो देखो, पौत्र महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज भी भ्रमण करते हुए, मानो देखो, उस याग में प्रवेश हुआ, राजा से कहा राजन! क्या आप याग में तल्लीन हैं? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं याग में तल्लीन नहीं हूँ मैं अपने कर्तव्यवाद में तल्लीन हूँ। उन्होंने कहा कर्तव्य किसे कहते हैं? उन्होने कहा कि आत्मा की पुकार को स्वीकार करना, और उसको बाह्य जगत में क्रियाकलाप का नाम मानो देखो, वही चरित्र कहलाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने आगे इतने में उद्गीत रूप में उन्होने गाया क्या मानव के अन्तर्हृदय की प्रेरणा अन्तर्हृदय का विचार और अन्तर्हृदय की मानो जो तरंगें हैं वही देखो, राष्ट्र और समाज को गृह को ऊँचा बना देती हैं, मेरे प्यारे! देखो, वही तरंगें यदि अशुद्ध हो जाएं, तो दूषित वायुमण्डल में प्रवेश करा देती हैं तो विचार क्या जब विज्ञान मानो देखो, अपनी भावनाओं में पवित्र बन गया याग का जैसे प्रारम्भ हुआ, तो देवी से बोले कि देवी! मैंने यह श्रवण किया है क्या तुमने राजा को प्रेरणाष दी है कि हे राजन! तुम याग करो, उनकी पत्नी का नाम श्वेतकेतु श्वेधनि था, वह श्वेधनि बोली कि-प्रभु! मैं इसीलिए प्रेरक बनी हूँ, क्योंकि संसार में पत्नी से ऊँचा कोई भी पति का प्रेरक नही हुआ करता जो पत्नी प्रेरणा दे देती हैं मानो देखो, वह प्रेरणा महान बन करके गृह को ऊँचा बना देती हैं मानो देखो,

वही प्रेरणा मैंने दी कि राष्ट्र को गृह को ऊँचा बनाना है यदि राजा के राष्ट्र में विचारों की सुगन्धि और साकल्य की सुगन्धि दोनों का समन्वय हो करके और देखो, हृदय की आभा को स्वीकार करना ही मानो देखो, यह समाज को ऊँचा बना देता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा, जब राजलक्ष्मी ने यह वाक् प्रगट किया तो ऋषिवर मौन हो गये, मानो देखो, ऋषि ने आगे क्या उनकी जो रूपं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, उद्गाता से नाना प्रश्न किया क्या उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उद्गाता कहते हैं जो उद्घोष करने वाला है जो वेदमन्त्रों को स्वरों से हृदय से गाता हैं, ऐसा मानो उद्गीत गाने वाला होना चाहिए, जिसका मन, कर्म, वचन एक सूत्र में लय रहें परन्तु मन, कर्म, वचन एक सूत्र में रह करके जब वह वेद का गान गाता हैं वही वेद का गान मानो देखो, सुगन्धित हो करके, साकल्य को ले करके वायुमण्डल में छा जाता है और दूषित वायुमण्डल को समाप्त कर देता हैं।

मेरे प्यारे! देखो, जब उद्गाता ने यह वाक् कहा तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा उद्गाता उद्गीत गाता हैं, और वह आत्म हृदय से उद्गीत गाता हैं परन्तु जो मानव जिस क्रियाकलाप को करना चाहता हैं उसका मन कर्म वचन एक सूत्र में रह करके जब गाता है, तो वह सम्पन्न होता हैं यदि मानो नाना क्रियाकलाप कर रहा हैं, मन कहीं भ्रमण कर रहा है मानो इन्द्रियाँ कहीं क्रियाकलाप कर रही हैं, और आत्मा मानो सुषुप्ति में विद्यमान हैं तो वह यज्ञमान अपने क्रियाकलापों में सफल नही हुआ करता।

तो विचार-विनिमय क्या, वेद के ऋषि ने बेटा! बहुत ऊँची वार्त्ता प्रगट की, और प्रगट करके मुनिवरों! देखो, याग प्रारम्भ हो गया, याग के प्रारम्भ होने से, सुवर्ण का उद्घोष होता रहा बेटा! कहीं अध्वर्यु के रूप में, अध्वर्यु अपने द्रव्य का स्वामी बना हुआ हैं, द्रव्य में दृष्टिपात करता है हिंसा तो नही हो रही हैं, क्योंकि याग में हिंसा नही हुआ करती है, याग मानो देखो, मानव के आनन्द का पहला उत्थान हैं ऐसा वह चरण है जिससे मानव देखो, आनन्द के लिए प्रेरित होता हैं मानो देखो, योगाभ्यास काल में, सबसे प्रथम मानो देखो, साकल्य के द्वारा याग किया हैं जिससे वायुमण्डल में पवित्र हो जाएं, मैं योगाभ्यास कर सकूं दूषित वायुमण्डल में देखो, योगाभ्यास भी नही हुआ करता।

तो विचार-विनिमय क्या, मानो देखो, जब मानव साधना में प्रवेश होता है, वही साधना मानव को ऊँचा बनाती हैं, तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, मैं उद्गीत गा रहा था, क्या हे राजन! राजा याग कर रहा हैं, राजा सुनीति, सुनीति मुनि महाराज अपने राष्ट्र में याग कर रहा हैं, याग में परिणत हो रहा है, याग की प्रतिभा का प्रतिपादन कर रहा हैं, और प्रजा को संकेत दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह समाज ऊँचा बनता हैं, जब मानव तप और त्याग और तपस्या की

प्रतिभा में परिणत हो जाता हैं और उग्र क्रिया देखो, परमपिता परमात्मा की उग्र क्रिया से संसार का निर्माण हुआ हैं, ऐसे ही मानव अपने जीवन का जीवन का निर्माण, चरित्र का निर्माण, मानव का चरित्र आभा में वह मानव जन्म लेने लगता हैं तो मेरे प्यारे! देखो, बुद्धिजीवी जितने प्राणी होते हैं बुद्धिजीवी तपस्या में जितना राजा होता है यज्ञमान होता है मानो देखो, वह अज्ञान को नष्ट कर देता है, और प्रकाश को लाने का प्रयास करता हैं, आओ, मेरे पुत्रों! अब मैं विशेष चर्चा प्रगट करना नही चाहता हूँ, प्रत्येक मानव साधक बनना चाहता है, प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका लगी रहती है, मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊं। बेटा! वह आनन्द जब प्राप्त होता हैं, जब ज्ञान होता है, ज्ञान में विवेक होता हैं, और विवेक के द्वारा मानो देखो, मानव के जीवन की प्रतिभा को ऊँचा बनाता हैं। मानो देखो, एक साधक ने, गुरु तो बनाया है, आचार्य को सिद्ध कर दिया हैं परन्तु ज्ञान हैं नही, तो अज्ञान में देखो, उग्र क्रिया नही है, तो वह समाप्त हो जायेगा। तो आज का हमारा वाक् क्या कहता है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, मानो अपने ऊर्ध्वा में, क्रियाकलापों को अपनाते हुए, अपने जीवन और समाज को ऊँचा बनाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं यह है बेटा! आज का वाक् कल मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन

८ निष्पन्नता 08 03 1987

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, अथवा यज्ञोमयी स्वरूप माने गये हैं, याग उस परमपिता परमात्मा का आयतन माना गया हैं, अथवा उसका गृह है, उसका सदन है, और वह उसमें वास कर रहा है, तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव अपने में गुणगान गाते रहे, और उसकी महानता को जानते रहें, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा जितना यह ब्रह्माण्ड रूपी चाहे वह यज्ञशाला है उस सर्वत्र यज्ञशाला का वह स्वामीतव करने वाला है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गा रहा हैं अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है उसके गुणों का वर्णन करता हुआ प्रत्येक वेदमन्त्र मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता हैं और अपने में अभ्योदय होता रहता है जिससे मानव के हृदय में एक महानता की अमूल्य महान ज्योति प्रदीप्त हो जाती हैं और वह ज्योतिवान बन करके अपनी मृत्यु के कारण को वह जानने लगता है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है, यज्ञं भवितां ब्रह्मा वर्णो देवाः क्या वह याग है वह हमारा वरणीय हैं, वह यज्ञोमयी जो स्वरूप हैं, वही हमारा वरणीय, हमें उसे वरणा चाहिए, क्योकि जो मानव उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करता है अथवा उसे वरता है उसको पुरोहित बनाता हैं और उसी में वह रत्त रहने के लिए वह तत्पर होता हैं, तो बेटा! वह महान अपनी महानता का प्रायः अपने में दर्शन करता रहता है। तो विचार क्या वेद का मन्त्र यह कहता है यज्ञं ब्रह्मा यज्ञं रणुप्रह्वा या कथं ब्रह्वे वणुं स्वस्थाः वेद का वाक् कहता है, कि वह वरणीय है, तो हमें सब प्राणी मानो देखो, उसको अपना वरणीय स्वीकार करें, और उसको वरणे वाले बनें।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है जितने भी नामो का वर्णन आता हैं अथवा जितने गौणिक नामों का वर्णन आता है उसके गर्भ में वह याग विद्यमान रहता हैं। वह याग अपनी आभा में निहित रहने वाला हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र, वेद की प्रतिभा, हमें किसी मार्ग के लिए प्रेरित कर रही हैं, उसी प्रेरणा को हमें स्वीकार करना चाहिए। तो मेरे पुत्रों! आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, कि हे मानव! मानो तू ब्रह्मयागी बन क्योंकि ब्रह्म का चिन्तन करना तेरा कर्तव्य है वह विज्ञानमयी स्वरूप रहने वाला है, प्रत्येक विज्ञानवेत्ता मानो उस परमपिता परमात्मा

की आराधना करता हुआ ज्ञान और उसके ज्ञान उसके विज्ञान को जानने के लिए वह तत्पर रहता है तो आधुनिक काल मानो देखो, योग का आतिप्रद्वा गुरुदेव का जो वाक् हैं वह हमें यह कहता हैं क्या देखो, वर्तमान, भविष्य और मानो भूत काल में ही याग एक ही रस रहने वाली एक महानता में क्रियाकलाप मानी गई है। वह क्रियाकलापों में सदैव तत्पर होते हैं जैसे यागिक अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके अपनी गति को ध्रुवा और ऊर्ध्वा में बनाता रहता हैं तो आज मानो देखो, मैं विशेष विवेचना देने नही आया हूँ आज मानो देखो, मैं अपनी यह विवेचना देने के लिए आया हूँ कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा क्योंकि वह विज्ञानवेत्ता हैं विज्ञान उसका गृह है, उसका आयतन है, वह मानो देखो, अपने में अपने का दर्शन प्रायः हम करते रहते हैं, जब हम यह विचारते हैं कि हमारा पुनः से अपनेपन का दर्शन हो रहा हैं।

तो वही दर्शन मानव को ऊर्ध्वा में ले जाता हैं अथवा वित्रितम बना देता है तो आओ, मेरे पुत्रों! दहा वरुणं ब्रह्मा वाचन्नं ब्रहे कृतं देखो, वह यज्ञं ब्रहा हमें कुछ विशेष आभा में अपने जीवन को ऊँचा बनाना हैं और समाज और मानवीयता को ऊँचा बनाना हैं आज मैं विशेष चर्चा तो प्रगट नही करूंगा, आज मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवं भद्रा मां गतं मनाः वायुरन्धनं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो कुछ यागों के विज्ञान के गर्भ में प्रवेश कर रहे थे, और हमें यह प्रतीत होता रहा हैं क्या, हमारे यहाँ जो पूज्यपाद गुरुदेव अपने उदगार अथवा अपना अध्ययन किया हुआ जो अनुपम विचार है वह जो उद्गीत करते रहते हैं तो प्रायः हमारा अन्तरात्मा पवित्र होने के लिए तत्पर हो जाता हैं क्योंकि मानव का संसार में एक ही उद्देश्य रहा है क्या जितनी भी संसार की वस्तुएं हैं मानो सर्वत्रता में वह उसे उनकी मानो जानकारी हो जाएं क्योंकि मन का जो स्वभाव है मन की जो प्रतिभा हैं वह सदैव प्रकृति के ऊर्ध्वा में रत्त और सूक्ष्मतम होने से, यह उत्कट इच्छा बनी रहती हैं। कि मेरे आचार्यों ने कई कालों में वर्णन किया है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव भी मुझे वर्णन कराते रहते हैं परन्तु देखो, आज का यह हमारी जो आकाशवाणी जा रही हैं, यह आकाशवाणी उस स्थली पर जा रही है जहाँ मानो देखो, जिस काल में हस्तिनापुर में एक विचार हुआ था हस्तिनापुर में एक विचार हुआ क्या राष्ट्रीयता का विभाजन नही होना चाहिए राष्ट्रीयता का विभाजन उस काल में नही होगा, जब ये पाण्डु पुत्र रहेंगें जब तक मानो देखो, विभाजन बना रहेगा, विचारों में विभाजन होगा तो एक समय वह आयेगा, तो इसका बाह्य जगत भी विभक्त हो सकता हैं मानो देखो, यह वाक् दुर्योधन इत्यादियों ने यह वाक् अपनी सभा में दिये, परन्तु देखो, इसका परिणाम यह हुआ कि विचारा गया क्या, एक गृह का निर्माण किया जाएं, और उस गृह को देखो, अग्नि के मुखारबिन्दु

में परिणत कर दिया जाएं ऐसा विचार बना, परन्तु देखो, यह वही स्थली मुझे दृष्टिपात आ रही है आज मानो देखो, उसी दृष्टि से मैं अपने वाक् को ले करे चला हूँ क्या मानो देखो, यहाँ एक भव्य का निर्माण हुआ उस निर्माण पांचो पाण्डों प्राणों को ले करके चले गये और वह मानो देखो, गृह अग्नि में समाप्त हो गया।

तो विचार क्या मानो देखो, समय-समय प्रवृत्तियां, समय-समय पर साहित्य अपने स्थलियों पर परिवर्तित होता रहता है। यहाँ साहित्य तो परिवर्तित हुआ हैं, वह भी काल स्मरण आता रहता है जब भीम और भीम के पत्रु घटोत्कच्छ और भी देखो, ब्रणीहि नाम के वैज्ञानिक थे जब अनुसन्धान होता रहता है मानो देखो, भीम ने ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया था जिन यन्त्रों में देखो, वह वायुमण्डल में भ्रमण करते रहते हैं। आधुनिक काल में भी बहुत से यन्त्र वह भीम ने देखो, अन्तरिक्ष में त्याग दिये थे वह भ्रमण कर रहे है वह मानो देखो, अभी-अभी बहुत कुछ समय हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन किया, क्या पातालपुरी का एक यान मानो देखो, अन्तरिक्ष की यात्रा करने के लिए गमन करता हैं और वह जब गमन किया तो उन्होंने जब पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा तो मानो देखो, यह यान भीम का यान भ्रमण कर रहा था, भीम के यन्त्र भ्रमण कर रहे हैं, उनको हतोहत नाम के यह यन्त्र मानो जाते हैं, हतोहत नामों से मानो यन्त्र भ्रमण कर रहा था, जब यन्त्र का उससे मिलन हुआ, तो वह यन्त्र कुछ नष्ट होने लगा, तो वह पृथ्वी मण्डल पर आ गया। यह आधुनिक काल में जो पातालपुरी कहलाती हैं, वह उसका यान था, वह शनै-शनै वैज्ञानिकों ने अपनी आभा में आभायित किया। परन्तु देखो, विचार यह कि उनका विज्ञान, उनके वैज्ञानिक यन्त्र, आधुनिक काल में भी वह देखो, जब ही से भ्रमण कर रहे हैं, बहुत समय हो गया है, विचार आता रहता है, आज का हमारा, यह वाक् क्या कह रहा है, आज मैं उस विज्ञान के वांगमय में न जाता हुआ, मानो देखो, वह साहित्य का परिवर्तन हुआ, इतिहास के पृष्ठों का मानो देखो, एकोकीकरण न रह करके उन्होंने विभाजनवाद आया तो वह मानो देखो, महाराजा परीक्षित के समय में यहाँ देखो, न्यायालय की कुछ प्रतिका बनी जो मानो देखो, खण्डरात रूप में अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश हो गये थे, बहुत समय हुआ परन्तु देखो, उसके पश्चात पुनः परिवर्तन आया, समय के परिवर्तन होने से यहाँ मोहम्मद के मानने वालों ने नाना रूप में देखो, यहाँ की वायु में कुछ मानो देखो, प्रतिक्रियाएं हुईं आज मैं देखो, उसे उच्चारण करने के लिए सदैव उद्गीत गाता रहता हूँ यहाँ मानो देखो, नाना सम्प्रदाय के प्राणियों ने नाना देखो, रूढ़िवादी प्राणियों ने इसको नष्ट किया इसको भ्रष्ट किया और भ्रष्ट करने के कारण परन्तु देखो, समय का जब परिवर्तन होता हैं कहीं से मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का मानो देखो, कहीं से आगमन का प्रादुर्भाव हो गया, कहीं से आत्मा आ गई परन्तु देखो, वह आत्मा

इन्होंने बहुत पुरातन काल में देखो, इस भूमि पर देखो, यहाँ नदी के तट पर देखो, तट पर एक याग किया था। एक लाखों वर्षो पूर्व याग हुआ था हरनन्दम् ब्रहे और उस याग के संस्कार मानो पूज्यपाद गुरुदेव के हृदय में सदैव तत्पर जैमिनी महाराज ने भी, यहाँ अपना वास किया है, जैमिनी जी ने व्यास मुनि तो मानो महाराज मानो देखो, प्रत्येक वर्ष याग मानो देखो, पाण्डु पुत्रों का जब परीक्षफल होता उनके आवृतियों होती मानो देखो, वह यहाँ आते देखो, उनका उपदेश होता ज्ञान और विज्ञान की वार्त्ताएं प्रगट होती रहती थी, अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या का मानो देखो, विधान होता रहता था और वह अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या मानो देखो, हमारे यहाँ द्रोणाचार्य के काल में अद्वितीय मानी जाती हैं। जब वह अद्वितीय काल ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में सदैव रत्त रहा है। आज मैं वही आना चाहता हूँ वह भी काल मानो देखो, इतिहास का जब साहित्य के पृष्ठों में परिवर्तन आया तो मानो देखो, वही काल, कहीं शमशान भूमि में परिवर्तित हो गया, कहीं शमशान भूमि में परिवर्तित हुआ, कहीं मानो देखो, यहाँ अनाचार के और आतातियों के भी देखो, नाना प्रकार के आतंक हुए, उन आतंक आने से देखो, यहाँ नाना मेरी पुत्रियों का सतीतत्व भी हनन हुआ है, मेरी पुत्रियों का सतीत्व भी हनन हुआ, आज मानो वही भव्य भूमि हैं आज जब मेरा अन्तरात्मा जब मैं दृष्टिपात करता हूँ, उसी भूमि की मानो देखो, उसी लाक्षागृह पर यहाँ मानो देखो, मृतक विचार बने, मृतक विचारों से शमशान भूमि के रूप में परिवर्तित हुआ, यही मानो देखो, सतीत्व के हनन करने में परिवर्तित हुआ, आज वही मानो देखो, भूमि का जब उदय होता हैं, देखो, जो पुण्य भूमियों का जब उदय होता है तो याग की प्रतिभा वेदज्ञ ध्वनियां आना प्रारम्भ हो जाती है वही वेदज्ञ ध्वनि जो मैं अपने श्रोत्रों से श्रवण करता रहता हूँ, मैं पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराना चाहता हूँ मैं यह उद्गीत गाता रहता हूँ कि हमारा कितना सौभाग्य है आज नाना यज्ञमान मानो देखो, द्वितीय रूपों से जीवनं ब्रहे वह अपने विचारों में मानव दूरी नही होता हैं, वह विचार सदैव एक ही रूपों में विद्यमान रहते हैं उन्ही विचारों को ले करके याग की प्रतिभा सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक मैंने अपने पूज्यापाद गुरुदेव को कहा था महाभारत के काल में अथवा यवनों के काल में इस याग पर नाना प्रकार के आक्रमण हुए हैं मानो देखो, आहारों में व्यवहारों में जब परिवर्तन आया तो यहाँ नाना प्रकार के आक्रमण यागों के ऊपर हुए, याग में सबसे प्रथम जहाँ अहिंसा परमोधर्मी मेरी पुत्रियाँ और मेरी मातृ शक्ति रही हैं मानव रहा हैं मानो देखो, राष्ट्र और प्रजा रही हैं अश्वमेध यागों में सदैव उनकी प्रतिभा निहित रही हैं ऐसे काल में देखो, जब यागों पर आक्रमण हुआ, तो सबसे प्रथम याग में मांस की आहुति दी गई, वेदों के अर्थों को न जान करके, वेदों की प्रतिभा को न जान करके, इस मानव ने अपने ऊर्ध्वा में देखो, उल्टे मार्ग को अपना करके

मानो देखो, याग में आक्रमण हुआ, उस याग का वह प्रभाव हुआ, क्या यहाँ का संसार का प्रत्येक प्राणी देखो, मांस भक्षक हो गया यह याग के तिरष्कार का मूलन हैं जब याग का तिरस्कार हुआ, तो यहाँ प्रत्येक प्राणी आहार में व्यवहार में अशुद्ध हो गया हैं आज मानो देखो, जब यह कहते हैं गुरुओं से, गुरु यह कहते हैं कि तुम साधना करो, कहते हैं कि मांस भक्षण देखो, जब करते हैं तो देखो, गुरुओं के द्वारा शिष्यों की सूक्ष्मता हो जाती हैं अरे, भोले प्राणियों! विचारों, जब तक साधना के मूल में तुम अंकित करना चाहते हो, और उनका आहार और व्यवहार अपवित्र हैं, तो वह कैसे अपनी साधना में पूर्ण हो सकेंगें? कैसे साधना में मानो साधक बन करके, ऊर्ध्वा में जाएंगें। तो विचार क्या, मैंने अपने विचारों को इस दिशा में ले जाना नही है विचार, केवल यह कि आज हमारा यह सौभाग्य हैं, आज मैं अपने में बड़ा सौभाग्य अपने को स्वीकार करता रहता हूँ क्या मानो देखो, याग के देखो, संस्कारों को उद्बुद्ध करने वाले प्राणी है, वह मानो देखो, याग में परितण हो करके अपने देखो, विचारों की, साकल्यों को आहुति दे करके, द्यौ लोक को पवित्र बनाया जा रहा हैं, यह वही पावन भूमि है जहाँ मानो देखो, वेदोव्यास अपने ब्रह्मचारियों को ऊर्ध्वा में शिक्षा देते थे ऊर्ध्वा में मानो देखो, गमन कराते और ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ी जाती थी ज्ञान और विज्ञान का देखो, उड़ान होना देखो, वायु मण्डल में नाना यन्त्र भ्रमण कर रहे हैं जिनका देखो, लगभग बीस-बीस हजार वर्षों का आयु हैं यन्त्रों की आयु में मानो देखो, उनका भाव, उनकी विचित्रता अथवा उनका जो क्रियाकलाप है, वह उसमें विद्यमान रहता हैं। आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, पूज्यपाद गुरुदेव को यह इतना उच्चारण करना चाहता हूँ, जहाँ मानो देखो, वेदज्ञ ध्वनि होती हैं, ब्रह्मवर्चोसि अपने में पालना में, सदैव तत्पर रहते हैं, हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा तो मानो यज्ञमान के साथ रहता हैं, और मैं यह कहता रहता हूँ कि हे यज्ञमान! मानो देखो, मेरा अन्तर्हृदय यह पुकार कर कहता हैं क्या तेरा हृदय सदैव यागिक बना रहे और मानो देखो, तेरे जीवन की सदुपयोगता ऐसे द्रव्य का सदुपयोग होना हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है, हे यज्ञमान! मैं तो यह कहता रहता हूँ तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग होना, देखो, यह द्रव्य भी ममतामयी माँ हैं, माँ का जितना भी सदुपयोग करता हैं, माता उससे प्रीति करती हैं, और माता का जितना कोई दुरूपयोग करता हैं, दूरिता करता है, माता अपने कण्ठ से दूरी कर देती हैं, तो यह जो द्रव्य है यह जो माया हैं, लक्ष्मी है, मानो देखो, यह परमपिता परमात्मा की श्री कहलाती हैं, यह परमात्मा श्री कहलाती हैं, जैसे पति और पत्नी दोनों एक दूसरे में श्री कहलाते हैं, यज्ञमान कहलाते हैं, इसी प्रकार यह जो ममता में माया है, यह मानो देखो, देखो, लक्ष्मी

हैं, यह देखो, जहाँ लक्ष्मी का पूजन होगा, तो भगवान का पूजन, भगवान प्रसन्न होंगें। पूजन का अभिप्रायः यह है क्या द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए, द्रव्य का दुरूप्योग नही होना चाहिए जब यज्ञमान के गृह में द्रव्य का दुरूपयोग नही होगा, और द्रव्य का सदुपयोग होता है, वह गृह सुन्दर बनेंगें भावना में पवित्र बनेंगें और ब्रह्मयाग और देव याग नाना प्रकार के यागों में मानव सदैव परिणत होता रहेगा, आज मैं विचार यह देना चाहता हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह विचार दे रहा हूँ, कि आधुनिक काल में विज्ञानवेत्ताओं की भिन्न-भिन्न रूपों में गोष्ठियां होती रहती हैं, आधुनिक काल में यह विचारते रहते हैं, क्या देखो, दूषित वायु मण्डल हो रहा है, भूः भुवः और स्वः मानो देखो, यह जो इसमें दूषित वायु मण्डल हो रहा है, इसका क्या बनेगा हमारे ऋषि-मुनियों ने पूज्यपाद गुरुदेव ने मानो देखो, यह अपना एक नृत्त किया हैं, वेदमन्त्रों का अध्ययन किया है, उसके ऊपर तपस्या की है, और तपस्या करने के पश्चात एक क्रियाकलाप मानो देखो, यह उद्धृत किया हैं जिस क्रियाकलाप में याग सुगन्धि और ध्वनि दोनों का मिश्रण होता हैं, देखो, विचारों की सुगन्धि और पदार्थों की सुगन्धि अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, जब वह वायुमण्डल में परमाणु रूप में रमण करती हैं, तो अशुद्ध परमाणुओं को निगलती है, शुद्ध वायुणमडल को निर्माणित कर देती हैं। तो इस प्रकार विज्ञान मानो इसमें निहित रहता हैं, यह विज्ञान मानो देखो, हमारे आचार्यों ने देखो, विद्यालयों में, विज्ञान की प्रतिभा रही है, जब हम विद्यालय में, आचार्य पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते थे, तो मानो यह आचार्य जन हमें नाना प्रकार के हमें इस प्रकार के क्रियाकलाप इस प्रकार की प्रतिभा का, वह प्रायः वर्णन कराते रहते थे आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नही देता हुआ केवल यह कि आज देखो, मैं सूक्ष्म क्या आधुनिक काल में आना चाहता हूँ मैं वर्तमान के काल में जाना चाहता हूँ प्रत्येक मानव यह कहता है, राष्ट्रवेत्ता यह कहते हैं, कि हम निरपेक्ष रहना चाहते हैं, हम मानो देखो, निष्पक्षता में विश्वास करते हैं, अरे, मानव! तू जानता होगा, निष्पक्षता को? जब ही तो तू विश्वास करेगा। और जब जानता नही तो विश्वास ही क्या होना है। विचारना यह है कि देखो, निष्पक्षता को कौन जानता हैं, कौन विचारता है केवल इसीलिए कि इनकी स्वार्थ की पूर्ति हो जाएं और उन शब्दों को उच्चारण कर लें और उनका स्वार्थ पूर्ण हो जाएं। तो इसका नाम आज राष्ट्रवाद कहलाता हैं, विचार क्या मैं राष्ट्रवाद के ऊपर कोई विचार देना नही चाहता हूँ, विचार केवल इतना ही देना चाहता हूँ, यदि आधुनिक काल का जो यह वायुमण्डल यह मानो दूषित हो रहा है, विज्ञान के द्वारा विचारों के द्वारा मानो देखो, कर्मठता के द्वारा जो देखो, दूषित वायुमण्डल हो रहा हैं, इसका एक ही क्रियाकलाप है, कि राजा याग करने लगे प्रजा याग करने लगे और देखो, विचारों की सुगन्धि वायुमण्डल में प्रसारित होगी, मानो देखो,

वही राष्ट्र को समाज को ऊँचा बना सकती हैं, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा परन्तु यह क्यों करने लगें हैं जब तक नाना प्रकार की रूढ़ियाँ पनपती रहेंगीं, तब तक सत्य को सत्य नही कहा जायेगा, मानो मिथ्या को मिथ्या नही कहा जायेगा, जब तक मानव का कल्याण होने वाला नही मानव देखो, राष्ट्र और समाज का कल्याण होने वाला नही हैं, मेरे सत्यं ब्रह्मा देखो, सत्य में ब्रह्म हैं और देखो, ब्रह्म ही सर्वत्र प्रकृति का ब्रह्माण्ड हैं और वह ब्रह्म से पिरोया हुआ हैं, इसीलिए वह सत्यमयी कहता हैं वह सत्यमयी जो बन जाता हैं।

तो विचार क्या मानो देखो, कोई मानव निष्पक्ष नही है क्योंकि निष्पक्षता को जानते नही, होना हो जब ही, जब जानते हों निष्पक्षता मानो देखो, उसे कहा जाता हैं, जो मानो देखो, अपनी आत्म को जान ले और सबमें भूतेषु स्वीकार करे कि वह पंच महाभूत सबमें क्रियाकलाप कर रहे हैं अरे, मानो देखो, जब तुम मानव को तो देखो, निष्पक्ष कहते हो और गऊ और देखो, प्राणियों का भक्षण कर जाते हो, उसमें भी तो आत्मा विद्यमान हैं और जब उसमें आत्मा विद्यमान हैं तो तुम निष्पक्षता की वार्त्ता कैसे प्रगट कर सकते हों देखो, सर्वभूतेषु जब भगवान कृष्ण का यह उपदेश स्मरण आता हैं जो तो मानो देखो, भगवान कृष्ण ने अर्जुन को कहा था हे अर्जुन! संसार में मानव को निष्पक्ष रहना चाहिए और निष्पक्षता को उसी को कहा जाता है, जो सर्वभूतेषु सब में एक ही आत्मा का दर्शन करता हैं, सबमें चेतना का दर्शन करता हैं, अरे, मानो सब में चेतना का दर्शन नही होगा, जब तक निष्पक्ष कहना तुम्हारे लिए व्यर्थ बन जायेगा मानो देखो, जब यहाँ वास्तव में वास्तव में दृष्टिपात किया जाएं, तो इन विचारों के भगवान मनु के और भगवान मनु ने मछली से ले करके प्रत्येक प्राणियों की रक्षा के लिए प्रजा को उद्घोष किया था, और राजा से यह कहा था कि प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिए राजा वह कहलाता है मानो देखो, जहाँ नाना प्राणियों का भक्षण कर जाते हैं और उनको कहते हैं कि हम निष्पक्ष हैं मानववाद मे निष्पक्ष नही हो तुम अपने स्वार्थवाद में निष्पक्षता हैं, ज्ञान में निष्पक्षता नही हैं मानो तुम्हारे क्रियाकलापों में निष्पक्षता नही है तुम्हारा अन्तरात्मा जब सर्व पंच महाभूत आत्मा तुम्हारे मानो शरीरो मे विद्यमान हैं और तुम्हारे हृदयों में इसके पश्चात भी कटुता विद्यमान रहती हे और नाना देखो, देवालयों के ऊपर, मानो संग्राम होते हैं और देखो, कटुता होती है, प्राणियों का ह्रास होता हैं, अरे, राजन! यदि तू मानो निष्पक्ष होता, तो यह नरसंहार नही हो सकता था, नरसंहार उसी काल में होता हैं, जब कि मानव अपने में मानव की आभा को नही जान पाता है और ज्ञान न होने से ब्रह्म ज्ञान न होने से मानो देखो, सब कुछ होता है, जब राजा ब्रह्म ज्ञानी होता है, आत्मा की चर्चा करता है, याग की वार्त्ता कहता हैं जब तक मानव की क्षुधा की वार्त्ता कह रहा हैं तो मानव उसके ऊपर विचार करता हैं और अपने में अहिंसा परमोधर्मी बन जाता हैं

तो मानो देखो, यह राष्ट्र इस समाज को सुखद दे सकता है, सुखद बना सकता हैं। अपने कर्तव्य की आभा में रत्त हो सकता हैं।

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ विचार यह दे रहा हूँ क्या मानो देखो, इस भूमि की मैं चर्चा में कर रहा था महाभारत के काल में जब राष्ट्र अव्यवस्था हो गई, राष्ट्र में अशान्ति आने लगी, तो उस राष्ट्र में क्रान्ति का परिणाम यह हुआ क्या हस्तिनापुर में अग्नि प्रविष्ट हो गयी उस समय मानो देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन करते हुए कहा था, मानो मैनें भी वर्णन करते हुए कहा है आज कोई भी मानव इसी रूप में भी हमारे दृष्टिपात करने का जो माध्यम हैं, वह बड़ा विचित्र है, मानो देखो, जब हम यह विचारते हैं क्या कोई किसको स्वीकार कर रहा है, अथवा नही तो मानो देखो, वह किसी भी संचालक, को स्वीकार नही कर रहा हैं कोई भी संचालक किसी भी रूढ़ि का ऐसा नही हुआ, जिन्होंने मांस इत्यादि का भक्षण किया हो, वह सदैव शाकाहारी रहे हैं और वह अपने में बहुत सूक्ष्म आहारी रहे हैं परन्तु उसके मानने वाले, उसके विपरीत चलते हैं उसकी पोथी के विपरीत चलते हैं और जब पोथीयों के विपरीत चलते हैं तो मानो देखो, वह अग्नि के काण्ड बन करके रहते हैं, स्वार्थ की प्रतीति होने लगती है, वही मानो देखो, हमारे विचारों को जो दृष्टिकोण रहा है, वह यह रहा है, क्या कोई भी मानव न तो मोहम्मद के मानने वाला रहा है, न ईशा के मानने वाला रहा है, न भगवान राम और कृष्ण को मानने वाला, इसमें केवल स्वार्थपरता हैं, और स्वार्थपरता होने से मानो देखो, आज हम कहते हैं अमुक व्यक्ति को मानने वाले कोई किसी आभा में, स्वीकार नही कर रहा हैं उनकी अच्छाईयों को महानता को त्यागा है और अशुद्धियों को लेने का प्रयास कर रहता है, भगवान राम का जीवन मानो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उच्चारण करते रहते हैं, भगवान कृष्ण के जीवन में कोई भी पाप नही किया गया। उन्होंने अपने जीवन में समुद्र के तटों पर विद्यमान हो करके, याग करते थे और याग करने से उनका राष्ट्र पवित्र कहलाया और आहार उनका कितना सात्विक मानो देखो, लवण युक्त आहार करते थे, आधुनिक काल में देखो, उनके मानने वाले मानो देखो, लवण क्या, क्या पान कर रहे हैं और उसके देखो, विचारों की आभा के सदैव रत्त हो रहा हैं, तो मैं यह उच्चारण करना चाहता हूँ, मैं कटु नही उच्चारण कर रहा हूँ, आज जो मुझे सत्यमयी दृष्टिपात आ रहा हैं, मानो देखो, उसको उच्चारण कर रहा हूँ विचार क्या देखो, यह सत्यं ममं ब्रहे यह सत्यमयी माना गया हैं, समय आता रहता है, परिवर्तन होता रहता हैं, साहित्य परिवर्तित हो जाता है, परन्तु विचार क्या क्या आज मानो देखो, भूमि के सम्बन्ध में हम यह उच्चारण कर रहे थे, क्या यह हमारा कितना सौभाग्य हम कितने सौभाग्यशाली हैं, मानो देखो, परोक्ष में अपरोक्ष में क्रियाकलाप होता है, मानो देखो, यह जहाँ नष्ट करने की स्थली का

निर्माण हुआ वहा न्यायलय रहे वहाँ विद्यालय रहें परन्तु देखो, वही शमशान भूमि रही वही विनाशकाल की भूमि रही, परन्तु देखो, आज मेरा मैं क्या दृष्टिपात कर रहा हूँ, इतने युगों से दृष्टिपात करता हुआ, आज मैं वेदज्ञ ध्वनि को स्वीकार करता हूँ, आज मेरे नेत्र देखो, मेरी जो श्रोत्र इन्द्रियाँ हैं, वह बड़ी प्रसन्न रहती है, जब वेदों का उद्गीत होता है, साम गान गाया जा रहा है, मानो देखो, ज्ञान काण्ड की आहुति दी जा रही हैं, यह पारायण पुरातन काल में, आचार्य जन मानो प्रत्येक देवता को प्रसन्न करते रहते थे, विचार क्या देखो, जब मैं विज्ञान के ऊपर जाता हूँ, इस विज्ञान की जो उपलब्धि है, वह याग नही हुआ करती है, पुरातन काल का जो वैज्ञानिक था वह याग करता, याग में तरंगें उत्पन्न होती उन तरंगों की प्रतिभा वायुमण्डल में, परन्तु उस समय यज्ञमान आधुनिक काल का, यज्ञमान तो अपने ऊपर क्या-क्या चिन्तन करता रहता हैं, परन्तु देखो, पुरातन काल का वैज्ञानिक मन, कर्म और वचन तीनों को एक सूत्र में ला करके अपनी भावना को अपने याग में अग्नि की धाराओं पर विद्यमान करके, वह वायुमण्डल में प्रवेश वह द्यौ लोक में देता रहता था वही शब्द द्यौ लोक में जाते हैं और वही द्यौ लोक वाला जो शब्द हैं वही उसके मानो जीवन की प्रतिभा बन करके रहता है अथवा विचित्र बन करके रहता हैं। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल यह उच्चारण कर रहा हूँ हे यज्ञमान! मेरा तो अन्तर्हृदय तुम्हारे साथ रहता है कि तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, महानता की प्रतिभा में रत्त होता रहे परन्तु देखो, आज का वाक् यह क्या कह रहा है, क्या ब्रह्मे कृतं लोकां हे यज्ञं ब्रहे देखो, यह विज्ञान, यह शब्द, यह विज्ञान के ऊपर निर्धारित हो करके वायु में प्रवेश करता मण्डलों में जाता हैं, यही तो विज्ञान हमारे यहाँ सार्थक बन करके रहा है। महर्षि भारद्वाज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया एक समय मै और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक समय भारद्वाज मुनि के यहाँ पंहुचे, तो भारद्वाज मुनि के यहाँ मानो देखो, प्रातःकाल का समय था, आचार्य ने कहा आओ, ऋषिवर! हम विराजमान हो गये तो पूज्यपाद से कहा देखो, क्या हमारे यहाँ नियम हैं क्या तुम याग करो जब हमने याग प्रारम्भ किया तो यन्त्रों में देखो, उनके हमारे चित्र आहुति देते हुए दृष्टिपात आ रहे थे, और वही आहुतियों में मानो वह अन्तरिक्ष में शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके गमन हो रहे थे, तो यह विज्ञान जब तक देखो, राजा के राष्ट्र में या समाज में जागरूक नही होगा क्या हम यन्त्रों में मानो देखो, यागों को दृष्टिपात करें, याग क्रियाकलाप आते रहें, उन्ही यन्त्रों में मानो देखो, देखो, समाज का कल्याण होता हैं, समाज अपने में महान बनने लगता हैं, तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यज्ञशाला में अपने पूज्यपाद गुरुदेव का वर्णन व्रत्यं ब्रहा मानो देखो, अपने में अभ्योदय हो रहा था, तो विचार क्या मानो देखो, उसके पश्चात विज्ञान की चर्चाएं हुई, क्योंकि वैज्ञानिक यन्त्र ही मानो देखो, उन

धाराओं पर विद्यमान हो करके, दृष्टिपात आते थे, तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ विचार क्या है, क्या हे यज्ञमान! मेरा अन्तर्हृदय तुम्हारे साथ हैं, क्या तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तुम्हारे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, और दुरूपयोग न हो, क्योंकि दुरूपयोग होना तुम्हारी हीनता हैं, सदुपयोग होना तुम्हारा कल्याण है, क्योंकि यह जो द्रव्य है, यह किसी की सम्पदा नही हुई, आज तक यह मानो देखो, प्रभ की सम्पदा है और प्रभु ही इसे प्रदान करने वाला है मानो देखो, यह सम्पदा तो प्रत्येक मानव के क्रियाकलापों के लिए होती हैं, यह द्रव्य मानो सदुपयोग याग जैसे कर्म करने के लिए होती हैं, आज का विचार क्या हैं, आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि परमपिता परमात्मा आराधना में रत्त रह करके अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अब मैं आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी, ने अपने भव्यतव ऊर्ध्वा में विचारों का उद्गीत गाया मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा हैं, क्या पुत्र ने एक साहित्यिक चर्चा को ले करके एक ऐतिहासिक पृष्ठों को ले करके मानो अपनी चर्चाएं की हैं, याग अपने मे बड़ा अनूठा माना गया है, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया, याग के ऊपर अपना अनुसन्धान करते हुए महानता का दर्शन किया हैं, आज का वाक् क्या कह रहा है, कि परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से हम पार हो जाएं, मेरा भी अन्तरात्मा कहता है कि हे यज्ञमान! तुम्हारा हृदय हे यज्ञमान! तुम्हारा अन्तर्हृदय पवित्र बना रहे तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे इसके साथ अब यह वाक् अब समाप्त होने जा रहा हैं। ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मा ना वाची नमाः ओ३म् तनु गन्धर्वा। लाक्षागृह बरनावा।

ईश्वरीय सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरुदेव

शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज



पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज, इस जन्म में अपठित रहे। परन्तु शरीर के शवासन की मुद्रा में समाधिस्थ होने पर, पूर्व जन्मों में अर्जित ज्ञान की उद्बुद्धता के आधार पर, देवयान की आत्मा को सम्बोधित प्रवचनों में, वैदिक संस्कृति का उज्ज्वलतम स्वरूप और मानव जीवन को दिव्यता देने वाला अमृतमय ज्ञान समाया हुआ है। उन्हीं दिव्य प्रवचनों में पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज ने परमपिता परमात्मा की भाव प्रणता में स्तुति गायी है। परमपिता परमात्मा के प्रति गायी गई उसकी महान गाथा को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है।

शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान
नई दिल्ली-110085